श्रीः

ज्योतिष्मती

त्रैमासिक

वर्ष
१६
सं० २०३०

संख्या
१
वैशाख



वार्षिक
मूल्य
८·५०

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

इस अङ्क का
मूल्य २·५०

विषय-सूची

कर्नल V.R. मोहनका दुःखद देहावसान

गत दि० २८ जनवरी १९७३ को मोहनमीकन ब्रूवरीज लि० सोलन लखनऊ मोहन नगर कसौली एवं चण्डीगढ़के मैनेजिंग डायरेक्टर पद्मभूषण कर्नल वेदरत्न मोहनका मस्तिष्ककी नस फट जानेके कारण ४७ वर्षकी युवावस्थामें अकस्मात् दुःखद देहावसान हो जानेसे भारतीय औद्योगिक क्षेत्रसे प्रतिभावान् कुशल उद्योगपति संसारसे उठ गया। कर्नल मोहनमें उदारता, मृदुभाषिता, विनोद-प्रियता, कलासाहित्यसंगीतप्रियता दानवीरता आदि अनेक सद्गुण थे। अपनी अद्भुत कार्यकुशलतासे उन्होंने सामाजिक सांस्कृतिक राजनैतिक क्षेत्रमें भी पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। कर्नल श्री वेदरत्नजी मोहनका ज्योतिष्मती-परिवारसे एक प्रकारका पारिवारिकसा अटूट स्नेह सम्बन्ध था। अपने इस अनन्य स्नेहीको 'ज्योतिष्मती' शोकसन्तप्त हृदयसे हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करती है। महामाया दिवंगत-आत्माको शाश्वतशांति और परिवारको दुःख सहन करनेकी शक्ति दे।

कर्नल मोहनके महान् कार्यभारका उत्तरदायित्व अब आपके अनुज श्री कपिल मोहन और प्रतिष्ठानके विश्वासपात्र वित्तायुक्त श्री कृष्णगोपालजी खन्नासाहब पर आ गया है। श्री कपिल मोहन परम शान्त साधु स्वभावके सहृदय सज्जन हैं। मांके अनन्य भक्त हैं, माला हर समय इनके हाथमें रहती है। आपने सोलन मोहननगर लखनऊ आदिके सभी प्रतिष्ठानोंमें नियम बना दिया है कि हर मंगलवार शनिवारको ३ से ५ बजे तक सामूहिक कीर्तन होगा। जिसमें छोटे-बड़े सभी अधिकारीकी उपस्थिति आवश्यक है। और प्रतिदिन प्रातःकाल अपनी कुर्सी पर बैठनेसे पूर्व प्रत्येक कर्मचारी २१ बार गायत्रीमन्त्र या अपने इष्ट-मंत्रका जप करके फिर कार्यारम्भ करें। आधुनिक युगमें अपने औद्योगिक प्रतिष्ठानमें श्रमिकोंसे सप्ताहमें ४ घण्टे "कलौ कशेव कीर्तनात्" के पुण्यकार्यमें लगवाना सर्वथा स्तुत्य एवं अन्य प्रतिष्ठानोंके लिए अनुकरणीय है। मेजर कपिल मोहन पूर्वजन्मके कोई योगभ्रष्ट प्राणी प्रतीत होते हैं—जो संसारके राजसी भोगोंमें रहते हुए भी 'पद्मपत्रमिवाम्भसा' की भांति निर्लेप हैं। ऐसे साधुपुरुषके संरक्षणमें मोहनमीकन प्रतिष्ठान अवश्य ही सर्वतोमुखी प्रगति करके स्व० कर्नल मोहनके स्वप्नको साकार करेगा।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

★ श्रीः ★

ज्योतिष्मती

[अखिल भारतीय ज्यौतिषपरिषद्की मुखपत्रिका]

सम्पादक एवं संचालक

हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

मुख्य सभापति—अ०भा० ज्यौतिषपरिषद् (भारत सरकारसे पंजीकृत)

उपसम्पादक

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी साहित्य-सांख्य-योगाचार्य

एम.ए (हिन्दी-संस्कृत) पी.एच.डी.

प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१. भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिःशास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती'के संरक्षक माने जायेंगे। संरक्षकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे। सहायकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

(३) जो सज्जन एक बार ५०१) रु० देंगे वे आजीवन समान्य सदस्य और जो १२५) रु० एक बार देंगे वे आजीवन सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य ८ ५० साढ़े आठ रुपये और एक प्रतिके दो रुपये पचास पैसे हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझें जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (हिमाचल-प्रदेश) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद् पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरदपूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अङ्क न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिख कर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'ज्योतिष्मती'का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है। प्रकाशन तिथिसे सात दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथि से १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना देनी चाहिए।

व्यवस्थापक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[त्रैमासिक पत्रिका]

वैशाख ज्येष्ठ आषाढ़ मास (दि० १८ अप्रैलसे १५ जुलाई १९७३ तक)

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले॥

वर्ष	सोलन, चैत्र शु० १५ मंगलवार, सं० २०३० वि०	संख्या
१६	२७ चैत्र, शाके १८९५ (१७ अप्रैल १९७३ ई०)	३

वैदिक कर सिद्धान्त

यद् राजानो विभजन्त इष्टापूर्तस्य षोडशं यमस्यामी सभासदः।
अविस्तस्मात्यु मुचति दत्तः शितिपात् स्वधा (अथर्व ३।२९)
सर्वान् कामान् पूरयात्या भवन्युभवन्भवन्।
आकूति प्रोअविदत्तः शितिपान्नोपदस्याते। (अ० ३।२९)

१. राजसभा नियम पालक राजाको अन्नादि भोगका सोलहवां भाग जनतासे दिलावे।
२ यह दिया सोलहवां भाग राष्ट्रकी रक्षा करता है, विपत्तियोंसे छुटकारा दिलाता है।
३. राष्ट्रमें स्थिरता, शान्ति और सम्पन्नता उत्पन्न करता है।
४. जनता द्वारा दिया गया सोलहवां भाग उसको सम्भावित अनिष्टोंसे बचाता है।
५. राष्ट्रके सब संकल्पोंको पूर्ण करता है।
६. जनताकी सब कामनाओंको पूर्ण कर विजयी और प्रभावी बनाता है।

सम्पादकीय विचार

भारतका भाग्य देवता रूठा हुआ है

उद्धर्षन्ता मघवन् वाजिनान्युदवीराणां जयतामेतु घोषः ।
पृथग्घोषा अलुलयः केतुमन्त उदीरताम् ॥
देवा इन्द्र ज्येष्ठा मरुतो दन्तु सेनया ॥ (अथर्व० ३।१९)

प्रसन्न विजयी वीरोंकी विजय दुन्दुभीसे राष्ट्रका आकाश सदा गूंजता रहे। आकाश विजय पताकाओंसे भरा रहे। विजय कूचको प्रयाण करती सेनाके सैनिक "इन्द्र" होनेका मनोरथ लेकर बराबर आगे बढ़ते रहें।

अभिवर्धतां पयसाभिः राष्ट्रेन वर्धताम् । रय्या सह्स्रवर्चसैमौ स्तामनुपक्षितौ ॥
(अथर्व० ६।७८।२)

गायका दूध पीकर नर-नारी राष्ट्रकी अभिवृद्धिके साथ-साथ बढ़ें। तेजस्वी बनें, शक्तिशाली हों और धनधान्यसे सम्पन्न हों।

प्रधानमंत्रीका भाग्य-सूर्य अस्ताचलगामी हो रहा है। एक मासके भीतर उनके दो गुड्डे बनाये गये मुख्यमन्त्री श्री नरसिंहराव और श्रीमती नन्दिनी सत्पथी गिर गए। श्रीमती गांधी के शब्दोंका इन्दिरा-कांग्रेसी कितना सम्मान करते हैं, उसका यह प्रमाण है। मैसूरमें लोकसभाकी २१ की २१ सीटें लेकर वे समझती थीं कि सिंडीकेट मर गई। अब यह कभी उठ न सकेगी। परन्तु ७२ वर्षके वयोवृद्ध नेता निजलिंगप्पाने २० हजार व्यक्तियोंके साथ कलक्टरी पर सत्याग्रह कर दिखा दिया कि सिण्डीकेट कांग्रेस प्राणवान् और शक्तिशाली है। चिन्तित प्रधानमंत्री पुनः दौड़ी हुई एक दिनके वास्ते मैसूर पहुँची। मुख्यमंत्री श्री देवराज उर्सकी गद्दी खतरेमें है। गुजरातका मंत्रिमण्डल ही नहीं, जिला कांग्रेस कमेटियां तक दो भागोंमें विभक्त हैं। राज्यसभाकी एक सीटका चुनाव था। तीन बार 'ह्विप' (सचेतक) पहुँचा, फिर भी विधानसभाके दस सदस्योंने विपक्षी उम्मीदवारको वोट दिया। पंजाबमें सरदार त्रिलोचन सिंहने एक केन्द्रीय मंत्रीके आशीर्वादसे सरदार जैलसिंहके मंत्रिमण्डलके विरोधमें भ्रष्टाचारके आरोपोंका तूफान खड़ा कर दिया है। आपका कहना है कि यह प्रकाशसिंह बादलके मंत्रिमण्डलसे भी अधिक भ्रष्ट है। यह रियासती तूफान वेगशाली हो रहा है। हरियाणाके मुख्यमंत्रीने अपना बल बढ़ानेके लिए हजारों रुपयों की नोटोंकी माला सदस्योंको पहनाकर फाड़ी यह बात पार्लिमैंटमें कही गई। यही बात पहले हरियाणा विधानसभाके स्पीकरने कही थी। परन्तु श्रीमती गांधी संसदके १५० सदस्योंके दिये आरोप-पत्रकी जांचके वास्ते कमीशन नियुक्त करनेको उद्यत नहीं। किन्तु दो सदस्यों के कहने पर ही 'बादल-मंत्रिमण्डल' की जांचके

लिए जांच कमीशन नियुक्त कर दिया गया। प्रधानमंत्रीके संरक्षणमें बनी मारुती मोटर लि० को चौ० बंशीलालने इतनी अधिक जमीन पानी के दाम (२ रु० गज) पर दी है, जितनी अमेरिका की सबसे बड़ी मोटर कम्पनी 'डेट्रियट' के पास भी भूमि नहीं है। सुप्रीमकोर्टके 'स्टे आर्डर' की अवहेलना कर कम्पनीको मकान बनाने दिए गए। हवाई सेनाकी आपत्तिकी उपेक्षा की गई। पालमके एरोड्रमके लिए कम्पनीकी इमारतें हानिकारक सिद्ध हो सकती हैं। प्रधान मंत्रीकी राष्ट्र-सुरक्षाके प्रति क्या दृष्टि है, यह इससे प्रकट है। संसदके बजट अधिवेशनमें यह प्रश्न दो बार छेड़ा गया, किन्तु सरकारके प्रबल विरोधके कारण इस पर चर्चा तक नहीं होने दी गई। आलोचना मात्रसे श्रीमती गांधी भयभीत रहती है। उनकी प्रतिष्ठा किस सीमा तक गिर गई है, उसका यह एक प्रमाण है। असमका भाषा आन्दोलन मंत्रिमण्डलके प्राण ले रहा है। राजस्थानमें बरकतुल्लाखांका मंत्रिमण्डल अकालकी चपेट खाकर कभी भी गिर सकता है। मध्यप्रदेशमें श्री प्रकाशचन्द सेठी अभी तक पैर टिका नहीं पाये। ववण्डर एकत्र हो रहा है। भोपाल-महाकौशल और विन्ध्यप्रदेश इन तीन भागोंमें मध्यप्रदेशको विभक्त करनेका आन्दोलन उठ रहा है। बढ़ती कीमतें इन्दिरा-कांग्रेसके लिए काल सिद्ध हो रही है। श्रीमती गांधीकी शक्तिका दिवाला तमिलनाडुमें निकल गया। द्रविड़ मुनेत्र कषगमको सत्ताशून्य करनेका प्रयत्न विफल रहा। केरलका मंत्रिमण्डल सांस गिन रहा है। मुस्लिमलीगकी बदौलत टिका हुआ है। १४० सदस्योंकी विधानसभामें लीगके दस सदस्य हैं। अतः श्री काजी मुहम्मद कोया विधानसभाकी सदस्यता से त्यागपत्र देनेके बाद भी केरलके शिक्षामंत्री बने हुए हैं। इधर उन्होंने लोकसभाकी सदस्यता की विधिपूर्वक शपथ ले ली। सम्भवतः वह केन्द्रीय मंत्रिमण्डलमें शिक्षा मंत्री बनाये जानेका निमंत्रण पत्र पानेकी प्रतीक्षामें हैं। डूबतेको तिनकेका सहारा। श्रीमती गांधीकी मुस्लिमभक्ति प्रसिद्ध ही है। विदेशी लिपि उर्दू (उर्दू कोई भाषा नहीं। इसकी अपनी कोई क्रिया नहीं, यह सर्वनाम शून्य है। यह भाषाद्रोहकी भाषा है। यह विदेशी है, यही कारण है कि इसकी वर्णमाला अन्य भारतीय भाषाओंकी वर्णमालासे सर्वथा भिन्न है। नागरी लिपि इस्लामको स्वीकार नहीं। रोमन लिपिके समान अरबी फारसी लिपि भी विदेशी है, अतः प्रधानमंत्री उर्दूकी प्रचारक और अंग्रेजीकी संरक्षक है) का प्रचार चुनाव जीतनेके लिए आवश्यक समझा जाता है। श्रीमती गांधी 'एम्प्रेस आफ इण्डिया' (भारतकी साम्राज्ञी) होनेका मधुर स्वप्न ले रही थीं। परन्तु कालचक्रने उनके शासनकाल की समाप्तिकी घंटी बजा दी है। कोरे नारे, कागजी योजनायें कब तक उनको टिकाये रख सकती हैं। भूख और प्यासको दूर करनेमें असमर्थ अक्षम शासन १,१०,००० गांवोंमें पेय जल की कमीमें सामाजिक न्यायकी कोरी बात कर झंझा-वातके सामने टिका रह सकता है? विष्णु शर्मा कह गया है—

बुभुक्षितः किं न करोति पापम्,
क्षीणाः जनाः निष्करुणाः भवन्ति।
आख्याहि भद्रे प्रियदर्शनस्य
न गंगदत्तः पुनरेति कूपम्॥

शासन और सत्ताकी प्रबल भूखकी खाली

पेट जनताको भूखसे टक्कर है । इसमें क्या प्रधानमंत्री विजयिनी होनेकी आशा कर सकती है ?

बुद्धि नाशात् प्रणश्यति

कहावत है, जब भगवान् किसीका नाश करना चाहता है तो वह पहले उसकी बुद्धि हर लेता है । यही बात 'इन्दिरा सरकार' की है । यह कम्युनिस्ट-मुस्लिम लीगी-इन्दिरा कांग्रेसकी मतिका फल है । इसका जन्म भारत भक्तिसे नहीं हुआ । इसका उदय करोड़ों रुपयों और बोइंग जैट विमानकी प्रबल शक्तिके सहारे हुआ है । यह अवैध सन्तान है । यह सर्वमान्य सिद्धान्त है—मनुष्यकी बुद्धि वैसी ही होती है, जैसा वह अन्न खाता है और जैसे लोगोंका संग करता है । इन्दिरा कांग्रेस अंग्रेजी भक्त है । कम्युनिस्ट और मुस्लिम लीग भारत विभाजक और भारतद्रोही है । १९७३ में विखण्डित भारतको अखण्ड बनानेकी आवश्यकता अनुभव नहीं करते । इनकी मतिका फल क्या होगा ? बरबादी और विनाश ! फिर इसका भाग्यदेवता मास्को है । पथ प्रदर्शक ब्रेजनेव-कोसीजिन हैं, जो स्व० प्रधानमंत्री श्री शास्त्रीकी अकाल मृत्यु के कारण हैं । ताशकन्द पैक्ट हाजीपीर पाकिस्तानको दिलानेवाला है । यह प्रतिज्ञा भंग था । इस असत्याचरणको उस सरल व्यक्तिकी आत्मा नहीं सह सकी । बिवशतामें हस्ताक्षर तो कर दिये, पर इसके प्रायश्चित्तमें उस प्रधानमंत्रीने अपने प्राणोंका बलिदान कर दिया । अपनी भारत भक्तिको उसने मलिन नहीं होने दिया । आज वही रूस इन्दिरा सरकारका मंत्रद्रष्टा है । समाजवादका रंगीन गुब्बारा उड़ाया जा रहा है । बच्चे इन गुब्बारोंसे कब तक खेलते रहेंगे ? मजदूरोंका राज्य कायम करने और मध्यवर्गको मिटानेके उद्देश्यसे अनाजके पचास लाख थोक व्यापारियोंका व्यापार सरकारने लेनेका निश्चय किया है । यह भुखमरीको आमंत्रण देना है । क्योंकि :—

१. सरकार मण्डीमें आये अनाजको ही खरीदेगी । गेहूं धानकी (अक्तूबर १९७३) सारी उपजको नहीं ।

२. सरकारने शहरोंको ही उचित मूल्य पर अनाज देनेका उत्तरदायित्व लिया है । ५५ कोटि भारतीय मात्रको देनेका नहीं । यह है "इन्दिरा डांगे समाजवाद" मजदूरोंके अतिरिक्त क्या किसी अन्य वर्गको जीवित रहनेका हक है ?

३. खुदरा व्यापारियोंकी संख्या लगभग १ करोड़ है, अनाज बेचनेके लिए सरकार न देगी । ये स्वत: किसानोंसे सीधा खरीदेंगे । पर एक बार में १० क्विण्टलसे अधिक न खरीद सकेंगे । पहले ये थोक व्यापारियोंसे लेते थे । नकद तत्काल नहीं देना पड़ता था । पर शहरमें ही एक बाजारसे गलीकी दूकान तक माल ले जानेमें दिन लग जाता है—ठेला, रेड़ी सदृश साधनोंके सुलभ होने पर भी । पर गांवसे लाने में सबका काम नकदी होगा । किसान दूकानदारको जानता पहचानता नहीं, अतः वह उधार देगा नहीं । बैंक क्या खुदरा व्यापारीको कर्ज देगा—सूद लेगा । फिर परिवहनकी समस्या है । ढुलाई है । ट्रक क्या १० क्विण्टलके लिए कोई किराये पर लेगा ? बैलगाड़ी ही सहारा है । इस बीच उस दुकानसे अनाज खरीदने वाले क्या भूखे रहेंगे ? वह संचय कर नहीं सकते । दुकानदार यह सारा खर्च ग्राहकों पर डालेगा । यह मूल्य सरकारी सस्ते अनाज

की दुकानोंकी तुलनामें अधिक होगा । इस प्रकार चीनीके भावके समान गेहूं चावलके भी दो भाव चलेंगे । मँहगाईका विकराल काल विद्यमान रहेगा ।

४ खुदरा दुकानदार अपने ही जिलेके गांवोंसे अनाज खरीद सकेगा । क्योंकि अनाजके आवाजाई पर दो राज्योंके ही बीचमें पाबन्दी नहीं है, पर अनेक राज्यों उदाहरणार्थ :—मध्य-प्रदेश यू०पी०, हरियाणा, पंजाबमें एक जिले से दूसरे जिलेमें ले जाने पर भी मनाही है । यदि जिला बचतका न हो तो फुटकर व्यापारी अनाज कहांसे खरीदेगा ?

५ ब्लैक मार्केट बढ़ेगा । १५ से ५० एकड़ तककी जोतकी खेती करने वाले किसान सारी उपज सरकारके हाथ न बेचेंगे । वह उचित समयमें उपजका बड़ा भाग दुकानदारों के हाथ बढ़ी चढ़ी कीमत पर बेचेंगे । दुकानदार यह बढ़ा मूल्य देगा । सरकारी योजनामें ही इसके वास्ते व्यवस्था है । इसका अर्थ है अनाज मंहगा बिकेगा । मंहगाई और बढ़ेगी । यह योजना इस बातका प्रमाण है कि 'इन्दिरा-सरकार' की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है । यह देश पर भारी विपत्ति आनेकी सूचना है । प्राचीन नीतिकारका कहना है :—

असम्भवं हेममृगस्य जन्म
तथापि रामो लुलुभे मृगाय ।
प्रायः समापन्न विपत्तिकाले
धियोऽपि पुंसां मलिनो भवन्ति ।।

भारत सरकार सबको उचित मूल्य पर गेहूं देनेमें असमर्थ है । यू०पी० के एक मंत्री श्री वेणीसिंहने विधानसभामें इस शिकायतका जवाब देते हुए कहा कि राशनिंगकी दुकानोंमें गेहूँ नहीं है । बताया है :—

काल	उ०प्र० की आवश्यकता व मांग	केन्द्र से मिला
अगस्त १९७२ से—		
जनवरी ७३ तक	८,०५,४८० टन	३,५७,२२४, टन
फरवरी ७३ तक	१,७४,००० टन	७०००० टन

यह स्थिति उस यू०पी० की है, जिसके प्रधानमंत्री और गृहमंत्री हैं । 'तण्डुल-न्याय' से भारत सरकारकी क्षमताका अनुमान कर लीजिए । ५० लाख लोगोंसे अनाजका थोक व्यापार लेकर उनके अभिशापकी भागी न होगी ? इस पर सरकारका ६०० से ८०० करोड़ रु० अतिरिक्त व्यय होगा । सरकारी स्टाफका भारी भरकम व्यय क्या मंहगाई न बढ़ायेगा ? अनाज मँहगा होगा । यह भ्रष्टा-चार फैलायेगा ।

इन्दिरा लहर चली गई

बम्बई कार्पोरेशनके चुनावको स्थानीय कहकर डा० शर्मा सन्तोष प्राप्त कर सकते हैं । परन्तु, बम्बई १८८५ से राजनीतिक दिशाका दिग् द्योतक रहा है । बम्बई भारतका सबसे बड़ा और दुनियांमें पांचवें क्रमका नगर है । भारत सरकारको आयकरसे होने वाली आयका एक तिहाई बम्बई नगर देता है । भारतके विदेशी व्यापारका ४० प्रतिशत बम्बईके द्वारा होता है । अतः बम्बई कार्पोरेशनके चुनावमें कांग्रेसको मिली हार आकस्मिक घटना नहीं है । यह सूचना है कि 'इन्दिरा लहर' आई और चली गई ।

बम्बई कार्पोरेशनका चुनाव और एक बातकी ओर संकेत करता है कि लोकतंत्र

की जड़ें गहराईमें नहीं पहुंची हैं। वोटरोंकी संख्या बढ़ी है, पर चुनावमें मत देने वाले मतदाताओंकी संख्या घटी है। ये राजनीतिक पार्टियोंके वोटर भारतद्रोही भारत अभक्त हैं। बम्बई कार्पोरेशनके मुस्लिम स्कूलोंमें 'वन्दे-मातरम्' गीत गाने पर पाबन्दी लगा दी है। इसका इन्दिरा-कांग्रेसने समर्थन किया। दुर्भाग्य यह है कि कार्पोरेशनका वह मुस्लिम नेता पुन: चुना गया है। इन्दिरा-कांग्रेसने भारत-विभाजक मुस्लिमलीगको गले लगाया। फलत: मुस्लिम लीगके सदस्य दोसे बढ़कर १२ हो गए। शिव-सेनाकी स्थिति दृढ़ हो गई (अभी-अभी इन पंक्तियोंके लिखते समय २ अप्रैल ७३ को समाचार मिला कि शिवसेनाके श्री सुधीर जोशी कांग्रेसी उम्मीदवारको हराकर बम्बईके मेयर निर्वाचित हो गए हैं) जनसंघकी शक्ति दुगुनी हो गई। वोटरोंकी चुनावके प्रति बढ़ती उदासीनता लोकतंत्रके भक्तोंके लिए चिन्ताका विषय है, यह इस बातका प्रमाण है कि सामान्य जनताको राजनीतिक दलोंसे कोई आशा नहीं रही। इनसे वह अपने भाग्य-परिवर्तनकी आशा नहीं करती। वोटरोंकी इस संख्याको देखिए :—

वोटरोंको सख्या

	१९७२	१९७३
वोटर	३१३४३२०	३६६७९०५
मत दिया	२१०२६००	२०८८७७९

इन्दिरा कांग्रेसने १९७१ में पालिमेंटकी पांचकी पांचों सीटें हस्तगत की थीं। १९७२ में विधानसभाके चुनावमें २८ में से २४ सीटें जीती थीं। परन्तु उसको प्राप्त वोट १९७२ में ही घट गए थे। विभिन्न पक्षोंको प्राप्त प्रतिशत वोटोंसे यह बात स्पष्ट है। यथा :—

इन्दिरा कांग्रेस पार्टीको प्राप्त मत, कुलका प्रतिशत

१९७१	१०६९०००	५८
१९७२	१००७९४३	५०
१९७३	६०१८२४	२८ ७९

इन्दिरा लहरके गीत गायकोंने इस क्रमिक ह्रास पर दृष्टिपात नहीं किया। दिसम्बर १९७१ की अधूरी छोड़ी गई लड़ाईने श्रीमती गांधीकी लोकप्रियता को बढ़ाई नहीं, बल्कि घटाई। क्योंकि वह लड़ाई भारतके वास्ते नहीं लड़ी गई। वह इस्लामके वास्ते लड़ी गई थी।

चुनावमें भाग लेने वाली पार्टियोंके वोट प्राप्त करनेकी दृष्टिसे स्थिति इस प्रकार है—

प्राप्त वोट

	१९७३	१९७२
शिवसेना	४,६१,९०७	२,५८,६३४
जनसंघ	२,२६,२०९	१,५२,१६२
मुस्लिम लीग	१,४१,८६३	६४,७८५
सोशलिस्ट	१,२८,३८२	१,१३,००६
सिण्डीकेट कां०	१,११,०७६	१,०४,०७४

हवाकी लहरको देखते हुए क्या यह कहने के लिए ज्योतिषीकी आवश्यकता है कि उड़ीसा और उत्तरप्रदेश (दोनों उ से प्रारम्भ होते हैं) के विधानसभाके फरवरी १९७४ में होने वाले चुनावमें इन्दिरा कांग्रेसकी पराजय भाग्य लिपिमें विधानसभाने लिख दी है।

लोकतंत्र पर और एक प्रहार

उड़ीसा विधाननभामें जून १९७२ से पहले जो स्थिति थी, वह १ मार्च १९७३ को वापस लौट आई थी, जो लोग विभिन्न पक्षोंको छोड़-कर इन्दिरा-कांग्रेसमें चले गये थे वे अपने पुराने पक्षमें लौट आये थे। यदि जून १९७२ में

श्रीमती नन्दिनी सत्पथीका मंत्रिमण्डल बनाना ठीक था, संवैधानिक था, तो १ मार्च ७३ को श्री पटनायकको मंत्रिमण्डल बनानेके लिए आहूत न करना, मानना होगा, उचित नहीं हुआ और लोकतंत्रकी परम्परा पर प्रहार किया गया। राज्यपाल श्री जत्तीने दलगत भावनासे कार्य किया और पार्लमेंट्री परम्पराका विनाश किया। मंत्रिमण्डल स्थायी होगा. इसका विचार गवर्नरको केन्द्रीय सरकारकी दृष्टिसे नहीं, अपितु पार्लमैंट्री कनवेन्शनकी दृष्टिसे करना चाहिए। श्री जत्तीने प्रबल पक्ष निष्ठा को प्रकट कर इन्दिरा कांग्रेसके लिए उड़ीसामें कब्र खोद दी है।

दृढ़ मोर्चाबन्दी

श्रीमती गांधी और इन्दिरा कांग्रेसकी सम्पूर्ण गतिविधिका लक्ष्य फरवरी १९७४ में यू०पी० विधानसभाका चुनाव जीतना है। आन्ध्र-समस्या भी उस समय तकके लिए स्थगित रखी जा रही है। यू०पी० विधानसभा की ४२५ सीटोंमेंसे १४५ सीटों निर्वाचन क्षेत्रोंमें मुस्लिम वोट निर्णायक तत्व हैं। इसी कारण केन्द्रीय मंत्रिमण्डलमें ८ मुस्लिम (इनमें एक जुलाहा भी है) १० हरिजन हैं। ६० के मंत्रि-मण्डलमें ये १८ ब्राह्मण राज्य (८ मंत्री ब्राह्मण हैं) की स्थापनाको दृढ़ करनेके लिए है। इन्दिरा कांग्रेसके केन्द्रीय संगठनके अधिकारियों का चुनाव भी इसी दृष्टिसे किया गया है। जनरल सेक्रेटरी चार हैं १—पिछड़ा वर्ग, एक हरिजन, एक मुसलमान और एक ईसाई। यू० पी० कांग्रेस कमेटीका अध्यक्ष हरिजन बनाया गया है। उप-सभापतियोंमें १ पिछड़ा वर्ग, एक ब्राह्मण, एक मुसलमान। इसी प्रकार कार्य-समितिका संगठन लम्बे अर्सेके बाद गृहमंत्री और श्री यशपाल कपूरके निर्देशनमें मजहबवार गठित किया गया है। कांग्रेसी कम्युनिस्ट इसमें मुख्यमंत्री श्री त्रिपाठीका बहुमत देखते हैं। अतः उनका आन्दोलन है कि मुख्यमंत्री श्रीमती गांधीके विश्वस्त श्री यशपाल कपूरको मुख्य-मंत्री बनाया जाये, यदि चुनाव जीतना है। सितम्बर अक्तूबरमें श्रीत्रिपाठी सम्भवतः त्याग पत्र देंगे। पर इसमें एक भय भी है। श्रीत्रिपाठी के अभावमें गोरखपुर और बनारस डिवीजनमें इन्दिरा-कांग्रेसकी जीत सन्दिग्ध हो जायेगी। उत्तरी जिलोंमें भारतीय क्रान्तिदलकी स्थिति पर्याप्त दृढ़ है। ब्लॉक प्रमुखोंके प्रधानोंके चुनावसे यह स्पष्ट है। मध्य यू०पी०में श्री चन्द्रभान गुप्त (शय्या-शायी बीमार हैं) का प्रभाव यथापूर्व है। उनको इलाहाबादमें १ लाख रुपये की थैली भेंट की गई है। जनसंघ पूर्वी यू०पी० और बुन्देलखण्डमें अपनी शक्ति केन्द्रित कर रहा है। स्वतंत्र पार्टी भी अपना भाग्य अजमा रही है। स्पष्ट है इन्दिरा-कांग्रेस का सितारा आन्ध्रके समान यू०पी० में भी डूब रहा है। यह प्रगति और स्थिरताका प्रमाण नहीं माना जा सकता।

आन्ध्रमें भयंकर अशान्ति

छः मास हो गए। राष्ट्रपतिका शासन घोषित हुए भी तीन मास होनेको हैं। परन्तु आन्ध्रकी स्थिति सुधरनेके बदले उत्तरोत्तर बिगड़ती जा रही है। शासन ठप्प है। वकील एन०जी०ओ० (ननगजटेड आफीसर) छात्र, डाक्टर, सब हड़ताल पर हैं। स्कूल कालेज बन्द हैं। यदि रेलें चल रही हैं तो तमिलनाडु में बसे तैलगू लोगोंका ख्याल करके। गांधीजी के नेतृत्वमें भी ऐसा भीषण आन्दोलन और सत्याग्रह इतने मास तक नहीं चला। परन्तु

प्रधानमंत्रीने इस प्रश्नको अपने नेतृत्वकी चुनौती माना और उसकी रक्षाके लिए केन्द्रीय आर्थिक सहायतासे पृथक्‌तावादके विरुद्ध आन्दोलन चलाती हैं। इसका फल यह हुआ है कि इन्दिरा कांग्रेस और कम्युनिस्ट आतंकवादियोंका तरीका अपना रहे हैं। मारकाट, आग लगाना इनके लिए भी नियम हो गया है। यह कार्य वे सेंट्रल पुलिसकी उपस्थितिमें करते हैं। छात्रों का यह आरोप गलत है यह बात अभी तक सरकारकी ओरसे नहीं कही गई। श्रीमती गांधी आन्ध्र प्रजा-परिषद्‌से अपने पक्षको अलग करनेमें कुछ-कुछ सफल हुई हैं। श्री सुब्बा रेड्डी ने ५५ विधायकोंके स्तीफे स्वीकार करनेका आग्रह किया है। रूमाल जितने छोटे राज्योंके बनानेके बाद रेडक्लीफ लाइनको अमिट सीमा रेखा माननेके बाद आन्ध्रप्रदेशको विभक्त करने में आपत्ति क्यों ? क्योंकि सम्पूर्ण दक्षिण भारतसे श्रीमती इन्दिरा गांधीका नेतृत्व समाप्त हो जायेगा। क्या वर्तमान कालहरणकी नीति उसको कायम रखेगी ? श्रीमती गांधीका विजय-वाड़ा, गुन्तूर न जाना ही बताता है कि वह अपना नेतृत्व समाप्त हुआ मानती है। श्रीमती गांधी दृढ़तासे यह भी नहीं कहती कि आन्ध्र विभाजन न होगा। पंजाबका विभाजन करनेके बाद यह कैसे कह सकती है ? भारत-विभाजन, काश्मीर-विभाजन (गिलगित्त, हुंजा, वालति-स्तान और चिगारा पच्चीस साल बाद भी पाकिस्तानके अधिकारमें है और चीनने गिल-गित हुँजा काशगढ़ डबल ट्रंक रोड बना ली है) के बाद आन्ध्र-विभाजनकी बात अमान्य कैसे कर सकती है ? भारत-भक्ति और राष्ट्र-भक्तिके अभावमें वह आंचलिक भक्तिके उदयका विरोध कैसे कर सकती है ? "राष्ट्र देवो भव" यह उनका ध्येय वाक्य जीवनमें कभी नहीं रहा। कम्युनिस्ट रूसके प्रति कोई स्वाधीनता प्रेमी निष्ठा नहीं रख सकता। जहां १० लाख व्यक्ति साइबेरियाके शिविरोंमें बन्द हैं और दो लाख पागलखानोंमें है ? क्योंकि वह कम्युनिस्ट तंत्रके विरोधी हैं। प्रधानमंत्री निर्णय करनेमें देर करके आन्ध्र प्रदेशमें अशान्तिकी ज्वालाओं को धधका रही है। छात्रोंका एक साल नष्ट करनेके लिए प्रधानमंत्रीके सिवाय क्या और कोई व्यक्ति जिम्मेदार है ?

मुस्लिम समाज भारतद्रोही है

पाकिस्तान बननेके बाद भी इस देशका मुस्लिम समाज भारत भक्त और भारतीय नहीं बना। शासनने भी उनको मुस्लिम बने रहनेके लिए प्रेरित किया। यही कारण है कि काश्मीर पर पाकिस्तानका दावा 'शिमला पैक्ट' में स्वीकार किया गया। काश्मीरका संविधान अलग है। काश्मीरका झण्डा भी अलग है। क्या एक देशमें एक साथ दो संविधान और दो झण्डे बने रह सकते हैं ? काश्मीर की राजभाषा उर्दू है, क्योंकि मुस्लिम समाज बहुसंख्यक है। १९७३-७४का बजट भी उर्दू में पेश किया गया। काश्मीरीका काश्मीरमें कोई स्थान नहीं। यह है मुस्लिम समाजके भारतद्रोह का प्रमाण। मुस्लिम-वोट पानेके लालचमें त्रिपाठी सरकारने यू०पी० में १००० उर्दू स्कूल खोले हैं। इनमें शिक्षक सब मुस्लिम हैं। इस प्रकार इन्दिरा सरकार भारत विरोधको बढ़ावा दे रही हैं। श्रीमती गांधी कहती हैं वह कम्यु-निस्ट नहीं। यह कौन मानेगा ? वह संस्कृतकी शिक्षा स्कूलोंमें बाधित करनेके बदले (तीन सालसे पांच साल तक) उर्दूका प्रचार कर रही हैं और भारतद्रोहको बढ़ा रही है। उर्दू भारत-

विभाजक बोली है। अखण्ड भारतके निर्माणमें इसका कोई स्थान नहीं।

संस्कृत जीवित भाषा है

टारटों विश्वविद्यालयमें संस्कृत विभागके अध्यक्ष डा० वार्डर भारतमें संस्कृतकी पाण्डु-लिपियोंको देखनेके लिए आये हुये हैं। आप माध्व सम्प्रदायके केन्द्र उदीपी (मैसूर) भी गए थे। एक भाषणमें आपने कहा—"संस्कृत जीवित भाषा है। पाणिनी व्याकरण सदृश विश्वमें और कोई व्याकरण नहीं। इसके कारण संस्कृत परिपूर्ण भाषा है। भारतमें अंग्रेजी मर चुकी है। सस्कृतका अध्ययन भारतमें न होगा तो भारत देश टुकड़े टुकड़े हो जायेगा। अतः संस्कृत की पढ़ाई होनी चाहिए।"

टांरटों (कनाडा) विश्वविद्यालयके संस्कृत विभागमें इस समय २५० छात्र हैं। ५० छात्र डाक्टरेटकी तैयारी कर रहे हैं। पिछले बीस वर्ष से डा० वार्डर इस विश्वविद्यालयके संस्कृत विभागके अध्यक्ष हैं। भारतमें संस्कृतकी क्या अवस्था है। ब्रिटिश जमानेमें बम्बई, मद्रास, कलकत्ता और पटना विश्वविद्यालयों की एंट्रेन्स परीक्षामें संस्कृतका एक प्रश्न पत्र होता था। कांग्रेसने शासन सूत्र लेते ही इसका अन्त कर दिया। कांग्रेस हृदयसे मनसे भारतीय नहीं। सर्वथा अभारतीय है और इस्लाम प्रचारक है।

अमेरिकामें ज्योतिष

भारतमें तो फलित ज्योतिषको विज्ञान की एक शाखा नहीं माना जाता। पर अमेरिका में इसको विज्ञान माना जाता है। अमेरिकाके एक विश्व-विद्यालयमें इसके वास्ते एक पृथक् विभाग बना दिया गया है। यह बताता है कि भारतीय ज्योतिषका अध्ययन करनेके लिए ज्योतिष प्रेमियोंको वह समय दूर नहीं, जब अमेरिका जाना पड़ेगा। क्योंकि ग्रहोंके अध्ययन के वास्ते उपकरणोंका विशाल संग्रह विज्ञान प्रेमी अमेरिका अल्प समयमें कर लेगा। भारत भृगुसंहितामें वर्णित सिद्धान्तोंकी सिद्धि और पुष्टि करनेके वास्ते भी उपकरण नहीं जुटा सका है। यह ग्रन्थ भी सुलभ नहीं। भारतके ज्योतिषी नौ ग्रहोंकी ही पूजा करते हैं। पश्चिम ने और दो ग्रह बढ़ा लिए हैं। यह बताता है कि भारत पिछड़ रहा है। क्या शिक्षा-मंत्रालय और भारतीय ज्योतिषियोंका ध्यान इस ओर आकृष्ट होगा और वह विलुप्त हो रहे इस ज्ञान की रक्षाके लिए संगठित प्रयत्न करेंगे?

'ज्योतिष्मती' के सम्बन्धमें जानकारी

रजिस्ट्रार न्यूजपेपर्स एक्टके नियम ८ के अन्तर्गत विज्ञप्ति

१. प्रकाशनका स्थान	ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)
२. प्रकाशनकी अवधि	प्रति तीसरे मासकी पूर्णिमा
३.४.५. मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक	हरदेव शर्मा त्रिवेदी
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	ज्योतिष्मती निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)
६. स्वमित्व	**हरदेव शर्मा त्रिवेदी**

मैं हरदेव शर्मा त्रिवेदी घोषित करता हूं कि ऊपर दी गई जानकारी मेरे ज्ञानके अनुसार बिलकुल ठीक है।

ति ३१ मार्च १९७३ **(ह०) प्रकाशक—हरदेव शर्मा त्रिवेदी**

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

नये वर्ष सं० २०३० वि० (सन् १९७३-७४) की ग्रहस्थितिका दिग्दर्शन

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

[नया विक्रमी संवत् २०३० चान्द्रमानसे ४ अप्रैल ७३ बुधवारसे एवं सौरमानसे १३ अप्रैल शुक्रवार १९७३ से प्रारम्भ हो रहा है। इस नये वर्षका विस्तृत शुभाशुभ भविष्य उक्त शीर्षकसे मैंने अपने 'श्रीविश्वविजयपंचांग' के लिए आजसे छः मास पूर्व गत आश्विन (सितम्बर) मासमें लिखा था जो गत कार्तिक (नवम्बर) मासमें प्रकाशित हो चुका है। पंचांग इतना अधिक लोकप्रिय हो गया है कि वर्ष प्रारम्भ होनेसे पहले ही सब प्रतियां समाप्त हो जाती हैं और अनेक पाठकोंको द्विगुण मूल्य पर भी कहींसे उपलब्ध नहीं होता। नये वर्षके साथ ही 'ज्योतिष्मती' का यह अङ्क भी प्रारम्भ हो रहा है, अतः उक्त 'श्रीविश्वविजयपंचांग'से आवश्यक अंश पाठकोंके लाभार्थ यहां प्रस्तुत किया जाता है।

—सम्पादक]

नये वर्षके राजा मंत्री और मुख्य ग्रह

इस नये वर्ष सं० २०३० वि०) सन् १९७३-७४) का राजा बुध और मन्त्री शुक्र है। वर्ष लग्नमें लग्नेश बुध छठे और शुक्र सप्तम में अस्त है। जगल्लग्न (वर्षेश लग्न) में लग्नेश बुध नीच राशिमें और शुक्र व्ययेशके साथ अष्टममें अस्तङ्गत है। सुख शान्तिकारक देव-गुरु बृहस्पति नीच राशिमें उच्चस्थ मगलके साथ है। जगत्लग्न और वर्ष लग्नमें वक्री हर्षल एवं प्लुटो (यम) विद्यमान है। धान्येश शनि और वार्हस्पत्यमानसे रुद्रविंशतिका 'क्षय' संवत्सर है। संसारके लिए यह ग्रह स्थिति विशेष सुख शान्तिकारक नहीं कही जा सकती। प्रकृति-प्रकोप, युद्ध-विग्रह, रोगोपद्रव उत्पात दुर्घटना अपहरण अनाचारकी वृद्धि होगी। भारत भी इससे अछूता न रहेगा। भारत मकर राशिके प्रभाव क्षेत्रमें है। इसमें गुरु नीच का होनेसे सुख-शान्ति और उत्पादनमें लक्ष्यानु-रूप वृद्धि नहीं होने देगा। वर्षराज बुध नपुंसक निर्बल होनेसे प्रजा पर शासन सत्ताका पूर्ण प्रभुत्व वा वर्चस्व नहीं रहेगा। मंगलके कारण संसारमें सैनिक प्रवृत्ति आतंकवाद और ताना-शाहीकी वृद्धि होगी। रुद्रविंशतिके अन्तिम क्षय वर्षका फल शास्त्रकारोंने अन्नकी कमी या मंहगाई और मधुर पदार्थ गुड़, शक्कर, शहद, तेल और कपास (रुई) के उत्पादनमें हानि होना लिखा है। प्रकृति-प्रकोप दुर्भिक्ष रोग-विग्रहादिसे जन हानि और बुद्धिजीवी सदाचारी ब्राह्मणवर्गको कष्ट तथा चोर, डाकू, लुटेरे दुराचारी, अन्त्यजोंकी अभिवृद्धि होती है। जन स्वास्थ्य क्षीयमाण रहता है। यथा—

"कार्पासगन्धतैलेक्षु मधुसस्य विनाशनम्।
क्षीयमाणाश्चापिनराः जीवन्ति क्षयवत्सरे॥'
'क्षयमिति युगस्यान्त्यस्यान्त्यं बहुक्षयकारकं
जनयति भयं तद्विप्राणां कृषीबलवृद्धिदम्।
उपचयकरं विट् शूद्राणां परस्वहृतां तथा"
(वृ० सं० बृहस्पतिचाराध्यायः)

वर्षके विशेष ग्रहयोग

सब ग्रहोंसे अधिक लम्बे समय तक एक राशिमें रहने वाले प्रभावशाली ग्रह यम (प्लुटो)

और इन्द्रवरुण (हर्षल नेपच्यून) हैं । इस वर्ष प्लुटो हर्शलका योग जगल्लग्न कन्या राशिमें है अतः संसारके अनेक भागों-विशेषतः कन्या मीन मिथुन धनुः राशि वाले देशोंमें अनेक प्रकारके उत्पात प्रकृतिप्रकोप अन्तर्विग्रह और अकल्पित राजनैतिक उलट फेर होंगे। भारतमें काश्मीर पंजाब, राजस्थान, असम, उड़ीसा, बंगाल, केरल, आंध्र तमिलनाडमें भी इसका कुप्रभाव पड़ेगा। २४ जून ७३ तक प्लुटो वक्री रहेगा। ११ जुलाई ७३ से शनि मिथुन राशिमें प्रवेश करेगा। १ अगस्त ७३ से १५ फरवरी ७४ तक (६।। मास) मंगल मेषमें रहेगा। मंगल सामान्यतः डेढ़ मास एक राशिमें रहता है, परन्तु इस बार यह युद्ध-प्रिय ग्रह अपनी उग्र राशिमें आधे वर्षसे अधिक समय (१९५ दिन) तक आसन जमाकर ससारके अनेक भागोंमें युद्ध विग्रह षड्यत्र हड़ताल तोड़-फोड़ हत्याकाण्ड अपहरण प्रकृतिप्रकोप रोगादिका संचालन यत्रतत्र करता रहेगा । कन्या तुला मकर मेष और वृषभ राशि वाले राष्ट्र प्रान्त नगर एव व्यक्ति-विशेष इस अवधिमें विशेष प्रभावित होंगे। १७ अक्तूबर ७३ से २७ फरवरी ७४ तक मिथुन राशिमें शनि वक्री रहेगा। इसी अवधिमें २५ नवम्बर ७३ से वर्षके अन्त (२३ मार्च १९७४) तक गुरु अतिचारी रहेगा। यहां गुरु नीचका होकर शनिसे षडष्टक योग बना रहा है, इसका फल शास्त्रकारोंने युद्ध विग्रह अकाल उत्पात महामारी आदिसे जन-धनका भीषण विनाश लिखा है। यथा—

अतिचार गते जीवे वक्री भूते शनैश्चरे।
हाहा ! भूतं जगत्सर्वं रुण्डमाला महीतले ।।

दि० २१ अक्टूबर १९७३ को हर्षल तुला राशिमें प्रवेश करेगा । मेष राशिस्थ मंगलके साथ इसका प्रतियोग १५ फरवरी १९७४ तक चलेगा, माघमासकी अमावस्या २३ जनवरी १९७४ को मकर राशिमें पंचग्रही योग बन रहा है। ३० नवम्बर ७३ से ८ फरवरी १९७४ तक गुरु शुक्र मकर राशिमें रहेंगे । "गुरु शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत् ।" के अनुसार ये संसारमें भयंकर विग्रह उत्पात भूकम्प ज्वालामुखी विस्फोट झंझावात, हिमपात ओलावृष्टि और कहीं खण्डयुद्धसे हानि करेगा। यथा—

एक राशौ यदा यान्ति चत्वार पंचखेचराः ।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा ।।

इस वर्षके उत्तरार्धके ३ मास पौष माघ फाल्गुन संसार और भारतके लिए चौंका देने वाली ऐतिहासिक घटनाकारक सिद्ध होंगे।

अन्ततोगत्वा भारतीय गणतन्त्रका २४वां वर्ष उसके लिए प्रगतिकारक और विश्वमें प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला सिद्ध होगा। सभी सम्भाव्य आपत्तियोंको पार करके सुवर्णकी भांति भारत अग्निपरीक्षामें उद्दीप्त होकर चमकेगा। क्योंकि गणतन्त्र वर्ष-लग्नकी नवांश कुण्डलीमें पूर्ण 'इक्कबाल योग' बन गया है, जो राज्य सत्ताको सुदृढ़ बनाता है और वर्ष लग्नमें जन्म-लग्नेश वर्ष-लग्नेश मुंथेश (गुरुशनि) केन्द्र त्रिकोणमें हैं, ये सब प्रकारके शुभ फल देनेमें समर्थ हैं।

पाकिस्तान और श्री भुट्टो

पाकिस्तानमें पुनः तानाशाही सैनिक शासन मिथुनके शनिमें (१० जून ७३ के बाद) होगा। किन्तु भुट्टोका शासन १९७३ को पहली तिमाही में ही डगमगाने लगेगा। यदि वहां किसी तरह बच गया तो अगस्त और दिसम्बरके मध्य सत्ता हाथसे निकल जावेगी और पाकिस्तान जुलाई-

नवम्बरके मध्य भारत पर आक्रमणकी आत्मघातक योजना बनाकर विखण्डित होगा। भुट्टो का राजनैतिक जीवन समाप्तप्राय है। समाप्ति कालसे पहले भुट्टो बगलादेशको मान्यता न देकर बिलोचिस्तान सिन्ध और सीमा प्रान्तके लोगोंको नानाविध अपनी शतरंजी चालमें फंसाकर इन्दिरा-नीतिको धूलमें मिलानेका प्रयत्न करेगा, पर इसमें सफल नहीं होगा। यदि भुट्टो अपने प्रयत्नोंमें सफल नहीं होता और असमय बंगला देशको मान्यता देनेके लिए बाध्य होता है तो शिमला-सम्मेलन एवं इन्दिरा-स्वर्णसिंहकी सारी सहायता भी भुट्टोको पाकिस्तानका प्रमुख बनाये न रख सकेगी।

बंगला देश

नवोदित बंगला देश इस वर्ष धीरे-धीरे प्रगति करेगा, परन्तु प्रकृति-प्रकोप और अर्थ-संकट लक्ष्य पूर्तिमें बाधक बनेगा। पाकिस्तानी षड्यन्त्रसे भी कुछ हानि होगी। भारतने अपने इस पड़ौसीकी प्राणरक्षामें जो अरबों रुपयों और नौजवानोंकी आहुति दी है उसका प्रतिफल भारतको केवल जबानी जमाखर्चके रूपमें ही मिलेगा। ३ वर्ष बाद कर्कके शनिमें बंगाल देश में भारत विरोधी तत्व पनपेंगे और पश्चिमी बंगाल, असम, उड़ीसाको बंगला देशमें मिलाने का षड्यंत्र रचेंगे। भारतको सतर्क रहना आवश्यक है। बंगला देश पर रूस चीन दोनोंकी गृद्ध दृष्टि है। बगला देशका समुद्र रूसके अधिकारमें जाय यह चीनको सह्य नहीं। इस सत्य को यदि माना जाय तो यह भी मानना चाहिए कि बंगलादेश और चीन परस्पर विरोधी होंगे, अतः इस्लामाबाद ढाकाको अपनी शरणमें आने के लिए विवश करेगा, उसकी स्वाधीनता स्वीकार न करेगा। बंगला देश मुस्लिम देश है, वह मुस्लिम देशोंके बीच सम्मानका स्थान पानेका प्रयत्न कर रहा है। परराष्ट्र मंत्री अब्दुर-समदका सीरिया इराक और मिश्रकी बराबर यात्रा करना यही बताता है। अन्यथा ८७ देशोंसे मान्यता प्राप्त होनेके बाद मुस्लिम देशोंसे मान्यता प्राप्त करनेकी क्या आवश्यकता शेष रह गई थी? यह बताता है कि बंगला देश भारतकी भांति धर्मनिरपेक्ष नहीं, अपितु हृदयसे मुस्लिम देश है और मुस्लिम देशोंका फेडरेशन बनानेकी विशाल योजनामें संलग्न है। किन्तु ग्रहगतिको देखते हुए भारतको इससे भयभीत होनेकी आवश्यकता नहीं। मुसलमानोंकी १४वीं शतीका अन्त सन्निकट है। पाकिस्तानके पतन की बात अनेक सन्त महात्मा और योगियोंने भी कही है। बुखाराके एक प्रसिद्ध भविष्य-वक्ता मुसलमान सन्तकी भविष्यवाणी गत श्रावण मासकी 'ज्योतिष्मती' वर्ष १५ संख्या ४ में प्रकाशित कर चुके हैं।

वायुमण्डल वर्षा रोगोत्पातादि

इस वर्ष आर्द्राप्रवेश लग्न मकर और चन्द्रमा कुम्भमें है (दोनों जलचर राशिमें है) गुरु लग्नमें है। चन्द्रमा नवांशमें भी मकरका है अतः संसारमें वर्षा उत्तम होगी। फसल भी अच्छी होगी। कहीं अति वृष्टिसे हानि होगी। लग्नेश शनि छठे घरमें अस्त और मंगलसे दृष्ट है। शनि वायुतत्वका अधिपति है अतः संसार का वायुमण्डल दूषित रहेगा। ग्रीष्मकालमें भयंकर आंधी-तूफान झझावात और अग्निकाण्ड से कई प्रान्तोमें हानि होगी। मई जून जुलाई १९७३ में शनि मंगलका केन्द्रयोग संसारमें अशान्तिकारक रहेगा। ज्येष्ठ आषाढ़में अग्नि-

काण्ड और दुर्घटाएं अधिक होंगी। आषाढ़ कृ० ३० शनिवार ३० जून १९७३ को दक्षिण भारत में स्वल्पग्रास सूर्यग्रहण होगा। पूर्व अफ्रिका यूगांडा आदिमें खग्रास और यूरोप एशियामें खण्ड ग्रास दिखाई देगा। शनिग्रस्त भौमदृष्ट धनुर्लग्न आर्द्रा नक्षत्रमें ग्रहण होनेसे संसारमें उत्पात अशान्ति बढ़ेगी। स्पर्श स्थिरलग्न वृश्चिकमें हो रहा है अतः लम्बे समय (३ वर्ष) तक इस ग्रहणका प्रभाव होता रहेगा। इस वर्ष में रक्तविकार, चर्म रोग, उदररोग वातव्याधि हृद्रोग शिरोव्यथा और नेत्ररोगका प्रकोप अधिक होगा। पूर्व दक्षिणमें सांसर्गिक रोग और कुछ विचित्र व्याधियां प्रकट होंगी। आर्द्राप्रवेश लग्नमें चन्द्रकी स्थिति उत्तम होनेसे अनेक प्रान्तोंमें वर्षा तो उत्तम होगी। परन्तु ज्येष्ठ मासमें १० जूनको महाग्रह शनिदेव मिथुन राशिमें पवेश करेंगे, गुरुसे इनका षडष्टक योग बनेगा, यह दुर्भिक्ष उत्पात और प्रजामें विग्रह अशान्तिका सूचक है। यथा—

मिथुने च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्।
पश्चिमे दारुणंयुद्धं नृपाणां च महद्भयम्॥
"मकरे च गुरौ चैव दुर्भिक्षं घोर दारुणम्।
विग्रहं यान्ति राजानः त्रिमासान्ते शुभं भवेत्।"

शनि मंगलका केन्द्रयोग और गुरु शनिका षडष्टक जल और बिजलीकी कमीके द्योतक हैं। कई प्रान्तोंमें पर्याप्त बिजली उपलब्ध न होनेसे अनेक प्रतिष्ठानोंमें पूर्ण उत्पादन नहीं हो पायेगा। कहीं भूकम्पसे हानि होगी। ३ भयंकर यान दुर्घटनाएं होंगी। फसल पाकके समय कुछ प्रान्तोंमें ओला-हिमपात अतिवृष्टि अनावृष्टि तो कहीं टिड्डी कीड़ा आदि प्रकृति-प्रकोपसे फसल नष्ट होगी। ज्येष्ठ शुक्लके प्रारम्भमें ३ जूनसे पूर्वी भारत असम उड़ीसा बंगाल और बंगलादेशमें वर्षा प्रारंभ हो जावेगी, नदियोंमें बाढ़ आवेगी। १९ जूनसे दक्षिण भारत महाराष्ट्र मध्यप्रदेश उ०प्र० में भी कहीं-कहीं वर्षा आरंभ होगी। आषाढ़ कृ० ९ दि० २५ जून ७३ से श्रावण कृष्णा ४ दि० १९ जुलाई १९७३ पर्यन्त भारतके सभी प्रान्तोंमें उत्तम वर्षा हो जावेगी। १९ जुलाईसे १३ अगस्त तक सिंहके शुक्रमें कई प्रान्तोंमें वर्षाकी खेंच होगी। परन्तु यहां सूर्यसे आगे शुक्र चल रहा है अतः वर्षाका सार्वत्रिक अभाव नहीं होगा, केवल पूर्व दक्षिणी प्रान्तों और राजस्थान में उक्त अवधिमें वर्षावरोध होगा। अन्यत्र यथा-वसर वर्षा होती रहेगी। लिखा भी है—

"सूर्याग्र च यदा शुक्रस्तदा वृष्टि सुशोभना।"

भाद्रपद मासमें १६ अगस्तसे २७ अगस्त तक अतिवृष्टिका योग है। कई प्रान्तोंकी नदियोंमें बाढ़ आवेगी, मार्ग अवरुद्ध होंगे। जलाशयोंके बांध टूटेंगे। मार्ग. शुक्ला १५ दि० १० दिसम्बर १९७३ को प्रातः वृश्चिकलग्न रोहिणी नक्षत्रमें ग्रस्तास्तचन्द्रग्रहण होगा। यहां लग्नेश मंगल छठे और चन्द्रमा, मंगल शनि केतुकी पाप-कर्तरीमें होनेसे आगामी ६ मासमें किसी महा-पुरुषकी मृत्यु, युद्ध विग्रहमें राष्ट्रका पतन और प्रकृतिप्रकोपसे भारी विनाश होता है। किसी प्रदेशमें सेना और शस्त्रास्त्र बम्बारीसे भीषण विनाश होगा। पश्चिमी यवनदेश और अफ्रीका में लम्बे समय तक इसका अनिष्ट फल होगा। पौष माघ मास (दिसम्बर ७३ जनवरी ७४) में भयंकर शीत पड़ेगी। पर्वतीय प्रदेशोंमें हिम-पात और कई प्रान्तोंमें वर्षाकेसाथ ओले गिरेंगे। माघ कृष्ण अमावस्या २३ जनवरी १९७४ को मकर राशिमें पंचग्रही योग

उत्पात सूचक है। पूर्वी भारत और दक्षिणमें कहीं भूकम्प तो कहीं शीत लहर हिमपातसे हानि होगी। राजनैतिक वातावरण भी अशान्त बनेगा। यहांसे आगे तीन मासमें कई अकल्पित घटनाएं घटेंगी।

इस वर्ष ज्येष्ठ मास गंगादशमी (१० जून ७३) को शनि मिथुन राशिमें प्रवेश करेगा। राशि परिवर्तनके समय शनिदेव सूर्य केतुसे आक्रान्त हैं। वर्षभर नेपच्यून और गुरुसे षड-ष्टक एवं राहुके प्रतियोगमें रहेंगे। शनि श्रमिक वर्ग निम्न श्रेणी और कम्यूनिज्मका अधिनायक है, अतः इस वर्ष मजदूरों, सरकारी अर्धसरकारी कर्मचारियोंमें असन्तोष बढ़ेगा। मंहगाईके कारण ये अपनी वेतन वृद्धि, भत्ता, बोनस आदि की मांग करेंगे और इसके लिए यत्रतत्र हड़ताल उग्र आंलोलन होंगे। भारतमें कम्युनिष्टोंका प्रभाव बढ़ेगा। कम्युनिज्म भारतके लिए अभि-शाप है। यह भ्रष्टाचारको जन्म देता है, राष्ट्रा-भिमानको नष्ट करता है। दुर्बल और चरित्र भ्रष्टकर अपना प्रभुत्व विस्तारित करता है। यह भारतका राहु १९७३-७४ में शान्तिको नष्ट करेगा, भारत भक्तिको उभरने न देगा।

वाणिज्य-व्यवसाय

वाणिज्य व्यवसायका नैसर्गिक अधिपति नपुंसक ग्रह बुध इस वर्षका राजा है और जग-ल्लग्न वर्षलग्नका अधिपति भी इस वर्ष बुध ही बना है। वर्षलग्न जगत्लग्नमें बुध निर्बल है और धनेश सूर्यसे द्विर्द्वादशयोग बना है, अतः इस वर्ष वाणिज्य व्यवसायकी स्थिति अस्थिर रहेगी, खाद्यान्नकी कमीके कारण भाव ऊंचे रहेंगे। कभी-कभी भाव कुछ गिरेगा, पर अस्थाईरूपसे। व्यापारकी स्थिति इस वर्ष डांवाडोल सी रहेगी। १० जून तक गेहूँ, गुड़ आदि खाद्यपदार्थमें कुछ मंदी आवेगी। अगस्तके प्रारम्भसे गुड़, शक्कर, तिलहन, तेल घृतमें तेजी चमकेगी। बड़े उद्योग पनपेंगे नहीं। वर्षराज बुध राज्येश भी स्वयं बन गया है। अतः इस वर्ष प्रायः सभी प्रमुख बड़े उद्योग राजसत्ताके अधीन होंगे, अर्थात् जीवनोपयोगी सभी वस्तुओं (अन्न वस्त्रादि) पर पूरा सरकारी अंकुश रहेगा। राष्ट्रीयकरणके नाम पर सरकार सभी प्रमुख वाणिज्य-व्यवसायके काम अपने हाथमें ले लेगी। अनेक चीनी मिलों कपड़ा मिलोंका राष्ट्रीयकरण होगा। कुछ समृद्ध बड़े उद्योगोंका पूर्ण राष्ट्रीयकरण तो नहीं होगा पर अंकुश बढ़ेगा। स्वतन्त्रताके इस रजत जयन्ती वर्षमें वारुणी (शराब) उद्योगसे खूब रजत (चांदी) बनाकर राष्ट्रपिताको श्रद्धांजलि दी जावेगी। अनेक छोटे व्यापारियोंको अपनी प्रतिष्ठा बचाना कठिन होगा। सरकार जिन व्यवसायों को अपने हाथमें लेगी उनमें अनुभवी कार्य कुशल ईमानदार कार्यकर्ता न होनेसे 'विनायकं प्रकुर्वाणो रचयामास वानरम्' की उक्ति चरि-तार्थ होगी। मंहगाई मिटाने और गरीबी दूर करनेकी प्रतिज्ञा करने वाले शासकोंके लाख प्रयत्न करने पर भी इन आगामी दो वर्षोंमें न तो मंहगाई मिटेगी और न गरीबी दूर होगी। जनता जनार्दन अवधिसे पहले ही उन्हें अपने पदसे मिटा दे तो आश्चर्य नहीं।

एक आत्मकथ्य (पूर्वार्ध)

गंभीरता, विवेकशक्तिका प्रतीक ग्रह बुध (१)

[लेखक :—श्री बालकृष्ण इन्दोरिया]

महर्षि पराशर अपनी प्रारंभिक दैनिक निवृत्तिके बाद नियमबद्ध तपश्चर्याहेतु ब्रह्मवेला में गंगातटके पूजास्थल पर अथर्ववेदके परायण में ध्यानस्थ हो गये। यह ब्रह्मर्षिकी तपश्चर्या का सतरहवें वर्षका समापन दिवस था। शीत ऋतुका यह बुधवारका दिवस प्रातः ब्रह्मवेलासे ही मुखरित लग रहा था। उषःकालसे किंचित् पूर्वका समय था। एकाएक ब्रह्मर्षिने देखा कि स्मित मुस्कानयुक्त एक बाल्यमुद्रामें किशोर उनके सन्मुख खड़ा है और उत्सुकतासे आशीर्वचनोंका आकाक्षी है। महर्षि पराशरने आशीर्वचनोंके उच्चारणके साथ बुधदेवकी वन्दना प्रस्तुत की। प्रसन्नमुख मुद्रामें बुधदेव बोले—'महर्षिवर! आप इस दशकद्वयसे अविराम तपश्चर्यामें तल्लीन हैं, किस कामना हेतु यह अनुष्ठान है? महर्षि पराशर बोले —'बुधदेव! आप सर्वज्ञ हैं। मुझे इस क्षणभगुर जीवनमें क्या कामना एषणा हो सकती है? मैं तो आपके स्वरूप व दर्शनोंका अभिलाषी था जो आज पूर्ण है।' बुधदेव बोले—'विप्रवर! तुम मेरे अनन्य उपासक हो अतः मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। तुमने मेरे स्वरूपकी आकांक्षा की है अतः मैं अपने स्वरूपका विशद परिचय करानेको ही आपके सम्मुख उपस्थित हूँ। मैं अपनी 'आत्मकथा' के कुछ गोपनीय पृष्ठोंका वाचन करता हूं। मैं अपने समस्त तथ्योंको कलियुगमें प्रचलित गणित पद्धतिमें उल्लेख करूंगा, अतः आप भविष्यद्रष्टा होकर सावधानी पूर्वक मेरे स्वरूपका विशद विवरण ध्यानपूर्वक सुनें। मेरे बारेमें एक तथ्य सदैव ध्यानमें रखें कि मैं बाल्यवृत्तिका प्रतीक हूं, जो प्रायः किसी न किसीके साथ होता हूं क्योंकि अकेला रहना मुझे कम पसंद है। मेरा स्वभाव जलवत् है 'जैसा पाया वैसा स्वयंको बनाया' अर्थात् मैं जिस स्थान, संगतिमें होता हूँ वैसा ही बन जाता हूँ।'

'मेरे अवतरणके समय ब्रह्मचक्र तीव्र त्वरित गतिमें गतिशील था और तृतीय राशि मिथुन उदित क्षितिज़में दृश्य थी। लग्नमें उच्च का राहु मेरे तनकी एक पाप अपवित्रताको स्पष्ट प्रकट कर रहा था। मेरे धन भाव पर गुरु-चन्द्रका सम्मिलन था जिस पर पितृ प्रतीक ग्रह सूर्यदेव अष्टमभावसे मकरस्थ होकर पूर्ण दृष्टि डाल रहे थे। गुरु-चन्द्र मेरे पिताद्वयके प्रतीक थे, जो दोनों ही मेरे लिये आयुष्कारक थे, क्योंकि गुरु मेरे समस्त दुःखों, रोगोंका निवारक बना और चन्द्र मेरी अनन्त आयुका कारक बना। शनि मेरे भाग्यभावमें स्वगृही होकर पापत्वको प्रकट करते हुए समस्त अरिष्टोंका निवारण कर रहा था। केतु धनुः राशिमें सप्तमस्थ होकर मेरे दाम्पत्य जीवनका नाश करना चाहता था। इसीने मुझे क्लीवता प्रदान की है और मैं तटस्थ लिंगी माना जाता हूं। शुक्र मेरे राज्यभावमें उच्चका होकर राज्य व

सुखको स्थायित्व दे रहा था। सूर्य व शुक्रकी महत्ती कृपासे मैं समस्त बाधाओंको विजित करके जीवित रह सका।'

'मैं देवगुरु बृहस्पतिकी धर्मपत्नी तारादेवी का पुत्र हूँ अतः गुरुदेव मेरे पिता एवं तारा मेरी जननी है। चन्द्र व ताराके संयोगके फलस्वरूप जारज रूपमें मेरी उत्पत्ति हुई अतः चन्द्र मेरा जनक है। मैं चन्द्रका आत्मज होनेके कारण रोहिणी पुत्र भी कहा जाता हूं। यह चन्द्रपत्नी (रोहिणी) के लिये सम्मानकी बात है। मैं जारज हूं तो इसमें मेरा क्या दोष है? वैवस्वत मनुके दस पुत्रोंके बीच एक मात्र कन्या इला है, जो मेरी भार्या है, मेरे एकमात्र पुत्र पुरुरवा है जिसे कौन नहीं जानता?'

'मुझे ब्रह्माण्डके नियन्ता सूर्यका पूरा संरक्षण प्राप्त है अतः मैं सर्वदा उनके निकटस्थ रह कर अपनेको सुरक्षित रख पाता हूँ। मैं सूर्यदेवसे ३८° से अधिक दूरीमें किसी भी स्थितिमें भूल कर भी नहीं जाता, यही कारण है कि आप लोगोंको मैं सूर्योदयसे लगभग डेढ़ घंटे पूर्व अथवा सूर्यास्तके एक घंटे बाद तकमें कहीं कठिनाईसे दिखाई दे सकता हूँ। मेरा मण्डल शुक्रसे दो लाख योजन ऊपर है। मेरा मूल-त्रिकोण कन्याके दश अंश है। मैं स्वराशि कन्या पर उच्चका होता हूँ, यह मेरी तीव्र बुद्धिका प्रतीक है। मुझे किसी भी स्थितिमें, कोई ग्रह मेरे उच्चताके योगको भंग करके निष्फल नहीं बना सकता। मेरा नीच स्थान पितृवरकी मीन राशि है। मेरे स्वगृह मिथुन व कन्या है, जो भचक्रके ६०° से ८०° तक एवम् १५०° से १८०° तकका क्षेत्र है। मेरा प्रथम क्षेत्र मिथुन है जो वायु व शीत तत्व, क्रूर, पश्चिम, शूद्र, हरित वन, शीर्षोदयी, द्विपद पुरुषतत्वकी है। मेरा दूसरा क्षेत्र कन्या है, जो पृथ्वी तत्व, सौम्य, दक्षिण, पाण्डुरंगी, वैश्यजाति, वायु व शीत तत्व प्रकृति, शीर्षोदयी, द्विपदी स्त्री प्रतीक है। सूर्य मेरा संरक्षक, शुक्र मेरा मित्र एवम् राहु मेरा अपना है। चन्द्रको मैं अपना शत्रु मानता हूँ। मैं सर्व गतिमान हूँ। मेरी दृष्टि कटाक्ष है और अपनी स्थितिसे सप्तम भावको पूर्ण देखती है।'

'मैं अत्यधिक तीव्र गतिशील हूँ और सूर्य से लगभग पौने चार करोड़ मील दूर हूँ। पृथ्वी से तेरहसौ उन्हत्तर लाख मील दूर हूँ। मैं सूर्य के निकटस्थ हूँ अतः मेरा ताप ३५०° सेंटीग्रेड है। मेरी आकृति लगभग तीन हजार मील है। मैं आकृतिमें सबसे छोटा हूं और अपनी धूरी पर लगभग चोबीस घटोंमे एक चक्कर पूरा कर लेता हूँ। मैं तीस मील प्रति सैंकिडकी गतिसे लगभग अठासी दिनोंमें ही अपने परि-क्रमापथको पूरा कर लेता हूँ। जितने क्षेत्रको सूर्य एक माहमें पूरा करता है मैं लगभग पच्चीस दिनोंमें पूरा कर लेता हूँ।'

'मैं कालपुरुषके दोनों हाथ, कंधे, भुजा, छातीके ऊपरका भाग, गला, फेफड़ा, वाणी, नासिका, ग्रीवा, छाती, कमर, पेट, आंतड़ियां-आमाशय, जठर अंग हूँ अतः इन सब अंगों पर मेरा ही प्रभाव है। मुझे कई नामोंका सम्बोधन मिला है यथा—इन्द्रपुत्र, चन्द्रपुत्र, ज्ञ, वित् सौम्य, चान्द्रि, बोधन, शांत, श्यामगात्र, हेम्न, उतारूद अतिदीर्घ, तारातनय, रोहिणी-पुत्र आदि। पाश्चात्य लोगोंने मुझे 'विंग-मेसेन्जर' कहा है। मेरे नक्षत्र आश्लेषा, जेष्ठा, रेवती हैं। 'क छ प ठ' वर्णोंसे प्रारंभ होने वाले नाम के जातक मुझे सर्वदा प्रिय लगते हैं। मैं बत्तीस

से पैंतीस वर्षकी आयुमें अपना पूर्ण फल देता हूँ। मैं पांचकी सख्या पर पूर्ण प्रभावी हूं, अतः मई महिने पर एवं ५-१४-२३ तारीखों पर मेरा प्रभाव है। विंशोत्तरी दशाचक्रमें मुझे सतरह वर्ष मिलते हैं। मेरे दीप्तांश सात व कालांश तेरह हैं। मैं तरुण बालकोंका प्रतीक हूँ। मैं उत्तर दिशाका स्वामी हूँ और आध्यात्मिक शक्ति, तर्कवितर्क, खण्डन-मण्डनका प्रतिनिधि हूं। मुझे सप्ताहमें मध्य दिवस मिला है जो मेरे ही नामसे प्रचलित है। विधाराकी जड़ी मुझे अत्यधिक प्रिय है। मैं राहु प्रदत्त कष्टोंका निवारक हूं और शुक्रसे पराजित होता हूं। मैं पृथ्वी तत्व प्रधान हूँ और विद्या, विवेक, वाणी, त्वचा, छात्र मेरे प्रतीक हैं। मैं नरकलोकका स्वामी हूँ, बौद्धिक विकासका मूल्यांकन मेरी स्थितिसे किया जाता है।'

'मेरा प्रभाव मामा, मित्र, मौसी पर रहता है। मैं सुख सन्तान भावका अकारक हूँ क्योंकि नपुंसक हूं, अतः इन भावोमें निष्फल होता हूं। मैं दशम भावमें ही कारक होता हूँ। मैं प्रातः बलि होकर विन्ध्वसे गंगानदीके हरित क्षेत्रों पर प्रभाव डालता हूं। अथर्ववेद मेरा अपना है। मूंग-मोठ-बाजरा-जौ मेरा अन्न है। पन्ना मेरा रत्न है। सीप व पारा मेरी धातु है। मुझे कटु व मिश्रित रस प्रिय है। मुझे शरद ऋतु भाती है और मेरी दृष्टि कटाक्ष है। मैं किशोर रूपक हूं अतः मातेश्वरी लक्ष्मी का लाडला सेवक हूँ और मेरे देवता विष्णु हैं। मैं विष्णुकी उपासना करता हूं और मर्कतमणी (गरुड़मणी) पर मेरा प्रभाव है। मैं नपुंसक श्यामवर्ण, त्रिदोष प्रकृतिको रखता हूं। हरित वर्ण मुझे सर्वदा प्रिय है।'

'मैं निम्नांकित राष्ट्रों पर अपना प्रभाव रखता हूँ—

बेल्जियम, अमेरिका, टर्की, यूनान, उत्तरी अफ्रीका, ब्राजील, भारत आदि। न्यूयार्क, वेल्स, पेरिस मेरे द्वारा प्रभावित नगर हैं। मैं ब्रह्मलोकमें पूर्ण प्रतिभाशाली, विद्वान्, बुद्धिमान्, गणितज्ञ एवं वाक्पटु हूं। मैं मूक योगका निर्माण करके वाणी विहीन बना देता हूं।'

'मैं पूर्वास्तके बत्तीस दिन बाद पश्चिममें उदय होता हूँ। उदयके बत्तीस दिनों बाद वक्री होता हूँ। वक्री के चार दिनों बाद पश्चिममें अस्त होता हूं। पश्चिममें अस्त होनेके सोलह दिनों वाद पूर्वमें उदय, उदयके चार दिनों बाद मार्गी, मार्गीके बत्तीस दिनों बाद पूर्वमें पुनः अस्त होता हूं। यही मेरी अष्टरंगी गतिका रहस्यात्मक तथ्य है। मैं बान्वे दिन मार्गी, एवम् तेईस दिन वक्री रहता हूँ। मैं मस्तिष्कसे वैश्य, जातिसे शूद्र हूं।'

'मैं स्वगृही होकर वाचाल, शास्त्रज्ञ, साहित्यकार, वैज्ञानिक, उदार विधिज्ञ, संगीतज्ञ, मधुरभाषी, कलाकार, विद्वान्, उद्योगी, परिवर्तक बनाता हूं। मैं उच्चस्थ होकर उपर्युक्त फलोंको पुष्ट करते हुए गणितज्ञ, वाक्पटु, आदर्शवादी, निडर बनाता हूं। मैं नीचस्थ होकर उग्र स्वभावी, मंदबुद्धि, पत्नीको धोखा देने वाला अथवा पत्नीमे धोखा खाने वाला बनाता हूं। मित्र क्षेत्री होकर उपदेशक, तार्किक, स्त्रीमित्री, अध्ययनशील, गुरुभक्त, हठी बनाता हूं। शत्रु क्षेत्री होने पर मैं स्त्री भक्त, कलाप्रेमी, कामी व प्रवासी बना कर अशुभ फलदाता होता हूं। प्रधान

रूपसे मैं परिस्थितियोंके अनुसार होकर फलीभूत होता हूं। मैं जिस ग्रहकी संगतिमें होता हूं उसके अनुरूप होकर फल देता हूं।'

'मैं बालक हूं अतः मेरी वृत्ति वाचाल है, इसी कारण एक ऋषिने मेरे बारेमें लिखा है—'क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा, रुष्टा-तुष्टा क्षणे क्षणे' वास्तवमें मैं किसी क्षण उदास, किसी क्षण उद्विग्न और तत्काल ही दूसरे क्षण प्रसन्न व शांत हो जाता हूं। मैं सदैव मस्तिष्कका पूर्ण प्रतिनिधि हूं अतः प्रत्येक क्षण क्रियाशील रहता हूं। मेरे जातक भी समयका मूल्य जानते हैं और सदैव क्रियाशील रहते हैं। मेरे जातक चाहे नौकरी करें चाहे व्यवसाय किन्तु वृत्तिको व्यापार प्रधान बनाता हूं और इसी क्षेत्रमें सर्वदा सफल कराता हूं। मेरे जातकोंको दीर्घकालीन समझौतोंसे सदैव बचना चाहिए। छात्र मेरे प्रतिनिधि हैं। मैं लोकमानसको सन्तोषका दाता हूं अतः सभी लोग "बुध कीजै व्यवहार" की भावना मेरे प्रति रखकर मेरे ही दिवसमें नवीन वस्त्र धारण करने एवम् लेनदेन करनेके कार्य सम्पन्न करते हैं।'

'मैं वृष कन्या मकर लग्नका तारक एवम् मिथुनको हानिकारक होता हूं। मैं अलसी, पीली सरसों, मटर, ज्वार, बाजरा, रुईवस्त्र, जूट-बिनौला, मूंगफली, कागज उद्योग, शिल्पकला पर प्रभावी हूं। वाणी, त्वचा, वाणिज्य, गणित, चित्रकारी, नृत्य, वाद्यगान, विद्या व चातुर्य पर भी मेरा प्रभाव है। मैं कूटनीतिज्ञ, उच्चस्तरीय तार्किक, ज्योतिषी, वैज्ञानिक, पंडित, अध्यापक, मूर्तिकार, खिलाड़ी अभिनेता, इंजिनियर, कलाकार, सम्पादक, प्रकाशक, लेखक, लेखापाल, चिकित्सा शास्त्री, डाक व तार विभाग सेवी रेडियो व टेलिविजन विभाग सेवी बनाता हूं। विश्व-वन्द्य आदित्यके लिये मैं ही समस्त योजना बनाता हूं। अतः मैं योजना मंत्री हूं। ग्रहमण्डल में मेरा जितना विद्वान् कौन है? बृहस्पतिका जारजपुत्र होनेसे उनसे विद्वत्ता एवम् मातेश्वरी तारादेवीसे सौम्यता और पितृवर चन्द्रसे बौद्धिक त्वरितता मुझे मिली है। मैं समस्त संचार व्यवस्था, तार, टेलिफोन, टेलिविजन, रेडियो, फोटोग्राफी, एलोपैथी, विद्युत् प्रवाह एवम् विद्युत्-उपकरणोंके समस्त साधनों पर प्रभाव रखता हूँ। मेरे कारणसे ही विज्ञानकी समस्त प्रगति हो सकी है।'

'मेरे अशुभ फलोंसे कई रोग हो जाते हैं। मैं स्नायु श्वास मुख नासिका, दमा फेफड़ेके रोग देता हूं। मतिभ्रम, मूकत्व, रक्तहीनता, कुष्ठ, नाड़ी कम्पन, शूलरोग, मंदाग्नि, उदर रोग, वायुरोग, नेत्ररोग, गुह्य रोगोंका भी मैं दाता हूँ। रक्त विकार चर्मरोग मेरे प्रधान रोग हैं इन रोगोंको प्रदत्त करके मैं अपना सर्व अशुभ फल प्रकट करता हूं।'

'मेरे अशुभ फलोंसे बचनेके लिये कुछ लोग हरित पन्नेके छः रत्तीकी अंगूठी बनवाकर कनिष्ठिकामें धारण करते हैं, इससे मैं अनुकूल फलदाता होता हूं। व्यापारियों छात्रों, नौकरी करने वालोंको ऐसा प्रयोग करने पर मैं लाभप्रद होता हूं।'

'मेरेसे प्रभावित जातकोंमें कुछ लोग संसार प्रसिद्ध हुए हैं यथा—शेक्सपियर, कार्लमार्क्स, रानी विक्टोरिया, अलबर्टआईस्टीन, बाल गंगाधर तिलक, राष्ट्रपति आइजनहोवर, सी.डी. देशमुख, चित्तरंजनदास, जुगलकिशोर

बिडला, अभिनेता राजकपूर आदि।'

'मैं युवराज हूँ अतः व्यापार प्रधान गुणके कारण मातेश्वरी लक्ष्मीका उपासक हूं। मातेश्वरीकी प्रसन्नतासे जगत् पालक विष्णुको प्रसन्न करनेमें मुझे सरलता रहती है, अतः मैं विष्णुका परम उपासक हूँ। मुझे प्रसन्न करनेके लिये लोगोंने विविध प्रयास किये हैं। एक परम भक्तने मेरी अनुपम साधना करके मुझे अत्यधिक प्रसन्न किया था। उसने भी विष्णुप्रिया लक्ष्मीकी मूर्ति प्रतिष्ठापित करके उसकी सुगन्धित धूपदीपोंसे अर्चना करते हुए पूजा करता था। प्रति बुधवारको लक्ष्मीनारायणका व्रत रखता था और पूर्णिमा व्रत नियमानुसार रखता था।'

'वह भक्त सदैव निम्न मन्त्र व स्तुतिका पाठ प्रतिदिन नियमबद्ध रूपमें करता था जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ—

'त्रिलोक्यां पूजिते देवि ! कमले विष्णु वल्लभे !
यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा !
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चलामूर्तिः हरिप्रिया !
पद्मा पद्मालया संपदुच्चैः श्रीपद्मधारिणी।
महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि !
विश्वेश्वरि ! नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं हरिप्रिये !
ॐ श्रीं श्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं
'ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॐ बुं बुधाय नमः।'

इन्हीं शब्दोंके वाचनके साथ बुधदेव अन्तर्धान हो गये। महर्षिवर पराशरने आंखें मलते हुए देखा कि अरुण लालिमामें दिनकर अपना भव्यभाल निकाल कर मुस्करा रहा था। महर्षि अपनी साधनामें पुनः तल्लीन थे।

[क्रमशः]

जन्मपत्री शिक्षा—५

भाव स्पष्ट एवं चलित चक्र

[लेखक :—श्री सीताराम स्वामी एम.ए.बी.एड. प्रभाकर, ज्योतिषाचार्य. दैवज्ञ भूषण]

भावप्रवृत्तौ हि फलप्रवृत्तिः, पूर्णं फलं भाव समांशकेषु ।
ह्रासः क्रमाद्भाव विरामकाले, फलस्य नाशः कथितो मुनीन्द्रैः ।।

जन्मपत्रीमें चलित चक्रका अपना विशेष महत्त्व होता है, क्योंकि भाव सन्धिमें गया हुआ ग्रह फल प्रदान करनेमें असमर्थ रहता है, तथा पिछले व अगले भावमें चले जाने वाले ग्रह अपने मुख्य भावसे सम्बन्धित फल प्रदान करने के अतिरिक्त उस भावसे सम्बन्धित फल भी देंगे जिसमें चलितमें चले गये हैं । अतः प्रत्येक जन्मपत्रीमें चलित चक्र अवश्य बनाना चाहिए ।

चलित चक्र बनानेके लिए ग्रह स्पष्ट एवं द्वादश भाव स्पष्ट करने आवश्यक होते हैं। ग्रह स्पष्ट करनेकी विधि जन्म-पत्री-शिक्षा —३ में अंकित की जा चुकी है। अब द्वादश भाव स्पष्ट करनेकी विधि प्रस्तुत की जा रही है।

द्वादश भाव स्पष्ट करनेके लिए दशम भाव स्पष्ट करनेकी प्रथा प्रचलित है। इसी कारण प्रत्येक पञ्चांगमें लग्न सारिणीके साथ साथ दशम सारिणी भी दी जाती है । जैसे लग्न स्पष्ट करनेके लिए जन्म कालिक इष्ट की आवश्यकता होती है उसी प्रकार दशम भाव स्पष्ट करने हेतु पूर्व नत या पश्चिम नत ज्ञात करना होता है । ज्योतिषके विद्यार्थियोंके लिए नत बनाना भी एक सिरदर्द है । अतः नत बनानेके चक्करमें न पड़ करके इष्टसे ही दशम भाव स्पष्ट कर लेना चाहिए । जिस प्रकार सूर्योदयसे जन्मकाल तककी अवधिको (जन्म कालिक) इष्ट कहा जाता है उसी प्रकार दिनके १२ बजेसे जन्म-काल तककी अवधि दशमका इष्ट तथा रात्रिके १२ बजेसे जन्म काल तककी अवधि चतुर्थका इष्ट हुआ करता है । चतुर्थ व दशमके इष्टमें ३० घड़ीका अन्तर होता है । इस प्रकार चतुर्थ या दशमका इष्ट ज्ञात कर दशम सारिणीसे उसी प्रकार चतुर्थ या दशम स्पष्ट कर लेना चाहिए । जिस प्रकार सूर्योदयात् इष्टसे लग्नसारिणीकी सहायतासे जन्म लग्न ज्ञात करते हैं चतुर्थ या दशमके इष्टसे सूक्ष्म लग्न साधन विधिसे भी सूक्ष्म चतुर्थ या दशम स्पष्ट किया जा सकता है । इसमें समस्त प्रक्रिया सूक्ष्म लग्न साधन विधि [देखिये ज्योतिष्मतीका गत नववर्षाङ्क] के समान ही की जाती है । सूर्योदयात् इष्टके स्थान पर चतुर्थ या दशमका इष्ट लिया जाता है, तथा जन्म स्थानके स्वोदयके स्थान पर लंकोदय लिए जाते हैं ।

दशम भाव स्पष्ट करनेकी एक सरलतम विधि यह भी है कि जिन अंकोंसे [सूर्योदयात् इष्टमें तात्कालिक सूर्यकी राशि अंशका फल जोड़ कर] लग्न सारिणीसे लग्नके राशि अंश ज्ञात करते हैं, उन अंकोंमेंसे १५ घटाकर शेष अंकोंसे दशम सारिणीकी सहायतासे दशम भावकी राशि अंश ज्ञात करलें । उन्हीं अंकोंमें १५

जोड़ कर दशम सारिणीसे चतुर्थ भाव स्पष्ट किया जा सकता है।

यद्यपि समस्त ज्योतिष ग्रन्थोंमें द्वादश भाव स्पष्ट करनेके लिए सर्वप्रथम लग्न एवं दशम भाव स्पष्ट करनेका परामर्श दिया गया है, पर मेरा यह व्यक्तिगत विचार है कि दशम भावके स्थान पर चतुर्थ भाव स्पष्ट कर लग्न तथा चतुर्थ भावकी सहायतासे द्वादश भाव स्पष्ट करना सरल पड़ता है। चतुर्थ भाव स्पष्ट करने के लिए भी दशम सारिणीका ही प्रयोग होता है।

अब चतुर्थ भाव स्दष्ट करनेका उदाहरण लीजिए। हमने बालकका जन्मदिन १ अक्टूबर १९७० माना है। सूर्योदयात् इष्ट घ० २४ प० ३० एवं सूर्य स्पष्ट ५—१४—२१—१२ है। उस दिन जोधपुरमें दिनमान २९—४० तथा रात्रिमान ३०-२० था। चतुर्थका इष्ट ज्ञात करनेके लिए रात्रिमानके आधे

$\frac{३०—२०}{२}$ =१५—१० में सूर्योदयात् इष्ट २४ ३० का योग करने पर चतुर्थ भावका इष्ट होगा।

अर्ध रात्रिमान	घटी १५ पल १०
सूर्योदयात् इष्ट	,, २५ ,, ३०
चतुर्थका इष्ट :—	घटी ३९ पल ४०

जिस प्रकार लग्न सारिणीसे लग्न ज्ञात करते हैं उसी विधिसे दशम सारिणीकी सहायतासे चतुर्थ स्पष्ट कर लें। यथा :—

चतुर्थका इष्ट ..... ३९—४०
सूर्यके राशि अंशका फल ३१—८
योग १०—४८ [६० घटाने पर]

दशम सारिणीमें योगमें देखने पर वृषभ राशिके तेरहवें अंशमें १०—४७ संख्या अंकित है जिसे १०—४८ मेंसे घटाने पर ६ शेष बचें। ६ को ६० से गुणा कर तेरहवें ऐवं चोदहवें अंशकी संख्याके अन्तरसे भाग देने पर २१ कला २५ विकला प्राप्त हुई। इस प्रकार चतुर्थ स्पष्ट १—१३—२१—२५ आया।

सूक्ष्म लग्न साधन विधिसे भी लतुर्थ स्पष्ट किया जा सकता है। इसके लिए चतुर्थ का इष्ट (३९-४०) लेना चाहिए तथा स्वोदयके स्थान पर लंकोदयका प्रयोग करना चाहिए।

सर्वभाव स्पष्ट विधि

द्वादश भाव एव उनकी सन्धियोंको स्पष्ट करनेके लिए चतुर्थके राशि, अंश, कला, विकलामेंसे लग्नके राशि अंश कला, विकला घटाकर शेषमें ६ का भाग दें। लब्धि यानि षष्ठांशके अंश कला विकलाको लग्न के राशि, अंश आदिमें जोड़नेसे लग्नकी सन्धि। इस सन्धिमें षष्ठांशका योग करनेसे द्वितीय भाव, द्वितीय भावमें षष्ठांश जोड़नेसे द्वितीय भावकी सन्धि, इस सन्धिमें षष्ठांशका योग करने पर तृतीय भाव तथा तृतीय भावमें षष्ठांश जोड़ने पर तृतीय भावकी सन्धिके राशि अंश आदि ज्ञात हो जायेंगे। अब इस षष्ठांशको एक राशि यानी ३० अंशमेंसे घटा दें। अब चतुर्थ भावके राशि अंश आदि में इस शेष फल (नवीन षष्ठांश) का योग करनेसे चतुर्थ भावकी सन्धि ज्ञात हो लायगी। इसी प्रकार क्रमशः योग करके षष्ठ भावकी सन्धि तक ज्ञात कर लें। अब लग्नमें ६ राशि जोड़नेसे सप्तम भाव, लग्नकी सन्धिमें ६ राशि जोड़नेसे सप्तम भाव,

सप्तम भावकी सन्धि आ जायगी। इसी प्रकार क्रमशः ६—६ राशियां जोड़नेसे द्वादश भावकी सन्धि तक ज्ञात कर सकते हैं यथा :—

चतुर्थ भाव स्पष्ट......१—१३°—३१—२५″
लग्न स्पष्ट ......१०—३°—४८′—५५″
(घटाने पर शेष फल। ३—९°—४२′—३०″

इस शेष फलको ६ से विभाजित करने पर लब्धि =

३—९—४२—३०÷६=१६°—३७′—५″

इस षष्ठांशको लग्नमें जोड़ने पर

१०—३—४८—५५
+१६—३७—५

लग्नकी सन्धि :— १०—२०—२६—०
+१६—३७—५
द्वितीय भाव :— ११—७—३—५
+१६—३७—५
द्वितीय भावकी सन्धि— ११—२३—४०—१०
+१६—३७—५
तृतीय भाव :— ०—१०—१७—१५
+१६—३७—५
तृतीय भावकी सन्धि :— ०—२६—५४—२०

षष्ठांशको एक राशि यानि ३० अंशमेंसे घटाने पर :—

३०°—०′—०″
१६—३७—५
१३°—२२′—५५″

अब इस क्षेपकको चतुर्थ भावसे षष्ठ भाव तक क्रमशः जोड़ने पर :—

चतुर्थ भाव :— १—१३—३१—२५
+१३—२२—२५
चतुर्थ भावकी सन्धि :— १—२६—५४—२०
+१३।२२—५५
पंचम भाव :— २—१०—१७—१५
+१३—२२—५५
पंचम भावकी सन्धि :— २—२३—४०—१०
+१३—२२—५५
षष्ठ भाव :— ३—७—३—५
+१३—२२—५५
षष्ठ भावकी सन्धि :— ३—२—२६—०

लग्नसे षष्ठ भावकी सन्धि तक क्रमशः ६—६ राशियां जोड़नेसे द्वादश भाव स्पष्टका चक्र निम्नांकित प्रकारसे बनता है।

द्वादश भाव स्पष्ट

१	०	२	०	३	०	४	०	५	०	६	०
१० ३ ४८ ५५	१० २० २६ ०	११ ७ ३ ५	११ २३ ४० १०	० १० १७ १५	० २६ ५४ २०	१ १३ ३१ २५	१ २६ ५४ २०	२ १० १७ १५	२ २३ ४० १०	३ ७ ३ ५	३ २० २६ ०
७	०	८	०	९	०	१०	०	११	०	१२	०
४ ३ ४८ ५५	४ २० २६ ०	५ ७ ३ ५	५ २३ ४० १०	६ १० १७ १५	६ २६ ५४ २०	७ १३ ३१ २५	७ २ ५४ २०	८ १० १७ १५	८ २३ ४० १०	९ ७ ३ ५	९ २० २६ ०

'ज्योतिष्मती' के १५वें वर्षके तृतीय अंकमें प्रकाशित ग्रह स्पष्ट विधिके अनुसार १ अक्तूबर १९७० को सूर्योदयात् इष्ट २४-३० के समय ग्रहोंकी स्थिति निम्न प्रकार थी :—

ग्रह स्पष्ट

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०
५	५	४	४	६	६	०	१०	४
१४	२३	२४	२७	१४	२५	२८	७	७
२१	५२	२६	२६	४१	३२	३२	२०	२०
१२	२४	१७	१६	३०	३४	१०	१७	१७

चलित चक्र बनानेकी विधि

अब द्वादश भाव एव ग्रह स्पष्टके आधार पर चलित चक्र निम्न प्रकारसे बनेगा ।

प्रत्येक भाव अपनी पूर्ववर्ती सन्धिसे पर-वर्ती सन्धि तक माना जाता है । अतः इस बीचमें जो भी ग्रह होगा वह उस भावमें स्थापित किया जायगा । इससे कम अंशादि वाला ग्रह पिछले भावमें तथा अधिक अंशादि वाला ग्रह अगले भावमें स्थापित किया जायगा ।

चलित चक्र



ध्यातव्य :—

१— दशम सारिणी लंकोदय पर आधारित होनेके कारण सर्वत्र उपयोगी होती है ।

२— सूक्ष्म लग्न साधन विधिसे दशम या चतुर्थ स्पष्ट करते समय स्वोदयके स्थान पर लंकोदय तथा सूर्योदयात् इष्टके स्थान पर दशम या चतुर्थके इष्टका प्रयोग करना चाहिए ।

३ चलित चक्रमें द्वादश भावोंमें राशि स्थापित करते समय भाव स्पष्ट चक्रमें जिस भाव संख्याके नीचे जो राशि होती है वही राशि स्थापित की जाती है ।

४— यदि लग्नके अंश बहुत कम या बहुत अधिक हों और षष्ठांश भी १५ अंशसे कम या अधिक हो तो प्रायः राशि विराम (क्षय) हो जाता है ।

५— लग्न व चतुर्थके मध्य यदि कोई राशि विराम होता है तो चतुर्थ व सप्तमके मध्य राशि वृद्धि भी होती है ।

६— प्रत्येक भाव अपनी पूर्व वर्ती सन्धिसे प्रारम्भ होकर अगली सन्धि तक माना जाता है अतः जिस ग्रहके राशि अंश आदि पिछली सन्धिसे अधिक तथा अगली सन्धिसे कम हो, वह ग्रह उस भावमें स्थापित होता है ।

७— कतिपय लोग चलित चक्र बनाते समय प्रत्येक भावकी सन्धि भी बनाते हैं । यदि ग्रहके राशि अंश आदि किसी भावके राशि अंशसे कम हो तो वह उस भावमें स्थापित किया जाता है । यदि ग्रहके राशि अंश आदि भावके राशि अंशसे अधिक और उसकी सन्धिके अंशादिसे कम हो तो वह ग्रह सन्धिमें स्थापित किया जाता है ।

राहु-केतु का शुभाशुभ फल विचार

[लेखक :—श्री श्याम बिहारी लाल श्रीवास्तव एम.एस.सी.]

राहु और केतु अप्रत्यक्ष ग्रह हैं। ये चन्द्र तथा पृथ्वीके भ्रमण पथके कटाव बिन्दु हैं, तथा ये छाया ग्रह एवं तम-ग्रह भी कहे जाते हैं। इनका कोई स्थान या राशि निर्धारित नहीं है। ये जिस-जिस भावमें होते हैं तथा जिन-जिन भावोंके स्वामीके साथ होते हैं उनके अनुसार फल देते हैं। इनकी गति वक्र है। तथा प्रबल फलकारक होते हैं। इन्हें पाप-ग्रह तथा क्रूर ग्रह माना गया है। इनकी दृष्टि नहीं मानी गई है, किन्तु अनेक विद्वान इनकी सप्तम दृष्टि तो मानते ही हैं। कईके मतसे इनकी ९वीं तथा ५वीं दृष्टि भी मान्य है। मेरे अनुभवमें भी ७ ५ तथा ९ दृष्टि राहुकी मालूम होती है। इनके स्वराशि तथा उच्च-राशिके बारेमें काफी मतभेद है। अधिकतर वृषभ राहुकी उच्च राशि तथा वृश्चिक केतुकी उच्च राशि मानी गई है, किन्तु अनेक विद्वान् मिथुन राहुकी उच्च तथा धनुः केतुकी उच्च मानते हैं। पराशरने वृषभका राहु उच्च तथा वृश्चिकका केतु उच्च माना है। मेरे अनुभवमें भी यही ठीक प्रतीत होता है। उच्च राशिसे सप्तम इनकी नीच राशियां हैं। कन्या राहुकी स्वराशि तथा मीन केतुकी स्वराशि मानते हैं। कुम्भका राहु मूल त्रिकोण एवं सिंहका केतु मूल त्रिकोण माना गया है. किन्तु अनेक विद्वान् मेषमें भी राहुको अच्छा मानते हैं, तथा तुलामें केतुको। राहु दक्षिण पश्चिम कोणका स्वामी माना गया है। राहुकी विंशोत्तरी दशा १८ वर्षोंकी होती है तथा केतुकी ७ वर्षकी। आमतौरसे राहुको पाप फलद ही माना गया है। जातक तत्वमें राहु केतुके बारेमें जो भी योग मुझे मिले हैं उनका संकलन निम्न पंक्तियोंमें पाठकोंके लाभार्थ कर रहा हूँ।

(१) **त्र्यायारिगो राहुः शुभमात्रदृष्टयुतः सर्वारिष्टहरः।**

अर्थात् तीसरे, ग्यारहवें, छठे स्थानमें यदि राहु गया हो तथा शुभ ग्रहोंसे युक्त एवं दृष्ट हो तो सभी अरिष्टोंका नाश करता है।

(२) **सुते गोजकर्के राहु केतु सन्तानोत्पत्तौ न विलम्बः।**

अर्थात् पंचम भावमें मेष, वृषभ तथा कर्क राशिमें राहु अथवा केतु गया हो तो संतानकी प्राप्तिमें विलंब नहीं होता, यानि शीघ्र संतान प्राप्ति होती है।

(३) **मदे राहु केतु उदररोग :**

सातवें भावमें राहु या केतु गया हो तो उदर यानि पेटमें रोग होगा।

(४) **रंध्रे चन्द्र राहु अपस्मारी।**

आठवें भावमें चंद्र राहुका योग हो तो मृगी रोग वाला होवे।

(५) राहु और शुक्रका योग दशवें भाव में हो तो सर्पदंशसे मृत्यु होगी।

८— चलित होने वाले समस्त ग्रह या तो पीछे खिसकते हैं या आगेकी ओर। ऐसा नहीं होता कि एक ग्रह तो पंचम भावसे चतुर्थ भावमें चला गया। तथा दूसरा सप्तम भावसे अष्टम भावमें।

(६) शनि रवि और राहु सातवें भावमें हो तो सर्पदंशसे मृत्यु होवे।

(७, राहु और सूर्यका योग एक राशिमें हो तो तीर्थमें व पर्वत पर मरण होवे।

(८) चतुर्थेश राहुसे युक्त होकर छठे भाव में गया हो तो चौरसे मरण होगा।

(९) अष्टमेश और लग्नेश ये दोनों राहु या केतुसे युक्त होकर छठे भावमें गये हों तो चौरके शस्त्राघातसे मरण होवे।

(१०) राहु और केतुसे युक्त होकर षष्ठेश लग्नमें अथवा आठवें भावमें गया हो तो मुख पर व्रण होगा।

(११) शनि राहु तथा केतु इन तीनों ग्रहोंमेंसे कोई भी एक ग्रह लग्नेशसे युक्त होकर ६–८–१२ भावमें गया हो तो चौर अथवा अन्त्यज जातिके मनुष्यके कारणसे रोग होगा।

(१२) धनेश और बुध राहु किंवा केतुसे युक्त होकर छठे भावमें गये हों और जिस राशिमें राहु स्थित हो उस राशिके स्वामीसे युक्त हो तो तालुमें रोग होगा।

(१३) शनि मंगल और राहु ये तीनों ग्रह एक राशिमें गये हों तो मस्तकमें रोग होगा।

(१४) राहु और शनिका योग लग्नमें हो तो पिशाच पीड़ा होवे।

(१५) अष्टमेश राहु किंवा केतुसे युक्त हो तो चातुर्थिक ज्वरका रोग हो।

(१६) लग्नमें राहु बुध और सातवें भावमें शनि मंगल गये हों तो अतिसार रोग होवे।

(१७) धन भावमें शनि किंवा राहु गया हो तो संग्रहणी रोग होवे।

(१८) लग्नेश या चंद्र मंगल राहु या केतुसे युक्त हो तो शरीरके कोई भी एक भागमें कुष्ठके दाग होंगे।

(१९) बुध चंद्र और लग्नेश ये तीनों राहु या केतुसे युक्त हों तो कुष्ठ रोगी होवे। कुष्ठ रोग १८ प्रकारसे होता है। उनमेंसे किसी प्रकारका होना संभव है।

(२०) षष्ठेश राहुसे या केतुसे युक्त हो तो सर्पसे पीड़ा अथवा चौर भय या अग्नि भय होगा।

(२१) दशम भावमें राहु और गुलिक गये हों तो क्रूर आज्ञा देने वाला होवे।

(२२) राहु, मंगल और चंद्र ये तीनों पंचम भावमें गये हों तो राजा होवे।

(२३) दशम् भावमें सूर्य अथवा राहु गया हो तो गंगा स्नान होगा।

उपरोक्त योगोंके देखनेसे ज्ञात होता है कि राहु केतु छठे आठवें और बारहवें प्रायः नेष्ट फलदायक होते हैं, तथा इनका संबंध क्रूर ग्रहोंसे अथवा षष्ठेश, अष्टमेश, एवं द्वादशेशसे होनेसे शुभप्रद नहीं होता। किन्तु मेष, वृषभ तथा कर्कका राहु केतु उत्तम फलदायक है, तथा त्रिकोण एव दशम भावमें इनकी उपस्थिति अच्छी है।

अब मैं निम्नलिखित पंक्तियोंमें राहु केतु के बारेमें पाराशर मतानुसार लघुपाराशरीके सिद्धान्तोंकी ओर पाठकोंका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा।

(१) यद्यद्भावगतौ वाऽपि यद्यद्भावेश संयुतौ।
तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ।

अर्थात् राहु और केतु जिस-जिस भावमें और जिस-जिस भावेशके साथ रहते हैं उसीके अनुसार शुभ या अशुभ फल प्रबलतासे देते है। कृष्णमूर्तिने तो राहु और केतुको अन्य ग्रहोंके भी प्रबल माना है। Nodes are stronger than planets यानि राहु केतु अन्य ग्रहोंसे अधिक शक्तिशाली हैं।

(२) यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमौग्रहौ।
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद्योगकारकौ ॥

अर्थात् यदि तमोग्रह केन्द्रमें हों और त्रिकोणेशसे सम्बन्ध हो अथवा त्रिकोणमें हो और केन्द्रेशसे सम्बन्ध हो तो शुभयोगकारक होते हैं।

(३) तमोग्रहौ शुभारूढावसम्बन्धेन केनचित्।
अन्तर्दशानुसारेण भवेतां योगकारकौ ॥

अर्थात् त्रिकोण (नवम पंचम) में स्थित राहु केतुके योग कारक किसी ग्रहसे सम्बन्ध न होने पर भी योगकारककी दशामें अपनी अन्तर्दशा आने पर दोनों योगकारक (योगफल-प्रद) होते हैं। यानि राहु अपनी अन्तर्दशामें योग-फलकारक होगा।

(४) चन्द्र-भानू बिना सर्वे मारका मारकाधिपाः
षष्ठाष्टमव्यये शास्तु राहु केतु तथैव च ॥

अर्थात् सूर्य और चन्द्रमाको छोड़कर मारक स्थानके स्वामी होनेसे सब ग्रह मारक होते हैं। तथा छठे, आठवें एवं बारहवें स्थानों के स्वामी और राहु केतु भी मारक स्थानोंमें पड़नेसे मारक होते हैं।

(५) मृतौ स्थिता. सैंहिक केतु मन्द-
महीसुता मारक संयुताश्चेत्।
रोगो नराणामथ तद्दशासु भवेत्तदा
श्वासविसूचिकाभिः ॥

यदि राहु, केतु, शनि, मंगल अष्टम भाव में मारकेशसे युक्त हों तो उसकी दशा अंतर्दशा में श्वास और हैजा, प्लेग आदि रोग होता है।

मेरे अनुभवके अनुसार ३, ६, १० तथा ११वें स्थानमें राहु प्रायः शुभ फलप्रद ही रहता है। केतु केवल ३, ६, १०वें स्थानमें शुभफलदायक है। मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क व कन्याका राहु प्रायः अच्छा होता है। केन्द्रमें त्रिकोणशसे सम्बन्ध होने पर तथा त्रिकोणमें केन्द्रेशसे सम्बन्ध होने पर योगकारक होता है। योगकारक ग्रहकी दृष्टि भी राहु पर पड़ने से अच्छा फल देती है। अष्टम, षष्ठ तथा व्यय में बैठा राहु उक्त भावेशोंसे दृष्टयुत होनेसे अशुभ फल कारक होता है।

कुछ खट्टे-मिट्ठे अनुभव

[लेखक :– श्री गिरिधर चोटिया, साहित्याचार्य-साहित्यारत्न-प्रभाकर]

मेरे पड़ोसमें एक वकील साहब रहते हैं। बड़े व्यस्त आदमी हैं। दिन-रात कानूनकी पोथियोंमें सर खपाते रहते हैं, न खानेकी सुध है न पीनेकी। एक रात उन्होंने मुझे याद किया। मैं वहां गया। वड़े परेशान नजर आ रहे थे। मुझे देखते ही खड़े हो गये और बोले—

"आप तो हमें सम्भालते ही नहीं। हममें क्या क्या बीत रही है?"

"क्यों खैरियत तो है?"

"अजी, मत पूछो, इन नौकरोंने नाकमें दम कर रक्खा है।"

"क्यों? क्या हुआ?" मैंने अपनी जिज्ञासा प्रकट करते हुए कहा।

"कल मैंने अपनी अंगूठीको गायब पाया। आप यह तो जानते ही हैं कि मेरे इस खास कमरेमें नौकरोंके सिवाय कोई भी आता जाता नहीं। अब आप शीघ्र ही बतलाइये कि मेरी अंगूठी किस नालायकने ली है? मैं उसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।"

"अंगूठी कितनेकी थी?"

"कोई पांच हजारके आसपास की थी।"

"अपने घर वालोंसे पूछ चुके?" मैंने बहस जारी रखते हुए पूछा।"

"जी, वह औपचारिकता पूरी हो गई।"

"इन सेवकोंसे?

"अजी! ये नहीं बतायेंगे। पुलिसका डंडा पड़ेगा तब मुंह खोलेंगे।"

"नहीं, नहीं, ऐसी कोई खास बात नहीं।

"आप ही कुछ मदद करें तो कुछ हो सकता है। ये भी तथा मैं भी बदनामी और परेशानीसे बच सकते हैं।"

"आप निश्चिन्त रहिये, मैं आपकी अवश्य ही मदद करूंगा।"

"मैं आपका अहसान कभी नहीं भूलूंगा।'

'हां, बात ठीक है, मगर ·········?"

"मगर क्या? स्पष्ट कहिये" वकील साहबने झुंझलाते हुए पूछा।

"बात यह है कि जैसे आप बिना फीस कुछ भी करने को प्रवृत्त नहीं होते, वैसे ही मैंने भी नियम बना लिया है कि ......"

"आप भी फीस चाहते हैं? फिर मुझसे?" वकील साहवने चकित होकर कहा। "हां, हां, आपसे ·· ·····। विगत वर्ष मेरे रिस्तेदारसे आपने पूरी फीस वसूल की। फिर मैं आपसे क्यों न मांगूं?"

वकील साहब निरुत्तर थे। उनकी दृष्टिमें एक ज्योतिषी भी फीस की मांग कर सकता है, असंभव बात थी। क्योंकि उनकी दृष्टिमें ज्योतिषी तो केवल हवा पान कर जी सकता है। उसे पैसे देना व्यर्थ है। वे पांच हजार की अंगूठीका गुम होना सहन कर सकते थे पर ज्योतिषीका साधारण मेहनताना बर्दास्त नहीं कर सकते थे।

एक रुग्णाको लेकर मेरा डाक्टर साहबसे विवाद हो गया। बात यह थी कि मैं एक

सरकारी अफसरके यहां जन्मपत्र देखनेमें व्यस्त था। उसी समय डाक्टर साहब वहां आ गये।

"क्या हो रहा है ? डाक्टरने पूछा।

"रुग्णाका फल देख रहा हूँ।" मैंने कहा।

"जरा हम भी फल सुनना चाहते हैं।"

"अवश्य सुनिये।"

"पर होती सब गप्पें ही हैं।"

"किसी चीजकी परीक्षा किये बिना ही निर्णय कैसे दे दिया ?"

"लोगोंसे सुनी बातोंके आधार पर।"

"क्षमा करें डाक्टर साहब ! सुनी सुनाई बातों पर पूर्ण विश्वास कर लेना गलत है। आपने कभी परीक्षा करके भी देखा ?"

"कोई ऐसा मिला ही नहीं जो हमें परीक्षा के लिये चुनौती दे सके।"

"आप परीक्षा ले भी नहीं सकते। मैं आपकी डक्टरी परीक्षा कैसे ले सकता हूं ? रोगी ही आपकी परीक्षा है। वही मेरी परीक्षा का माध्यम भी है। प्रस्तुत रोगी की आप परीक्षा व चिकित्सा करिये। मैं भी अपने प्राचीन विज्ञानसे उसका फल देखता हूं। परिणाम बता देगा कि मेरा विज्ञान अधूरा है या आपका।

"मुझे चुनौती मञ्जूर है।"

"तो मेरी निश्चित घोषणा सुन लीजिये। इस रोगिणीको मारकेश दशा लग चुकी है। दिनांक २५-६-७१ को बृहस्पतिका अन्तर आ रहा है। आते ही रुग्णाका प्राणान्त हो जायेगा। आप बचा लीजिये।"

"पंडितजी ...... ! आप बाजी हार जायेंगे। अतः पुनर्विचार कीजिये क्योंकि रुग्णाकी दशा दिन प्रतिदिन सुधारकी ओर है। उक्त समयमें एक मासका काल है। तब तक तो यह अच्छी तरह चलने फिरने लग जायेगी।

"मैं देख चुका। आप अपने मरीजकी चौकसी करिये।"

वही हुआ जो होना था। दीपक बुझता है तो एक बार तेज होता है। इस रहस्यको डाक्टर नहीं जानते थे। उनको अब ज्ञान हुआ कि उनके विज्ञानसे पृथक् एक अन्य विज्ञान भी आयु निर्णयमें समर्थ है। अब तो पूर्ण भौतिकवादी डाक्टर साहबने परिवारके सभी सदस्योंकी जन्मपत्रियां बनवा लीं। समय समय पर परामर्श लेते रहते हैं।

सन् ६८ का वर्ष था। शनि महाराजकी कृपासे मैं आर्थिक संकटसे गुजर रहा था। राहुका अन्तर मेरे लिये वरदान सिद्ध होगा। ऐसी मुझे आशा थी। मैंने सट्टा शुरु किया। प्रारम्भमें एक दो बार मेरा उत्साह वर्धनार्थ मुझे सामान्य लाभ भी हुआ। मैंने एक ही चान्स में अपना कल्याण करना चाहा। १० वर्षकी सञ्चित पूञ्जी गंवा बैठा। तबसे सट्टेकी शपथ सी ग्रहण कर ली हैं। यदि कभी इच्छा होती है तो किसीके भाग्यमें अपना भाग्य मिलाकर काम करता हूं। अर्थात् दूसरोंके माध्यमसे। उससे मुझे सामान्य लाभ मिलता रहता है।

एक अध्यापक महानुभाव मेरे घर आये। आते ही कहने लगे कि –"मैं आपसे फलादेश ज्ञानहेतु नहीं आया, अपितु ज्योतिष शिक्षा हेतु आया हूँ।"

"मेरे पासका ज्ञान व्यावहारिक नहीं है। अतः अन्य गुरु तलाश करो।"

"मैं व्यावहारिकका तात्पर्य नहीं समझा।"

"इसका तात्पर्य व्यावसायिक है। अर्थात् इस विद्यासे व्यवसाय नहीं कर सकोगे।"

"क्यों नहीं ?"

"इसलिये नहीं कि मेरा विशेष ज्ञान मारक स्थान २, ८, १२, तथा उपमारक ३,६,७ स्थानोंकी ओर है। मैं उक्त भावोंकी विशेष पद्धति तथा काल चक्र दशा द्वारा आयु-रोग ज्ञानहेतु सव्य-अपसव्य क्रमसे मिलान करता रहता हूं।

"मैं भी यही ज्ञान प्राप्त कर लूंगा" उसने कहा।

"अब केवल एक ही हेतु अवशिष्ट है। संस्कृतके ज्ञान बिना ज्योतिष गाड़ी नहीं चल सकती। प्रथम इसका ज्ञान प्राप्त करो, पश्चात् ज्योतिषकी इच्छा करो। आजकल जो पल्लवाण पांडित्य दिखाई देता है वह केवल हिन्दी या अंग्रेजीमें अनूदित पुस्तकोंके माध्यमसे है। अनुवाद कभी भी मूल पुस्तकोंका भाव स्पष्ट नहीं कर सकता। राजस्थानी भाषामें एक कहावत प्रचलित है—

"भूखो पूछै ज्योतिषी, धायो पूछै बैद।"

अर्थात् भूखो (दिवालिया) ज्योतिषीको पूछता है। और 'धायो (धनिक) वैद्यको पूछता है। बात भी ठीक ही है। बुरे दिनोंमें ही पुनः पुनः ज्योतिषीकी याद आती है। ज्योतिषी असहायका सहारा, अशरणका शरण है। यदि उसी दिवालियाके पास पैसे हो जाय तो वह रोग निवारणार्थ वैद्यको ही पूछेगा न कि ज्योतिषीको।

मेरे पास ऐसे अनेक उदाहरण हैं। जो कभी मेरे यहां चक्कर लगाया करते थे। अब उनके पास पैसे हो गये तो वे मुझे मानना तो दूर पहिचानते भी नहीं। ठीक ही कहा है—

काम पड़ै कछु और है,
काम सरै कछु और।

अभी उस दिन मैं पञ्जाब नैशनल बैंक के मैनेजरसे मिलने गया तो वहां पूर्व उपस्थित सज्जनसे मेरा परिचय कराया गया। मैनेजर साहब बोले—"आप हमारे नगरके ज्योतिषी हैं। आप इन्हें जानते हैं या नहीं ?" "हां, हां, मेरी भी जान पहिचान है।" "उक्त सज्जनने रुखाई प्रदर्शित करते हुए कहा।" आपकी जान पहिचान कबसे है ?" मैनेजरने जिज्ञासावश पूछा। सज्जन चुप थे। उनके चेहरेका रंग उत्तर गया जैसे चोर रंगे हाथों पकड़ा गया हो, परन्तु मुझे अच्छी तरह याद है कि जब वे दिवालिया थे तब उनके बुरे दिन दूर करने में मुझे कितनी आध्यात्मिक शक्ति लगानी पड़ी थी। खेद तो इस बातका है कि आज जब "कारें और बहारें" के मालिक हो गये तो परिचय कराना पड़ता है।

एक ग्रामके ठाकुर साहब अचानक ही चल बसे। अत्यधिक नशेमें उनका हार्टफैल हो गया। भूमिस्थ खजानेके विषयमें किसीको कुछ न बता सके। उनका हिसाब-किताब बहुत से आदमियोंमें था। लाखोंका लेन-देन। उत्तराधिकारी धनवान् होते हुए भी गरीब हो गये। हाथ कुछ न आया। उल्टा मांगने वाले वहां चक्कर लगाने लगे। ऐसी दयनीय दशामें ज्योतिषी ही एकमात्र सहारा होता है। उन्होंने ज्योतिषी और अनेक तांत्रिक बुलाये पर इष्ट सिद्धि नहीं हुई। अनेकोंसे ठगा चुके थे।

ज्योतिष नामसे ही चिढ़ते थे । पर निरुपाय भी थे। उन्होंने अपनी वेदना अपने मित्रके सामने व्यक्त की। वह मित्र हमारा प्रेमी था। वह उन्हें अत्यन्त विश्वास दिलाकर मेरे पास लेकर आया। आते ही ठाकुर साहब बोले—

"मेरा काम आप अवश्य करिये । पर खर्च कुछ भी नहीं करूंगा ।"

"खर्च वर्चकी आप चिन्ता न करें। आपकी समस्या क्या है ?" मैंने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा । जैसे कोई वैद्य कटु औषधसे घबराने वाले रोगीसे कहता है।

"बात यह है कि मेरा कार्य पूर्ण होने पर मैं आपकी सेवा अवश्य करूंगा।' 'क्या सेवा करोगे ?' मैंने जिज्ञासावश पूछा।

"प्राप्त धनके दश प्रतिशत पर आपका स्वत्व होगा। यदि यह शर्त आपको मन्जूर हो तो काम करिये।'

"जैसी आपकी मर्जी । मैं तो केवल शास्त्रों परसे श्रद्धा हट न जाये इसीलिये यह कार्य करता हूं। पैशेवर नहीं हूं । पंडितराज जगन्नाथकी तरह "दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा" के अनुसार रोटी और रोजी दिल्लीश्वर या जगदीश्वर (राजकीय सेवामें रहनेके कारण) देते हैं। अतः आप चिन्ता न करें।

मैंने उन्हें शनिवारको रातके दश बजे आनेके लिये कह विदा किया। उक्त दिन वे निर्दिष्ट समय पर आये। मैंने भी 'प्लान-चिट" द्वारा मृत आत्माका आवाहन किया । मृत आत्माने सारे रहस्य चार्ट और संकेतों द्वारा प्रकट कर दिये । ठाकुर साहबने भी अपना वायदा पूरा किया।

एक महानुभाव मद्रास रहते हैं। वहीं व्यापार भी करते हैं। आज-कल कुछ सरकारी चक्करमें आ गये हैं। इन्कमटैक्सकी कुछ चोरी पकड़ी गई। एक दिन एक जीर्ण शीर्ण कागज को मेरे सामने रखकर बोले—मेरी दिनदशा देखिये। मैंने उक्त कागजको ध्यानसे देखकर कहा—'यह तो टेवा (लघु जन्मपत्र) है। अति-स्थूल रूपसे, सूक्ष्म फल ज्ञात नहीं हो सकता।'

"तो आप बृहत् जन्मपत्र बना दें, मेरी कोठीसे दो रुपये मंगवालें।" सेठने मुझ पर दया दिखाते हुए कहा।

"दो रुपये ..... आजकल बृहत् जन्म-पत्रिकाके १५० या २०० से कम नहीं लगते।

हैं यह कैसे हो सकता है ? हमारे पंडितजी (पुरोहित) तो एक रुपयेमें जातकका नामकरण संस्कार तथा टेवा भी बना देते हैं।"

"उन्हींसे क्यों नहीं बनवा लेते हैं ?' एक रुपया भी अधिक क्यों खर्च कर रहे हो ?"

"मैंने तो देखा कि आप प्रेमी आदमी हैं।' मैं आपको लाभ पहुंचा दूं।"

"मैं ऐसा लाभ पसन्द नहीं करता। पूरा मेहनताना दो, पूरा लाभ लो । तभी फलादेश मिलेगा।"

उक्त महानुभाव उस दिन तो रुष्ट होकर चले गये। पर दूसरे ही दिन फ़िर उपस्थित हुए। उनके पास टेवाका नवीन संस्करण था।

"पत्रिका तो पुरोहितजीने बना दी, फल आप बता दीजिये।"

मैंने पत्रिका देखी तो चक्कर आने लगा। पत्रिकामें दो चार चक्र खींच कर बिना किसी गणित किये, कहींका रेडीमेड माल रखा था।

'जैसा दाम वैसा काम।' मैंने पत्रिका बन्द कर दी। उनने कहा—यह उन्हें ही दिखाओ मेरी समझ में कम आ रहा है। फिर दूहरी दक्षिणा खर्च करते ही क्यों हो?

मैं रतनगढ़ (राजस्थान) जा रहा था। एक रेल कर्मचारी मेरे पास आकर बैठ गये। मेरे पूर्व परिचित भी थे। रेलयात्रा में दो साथी अच्छे रहते हैं।

"मेरे दिन कब फिरेंगे ?" कर्मचारी महानुभावने परिचयका लाभ उठाते हुए पूछा।

"जन्म-पत्र है ?" मैंने कहा।

"नहीं, हमने तो बनवाया ही नहीं।"

अब समस्या यह हो गई कि फल कैसे बताया जाय ? प्रश्न कुण्डलीसे भी प्रश्न नहीं बताया जा सकता था क्योंकि पंचांग न था। न रमलके पासे पास थे। वैसे ही यात्राकाल संकटकाल होता है। अब क्या करें? सभी साधनोंका अभाव ? ज्योतिषीको बिना उपकरणके भी साधनोंका ज्ञान होना आवश्यक है? अतः स्वर साधन द्वारा ही फल बतानेका विचार किया। पर श्वास वाला यंत्र भी प्रतिश्याय (जुखाम) के कारण फैल हो गया। अब "पञ्चस्वराः" (अ, इ, उ, ए, ओ) के सिद्धान्तोंके अनुमान पञ्चदशाओंका (बाल-कुमार-युवा, वृद्ध, मृत्यु) विचार किया। वार्षिक महादशामें अन्तर्दशा (मासिक) का विचार कर फल बतला दिया। युवा स्वर दशाका अन्तर आते ही स्थिति ठीक हो जायेगी। तब तक "मंगल भवन, अमंगलहारी ··· का पाठ करो, कल्याण होगा।

त्रैमासिक राशिफल विमर्श

[लेखक :- श्री पं० कैलाशनाथ उपाध्याय ज्योतिषी]

वैशाख मासका राशिफल

(ता० १८ अप्रैल से १७ मई ७३ तक)

मेष अचानक द्रव्य हानि, मानसिक चंचलता तथा झगड़े-झंझटके योग हैं। खान-पानमें व्यतिक्रम होगा। सन्तानके कारण कुछ कष्ट और अपनी भूलके कारण कुछ अप्रतिष्ठा होगी, किन्तु अप्रैलके अन्तिम सप्ताहमें एकादश मंगल आने पर सब कार्य सुचारु रूपसे चलने लगेगा। व्यापारमें साधारणतः प्रगति और मासान्तमें किसी शुभ समाचारकी प्राप्ति।

वृष-यह मास मध्यम फलदायक है। प्रारंभमें आमदनी अच्छी होगी, किन्तु खर्चकी अधिकता रहेगी। शरीर कुछ कष्टयुक्त रहेगा। उत्तम पारिवारिक सुख मिलेगा। बोलचालकी चतुरतासे बिगड़ा कार्य बनेगा। सोने-चांदीके व्यापारी कुछ विशेष लाभ उठावेंगे। महिलाएं शारिरिक रोगोंसे परेशान होंगी। बारहवां सूर्य-शुक्र तथा ग्यारहवां नीचस्थ बुध हानि-कारक है।

मिथुन—मानसिक उद्विग्नता रहते हुए भी यथेष्ट यश, द्रव्यकी प्राप्ति होगी। यात्राके योग बनेंगे। शत्रुओंके गुप्त षड्यंत्र पर आप बुद्धि कौशल दिखायेंगे। सरकारी या अदालती कामोंमें बाधा नहीं होगी। दाम्पत्य सुख कलुषित रहेगा। शत्रु नियन्त्रित होंगे। इस

मासकी ता० २०,२२,२३,२७ कुछ चिन्तनीय।

कर्क—कठिन पुरुषार्थ व परिश्रमसे इस महीनेमें यथेष्ट धन लाभ हो सकता है। नौकरी वालोंको उन्नतिका अवसर मिलेगा। अमावस्याके बाद छोटी-मोटी यात्राओंका संयोग बैठेगा। ता० २४ अप्रैलसे अष्टम मंगल शरीर को कुछ कष्टयुक्त रक्खेंगे। अनेक कठिनाइयोंके होते हुए भी मंगल शत्रुओं पर विजय दिलायेगा "श्रीहनुमान बाहुक" का दैनिक पाठ करें।

सिंह—भाग्यस्थ सूर्य होनेसे मन अशान्त रहेगा। झूठे कलंक व बदनामीका सामना करना पड़ेगा। भोजनमें अवेर-सवेर, नित्य-कर्मोमें रुकावट, रिश्तेदारोंका आगमन होता रहेगा। राजकीय बाधाएं, पत्नी चिन्ता व सन्तान कष्ट अवश्यम्भावी है। अपने सांझीदारोंसे सावधान रहें। सिरमें दर्द, चोट, वात-व्याधि और पारिवारिक अशान्ति विशेष रूप से बन सकती है।

कन्या—शरीर बाधा शान्त होगी। शत्रुओं का दमन होगा। कुछ गलत खर्च बढ़ेगा और राजकीय कार्य बिगड़ता नजर आयेगा। व्यापारी वर्ग अपने कठिन परिश्रमसे विशेष लाभ उठा सकते हैं। मित्रोंके बीच किसी कारणवश हँसीके पात्र बनेंगे। कुटुम्बसे प्रीति, उच्चाधिकारियोंसे विवाद तथा कुत्सित-भोजन की प्राप्ति होगी। उत्तरार्धमें कुछ अंश तक आर्थिक कठिनाइयां दूर हो जायेंगी। श्री रामायणजीके मास परायणसे विशेष लाभ उठा सकते हैं।

तुला—शासकीय विवादों पर विजय, साधारण द्रव्य लाभ, खर्चकी अधिकता रहेगी। ता० १४ अप्रैलसे ही सप्तम सूर्य-शुक्र चल रहे हैं, जिससे भाग्य मंद, बुद्धि मंद, सत्कर्म सिद्धि में बाधा तथा पारिवारिक मनमुटाव बढ़ा चढ़ा रहेगा। मेहमानों पर विशेष क्रोध आयेगा। इस मास धन हानि, दुर्वचन, बदनामी और फाकाकशीके अनेक प्रसंग उपस्थित होकर टल जायेंगे, शनि-सूर्यकी आराधना जरूरी है।

वृश्चिक—स्वास्थ्य चिन्तनीय रहेगा। आप अपनी विचारधाराको नियंत्रित न रख सकेंगे और सरल भावुकतावशात् गहरी धन हानिका भी सामना करेंगे। व्यापार-नौकरीमें उतार-चढ़ाव होता रहेगा। बुद्धि साधनमें बुधदेव नीचके चल रहे हैं, अतः बौद्धिक किकास अवरुद्ध रहेगा तथा भाग्यमें कुछ कमजोरी रहेगी। महामृत्युंजय जाप तथा स्तोत्र पाठ करनेका अभ्यास डालें।

धनुः—विद्यार्थियोंको प्रायः अच्छी सफलता मिलेगी और महिलाओंको संकटके लिए तैयार रहना चाहिए। व्यापारी वर्ग नया कार्य प्रारंभ न करें, अन्यथा उसमें असफलता, हैरानी, कष्ट और व्ययाधिक्य अवश्यम्भावी है। बेकारकी कुछ घरेलू झंझटें सामने आयेंगी। ता० २७ अप्रैलसे तृतीय मंगल आने पर कुछ शान्ति और स्थितिमें सुधार हो सकता है, अतः श्री हनुमानजीकी स्तुति-अर्चन करनेकी विशेष सलाह दी जाती है।

मकर—राजकीय उलझनों पर विजयोपलब्धि होगी। दौड़ धूप तथा दिमागी कामोंकी उलझनें बढ़ सकती हैं। व्यापारमें एक बारगी हानिका योग है। घरेलू प्रपंच बढ़ेंगे। शरीरमें निर्बलता, अभीष्ट कार्य सिद्धिमें बाधा तथा

विश्वासपात्रोंसे धोखाकी संभावना है। 'देवी कवच' का ३ पाठ नित्य प्रति करनेका अभ्यास डालें, अन्यथा बुद्धिमंदता, पारिवारिक कष्ट, मित्र-विछोह इत्यादिका सामना करना पड़ेगा।

कुम्भ—इस मास बना बनाया कार्य भी बिगड़ता हुआ प्रतीत होगा । बारहवें गुरुके प्रभावसे आपकी मानसिक, शारिरिक, साम्पत्तिक तथा यश सम्बन्धी हानिका कोई लेखा नहीं कर सकता । उत्तरार्द्धमें स्थिति कुछ सुधरेगी। वांछित कार्य देरसे सफल होगा। घरमें कोई शुभ-कार्य, उत्सव होगा, किन्तु द्रव्य के लेन-देनमें परेशानी होगी। नित्यप्रति विष्णु सहस्रनामावलीका पाठ करनेसे शान्ति मिलेगी।

मीन—व्यवसायमें हानि, मुकदमेंमें परेशानी और परिवारमें संकटका सामना करना पड़ेगा । धर्म कर्म पर अनास्था बढ़ेगी। पारिवारिक कलहमें न्यूनता आकर कुछ सुख-शान्तिका मार्ग प्रदर्शित होगा । अतिथियोंका निरन्तर आवागमन होगा, अतः हाथ संभाल कर खर्च करें। खड़ी-मसूर और भुजिया चावलकी खिचड़ी बनाकर मंगलवारके दिन किसी अंगहीन भिक्षुकको खिलायें तो लाभप्रद रहेगा । ता० १९-२०-२४-२५-२९-३० को छोड़कर शेष कष्टके दिन हैं।

ज्येष्ठ मासका राशिफल

(ता० १८ मई से १५ जून १९७३ तक)

मेष—धनार्जन व परिवार सुखके लिए यह मास सुन्दर है। पाचनकी शक्ति कमजोर तथा शरीर अस्वस्थ रहेगा । रोजगार-धन्धोंमें विशेष सावधानी रखना जरूरी है। व्यापारिक रूपरेखामें कुछ परिवर्तन करना चाहें तो कर सकते हैं। सामाजिक मान-प्रतिष्ठाकी प्राप्ति तथा सुन्दर यात्राके लिये तीसरा सप्ताह श्रेष्ठ है। इस मासके अन्तिम सप्ताहमें साढ़ेसाती शनिसे छुटकारा मिल जायेगा।

वृष—मित्रोंसे सहयोग व सुन्दर भोजनादि की प्राप्ति होगी। व्यावसायिक झंझटोंके साथ स्वास्थ्य-चिन्ता बनी रहेगी । मेहमानोंके—निरन्तर आवागमनसे आप घबड़ाहट महसूस करेंगे। साधारण द्रव्य-अन्न वस्त्रादिका लाभ होगा। विद्यार्थीवर्ग कठिन परिश्रमसे सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ता० १५ मईसे ही आपकी राशि पर "सू.बु.शु.श." का चतुर्ग्रही योग मान-भंग कराने वाला चल रहा है।

मिथुन—शत्रुदमन शत्रुओं पर विजय और व्यवसाय-वृद्धिके लिए यह एक सुन्दर मास है। रोग-मुक्ति, विशेष आनन्द, मित्र-समागम, सुख यथेष्ट, धन लाभ तथा अदालती कामोंमें विजयी होनेके लक्षण मिलते हैं। पारिवारिक उलझनें कुछ शान्त होंगी । धर्मकर्म पर कुछ आस्था बढ़ेगी। भगवती दुर्गाकी दैनिक आराधनासे संकटपूर्ण स्थिति पर विजय प्राप्त होगी।

कर्क—दौड़ धूप परिश्रम विशेष करना होगा। आमदनी सन्तोषजनक होगी, परन्तु खर्चकी अधिकतासे परेशान रहेंगे । कानूनी विवादोंमें सतर्कता आवश्यक है। तीसरे सप्ताह में यात्राकी संभावना है। इस मासके अन्तिम सप्ताहमें साढ़ेसाती शनिदेव पधारेंगे, अतः कोई दुर्वचन, मानहानि, कलह तथा धनहानिका डटकर सामना करना पड़ सकता है, शनिकी आराधना आवश्यक है।

सिंह—सत्कर्मोंकी सिद्धिमें हर ओरसे

निराशा ही निराशा प्रतीत होगी । बना हुआ काम भी हठात् बिगड़ता हुआ सा दीख पड़ेगा । शरीर कुछ अस्वस्थ रहेगा । दुश्मनोंका षड्यंत्र उमड़ सकता है । इस मासके तृतीय सप्ताहमें व्यापार-नौकरीकी सामान्य प्रगति एवं लाभके योग हैं । "श्री हरिःशरणं" मंत्रका प्रतिदिन खूब जप करें तथा मंगलवारका नियमित व्रत रक्खें ।

कन्या—इस मास आप अपने गले-कंठ-सिर-पेट व पैरोंके स्थानोंको रोगग्रस्त और पीड़ित पावेंगे । दिमागी कामोंमें कुछ सफलता मिलेगी । चौथे सप्ताहमें शारीरिक पीड़ा कुछ कम हो जायेगी । अतिथियों पर विशेष खर्च करना पड़ेगा । मासारंभसे ही भाग्य-स्थानमें "सू.श.बु.गु." का चतुर्ग्रही योग अशुभ फल-दायक है अतः इनको यथोचित शान्तिका उपाय करें तो इनके द्वारा सहज भाग्योदय भी आगे चलकर संभव हो सकता है ।

तुला—इस मासकी ग्रहस्थिति विशेष खर्च की स्थिति उत्पन्न करेगी । शारिरिक सुखोंमें बाधाएं, आलस्य व निर्बलताका जोर बढ़ेगा । आपके सभी उद्यम सफल और शुक्लपक्षमें भाग्योदय कराने वाले होंगे । मान-सम्मानकी रक्षा होगी । साधारण ढंगकी छोटी २ यात्राओं में कुछ सुख लाभ उठ सकता है । ता० २०-२१-२९-३०-१-८-९-कष्टप्रद है, इनमें कोई शुभ कार्य करनेकी सलाह नहीं है ।

वृश्चिक—द्रव्य खर्च बढ़ेगा । शत्रु उत्पात बढ़ेगा और सन्तान प्राप्तिके योग हैं । नौकरी वाले अर्थहीनतासे संत्रस्त रहेंगे । भोजनमें अबेर-सबेर, रक्तोदर जन्य पीड़ा, मिथ्यावाद इत्यादि अशुभ फलकी संभावना रहेगी । सन्तान से ही मनोव्यथा, सांझीदारोंसे विवाद, अर्था-भावसे व्यावसायिक गतिरोध उत्पन्न होगा । आंखमें रोग, गले या कंठमें रोग, मानसिक चिन्तन संभव है ।

धनुः—व्यापारमें साधारण लाभ-हानिके योग हैं । भाग्यवर्धनार्थ संघर्ष करना होगा । पारिवारिक उलझनें और आवश्यकताएं बढ़ती नजर आयेंगी । दैनिक क्रिया-कृत्योंमें अवरोध उत्पन्न होगा । मासारंभसे सू.बु.श. छठे चलेंगे, अतः सन्तोष है कि किसी अनिष्टकी संभावना नहीं रहेगी । प्रगति संबंधी बाधाओंके निवार-णार्थ "श्रीगणपति अथर्व शीर्ष" का नियमित पाठ करें, यह विशेष सलाह है ।

मकर—व्यापारियोंके लिए मासफल सामान्य है । विद्यार्थियोंको बुद्धिहीनताका साम-ा करना पड़ेगा । महिलाओंकी मानसिक स्थिति असंतुलित रहेगी । शरीरमें निर्बलता, रिपु-रोग व्ययकी बाहुल्यता, राज्याधिकारिय विवा. संभव है । ता० २० मईके बाद स्थिति में सुधार होगा. महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे, मिथ्यापवाद जाता रहेगा । पराक्रमकी सिद्धि और भाग्यवृद्धिके अनेक लाभप्रद अवसर प्राप्त होंगे ।

कुम्भ—विशेष दौड़ धूपसे शरीरको कष्ट होगा । नौकरी वालोंके स्थानान्तरणका योग है । यात्रामें कष्ट होगा, अपने किसी वयोवृद्ध की ओरसे कष्ट और मनस्ताप होगा । खर्च नियंत्रित न रहेगा । सिरमें चोट लगते-लगते अनायास बचेंगे, शत्रु पैदा होकर भी विनष्ट होंगे । सत्कर्म सिद्धिमें बाधाएं आयेंगी ।

महिलाएं समाज सेवामें अपनी रुचि दिखलायेंगी। दूसरा सप्ताह कुछ कष्टकारी।

मीन—रोजगार सम्बन्धी मामलोंमें कुछ संघर्ष करना पड़ेगा। आपको पत्नी सहित रक्त-वात-व्याधिसे थोड़ा कष्ट मिलना संभव है। विश्वासपात्रोंसे धोखा, अपव्यय, मित्रवर्गों से मनमुटाव एवं घरेलू आवश्यकताएं बढ़ेगी। बन्धुवर्गोंसे सम्बन्ध बिगड़ सकता है। परीक्षा-फल उत्तम होगा। राजनैतिक व्यक्ति उलझनों का सामना करेंगे। पति-पत्नीमें खटपट हो सकती है, किन्तु किसी विशेष सहयोगीसे समय-समय पर सहयोग मिलता रहेगा।

आषाढ़ मासका राशिफल

(१६ जूनसे १५ जुलाई १९७३ तक)

मेष—सन्तान सुख प्राप्त हो। लेखन, भाषणके अवसर मिलेंगे। आपका स्वास्थ्य आशासे अधिक सुधर जायेगा। व्यक्तित्वको पुनः एक बार चमकनेका अवसर मिलेगा। धर्म-कार्य, दान-पुण्य व तीर्थाटन होगा। नाम-यशकी वृद्धि और परोपकारकी भावना जाग्रत होगी। तीसरे सप्ताहमें मामूली कष्ट बढ़ेगा। इस मास प्रसव या प्रसूती ज्वरसे पत्नीको पीड़ा होगी।

वृष—प्रारम्भ किये हुए कार्योंकी सिद्धिमें सन्देह है। मानहानि सम्भव है। आलस्य एवं शारिरिक निर्बलता बढ़ेगी। सहयोगी वर्ग मुंह पीछे निन्दा करेंगे। व्यापारमें एकन एक कुछ अड़चन पड़नेकी संभावना है। सुदूर यात्राका प्रसंग यदि उपस्थित हो तो टाल दें, अन्यथा दुर्घटना भय रहेगा। ता० २१,२२,२६,२७, २९,३० कष्टप्रद है।

मिथुन—इस मास सहकर्मियोंका सुन्दर सहयोग न मिल सकेगा और न तो क्रय विक्रयके व्यापारमें विशेष लाभ होगा। दिमागी कमजोरी से सोचने-समझने एवं कार्य क्रियान्वित करनेकी शक्तिमें अवरोध उत्पन्न होगा। माता-पिता-पत्नी-सन्तान एवं अन्य पारिवारिक सदस्योंका साधारण सुख मिलेगा। सरकारी काम-काजमें सुविधाएं उत्पन्न होंगी। खर्च पर नियंत्रण रखना जरूरी है। तीसरा-चौथा सप्ताह शरीर के लिए कष्टप्रद है।

कर्क—पराक्रम बढ़ेगा। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। विद्यामें प्रगति होगी, पर मन्द गतिसे। मान-मर्यादा बनी रहेगी। महिलाओंको रक्तोदर विकारसे कष्ट होगा एवं विचारोंमें अस्थिरता रहेगी। घरेलू सुख-शान्ति खटाईमें पड़ेगी। सरकारी मामलोंमें परेशानी होगी। शुक्लपक्षमें बिगड़े कार्य सफल होंगे। स्त्री-सन्तानका साधाराण सुख मिलेगा। राजकीय सम्बन्ध उत्तम रूपमें सफल होगा। ता० १६-१७-१९-२६-२७-३० खराब है।

सिंह—विद्या-बुद्धि दोनोंका अभूतपूर्व विकास होगा। आपका शरीर अनवरत कार्य-रत रहेगा। रिश्तेदारोंका आगमन और उन पर खर्च करेंगे। व्यापारियोंकी मानसिक स्थिति अर्थाभावसे खिन्न रहेगी। काम-धन्धेमें शारीरिक श्रमकी बाहुल्यता रहेगी। दैनिक कार्यक्रम सुरुचिकर ढंगसे सम्पन्न नहीं हो ससेगा। प्रथम सप्ताह छोड़कर आगे प्रगति संभव है!

कन्या—इस मास नये रोजगार, नौकरी या लघु-उद्योग प्रारम्भ हो सकते हैं। शरीरमें स्फूर्तिपन एवं चंचलताकी वृद्धि होगी। महिला

वर्ग पारिवारिक उलझनोंसे संत्रस्त रहेंगी। शैक्षणिक एवं विधि-व्यवसायी क्षेत्रमें विशेष लाभकारी योग है । नये-नये लोगोंसे प्रेम-संपर्क बढ़ेगा। ऋण-भारसे सर्वथा मुक्ति मिलना असभव है। गुरुकी आराधना करना ठीक है ।

तुला—आपके उत्कर्षको देखकर मित्रवर्ग ईर्ष्या करेंगे । विद्यार्थीवर्ग तथा महिलाओंका चित्त स्थिर नहीं रहेगा । निकटवर्ती यात्राओं में शरीरको विशेष कष्ट होगा । पारिवारिक द्वेष-भावके बीच मन ही मन आप विशेष क्रोधित होंगे, किन्तु एकबारगी क्रोधमें बौखला-हट नहीं रहेगी। सूर्य-शनिकी शान्ति कराना जरूरी है। चौथा सप्ताह विशेष कष्टप्रद है।

वृश्चिक—व्यापारीवर्ग इस मासमें क्रय-विक्रयसे प्रचुर लाभ उठा सकते हैं। स्वास्थ्य सानुकूल न रह सकेगा। सगे-सम्बन्धियोंसे श्रेष्ठ समाचारोंकी प्राप्ति होगी । मित्र-परिवार व स्त्री-सन्तानसे सुख-आनन्द मिलेगा । पारि-वारिक वैमनस्यकी तेजी जाती रहेगी। मनमें शुभ विचारोंका उदय होगा । तीसरा-चौथा सप्ताह व्यावसायिक दृष्टिसे अत्युत्तम है।

धनुः—इस मास खर्च कुछ बढ़ेगा और संचित द्रव्य भी हाथसे चला जायेगा। दुश्मनों का जोर बढ़ेगा । अर्थ-व्यवस्था असन्तुलित रहेगी। धन लाभका सुअवसर आकार भी हाथ से निकल जायेगा । नवीन वस्त्र प्राप्ति तथा उत्तम स्वास्थ्यका अवसर मिलेगा । इच्छित मनोरंजन, मित्र मिलन, स्वास्थ्यमें सुधार तथा धार्मिक अभ्युदयके लक्षण हैं । आदित्य हृदय स्तोत्रका दैनिक पाठ करनेकी विशेष सलाह है।

मकर—सांझेदारोंसे संबंध अत्यन्त सुन्दर और सफल होगा। श्रेष्ठ समाचारकी प्राप्ति होगी। परिवार संबंधी झगड़े-झंझट समाप्त हो जायेंगे। खेती-गृहस्थी वाले कुछ चिन्तातुर रहेंगे। दुश्मन पराभूत होंगे। धार्मिक कामोंमें कुछ अवरोध उत्पन्न होगा। श्रेष्ठजनोंको मासो-त्तरार्धमें कुछ विशेष अर्थलाभका योग है।

कुम्भ—शत्रुओंक संख्या बढ़ सकती है, किन्तु अन्तमें मैत्री और अनुकूल परिस्थिति बनकर शान्ति पूर्ण ढंगसे सुलह हो सकती है। व्यावसायिक प्रगतिमें कुछ सुधार होगा। महि-लाओंको अपनी उन्नतिका अवसर मिलेगा। घरेलू विषादसे मन अशान्त रहेगा । दूसरा सप्ताह कुछ मानसिक चिन्ताओंका कारण बनेगा।

मीन—दाम्पत्य सुखमें कटुता बनी रहेगी। शत्रु पैदा होंगे और उनका शमन होगा। व्यापार साधारण ढंगसे चलता रहेगा। विद्या-र्थियों और महिलाओंका बौद्धिक विकास होगा। पारिवारिक कलहकी वृद्धि हो सकती है । शरीर स्वस्थ नहीं रह पायेगा। मनमें अशान्ति, द्रव्याभावसे परेशानी होगी और खर्च बढ़ेगा।

श्री शंकर-व्यापार भविष्य

[लेखक :—श्री शिवचरणलाल शर्मा रमलाचार्य ज्योतिर्विद्]

ता० १८ अप्रैलसे १५ जुलाई सन १९७३ ई० तक

त्रैमासिक भविष्य-व्यापार हाजिर एवं वायदा

चांदी सोना रुई कपास रेशमी धागा डी. सी. एम. आदि पाट जूट वारदाना मिल शेअर्स गुड़, खांड, चीनी, अलसी अरण्डा तिल्ली तेल मूंगफली बिनौला सरसों करड़ी, तेल गोला एवं साबूनी तेल वायदा सांगली हल्दा हाजिर हल्दी लालमिर्च कालीमिर्च सांभर नमक जीरा मैथी धनिया पोस्ता अजमाइन सौंफ़ सौंठ आदि आदि प्रत्येक धान्यादि दालवाना खुश्क मेवा कच्ची सब्जी देशी घृत एवं बम्बई वरली मटका नम्बर सहित चांस ग्रह योगायोग समीक्षा सहित मन्दी तेजी।

ग्रह योगादि समीक्षा—ता० १८ अप्रैलको बुध प्लूटोका प्रतियोग बना है जोकि गुड़ खांड चीनीमें तेजीका सूचक है। ता० ४ मईको शुक्रका उदय हुआ, आज ही शुक्रवारा चन्द्र-दर्शन है और रात्रिको बुधास्त भी हो गया है। यहांसे रुई कपास चांदी पुराना सिक्का एवं धातु पदार्थ स्वर्णमें इकतरफा लाइनका संचार होगा, यहांसे रुईमें १००)१२५) रु० गुड़में ८)१२) रु० चीनी सल्फरमें १०)१५) रु० चांदी पुराना सिक्कामें २०)३०) रु० स्वर्णमें १२)१४) रु० की इकतरफा लाइन चलेगी। निर्धन व्यापारी गली नजराना लगा कर माल कमा लेंगे। ता० ४ मई तक उपरोक्त वस्तु पर मंदी आई है तो यहांसे भविष्यमें अच्छी तेजी चलेगी। अन्यथा मंदी चलेगी, किन्तु मेरा ध्यान ता० ४ मईसे इकतरफा तेजी का है। ता० ४ मईसे यत्र-तत्र तूफान वर्षा ओला आदिका योग सम्पन्न होगा, अमचूरकी फसल नष्ट होगी।

व्यापार समीक्षा—चांस रुई कपास-रिपोर्ट लिखते समय अहमदाबाद दिग्विजय रुई उत्तम क्वालिटीका भाव २२००)२३००) रु० चल रहा है, मेरा ध्यान तेजीका है, भविष्यमें रुई दिग्विजय २७००) रु० लगभग भाव बन जाना सम्भव है। ता० १४ मई तक स्टाक कर लो।

चांदी पुराना सिक्का एवं धातु पदार्थ—रिपोर्ट लिखते समय चांदीका भाव दिल्ली साप्ताहिक डिलेवरी ५९२)५९४) रु० चल रहा है। चांदी पर ग्रह योग तेजीके प्रबल हैं, अत चांदी ऊंचा भाव ६३० ६४०) रु० भाव नन जाना सम्भव है। उपरोक्त भाव जनवरी ७३ का है। चांदी पुनः ५७०)५८०) रु० बिकेगी, किन्तु ता० ४ मई तक चांदी पुराना सिक्का धातु पदार्थ खरीदो। तेजी खेलने वाले व्यापारी माल कमायेंगे। लाइन साधारण भी विपरीत चले तो सौदा तुरन्त काटकर हमारा परामर्श लें। व्यापारी बन्धुओंके आग्रह पर हम चांदी धातु पदार्थोंके दैनिक चांस एक सप्ताहके स्पष्ट कर रहे हैं।

दैनिक साप्ताहिक समीक्षा—ता० ३ मई आई मन्दी बन्द तक खरीदो, अथवा आठ दिन

कीं तेजी लगाओ ।

ता० ४ मई मार्केट बढ़कर खुलेगा, अथवा खुलते बाजारसे ही इकतरफा तेजी चलेगी, रात्री तक ४)५) रु० तक तेजी बनेगी।

ता० ५ मई—खुलते बाजार खरीद कर व्यापार तेजीका बढ़ाते रहो, आज भी ३)४) रु० तक तेजी बन जाना सम्भव है ।

ता० ७ मई—प्रातः से मन्दीमें खरीदो जनरल रुख दुतरफा घटाबढ़ीसे तेजींका ही रहेगा । आज प्रातः खरीदो अथवा ८ मईकी तेजी लगादो ।

ता० ८ मई—मार्केट बढ़ कर खुलेगा अथवा खुलते बाजारसे ही इकतरफा तेजी रात्री तक चलेगी, ३)५) रु० की तेजी बनेगी, तेजोका नफा उठा लो ।

ता० ९ मई—खुलते बाजार बेचो जब भी उछाला आवे मन्दी बनेगी । यदि इस रुखसे व्यापारियोंको लाभ हो तो उसकी सूचना सम्पादक 'ज्योतिष्मती' को देकर आगेकी रुख हमारे कार्यालयसे मगवा लेवें ।

धान्यादि दालवाना—वैशाख मासमें शुक्र का उदय उसी दिन बुधास्त होना एक भयानक अनिष्टकारक योग बन जाता है । धान्यादि दालनानाके व्यापारी बन्धुओंको मेरा परामर्श है कि वह तेजीसे निकल जायें । एक वर्षके अन्दर प्रत्येक धान्यादि दालवानाके भाव निम्न स्तर पर पहुँचेंगे । तूफानी मंदीका संचार होगा । मकर राशिका गुरु धान्यादि दालवाना में एक रु० की वस्तुके ५०।६०।७० पैसे बना देगा । श्रवण नक्षत्र परिभ्रमण कालमें गुरुदेवाचार्य तूफानी मन्दीका संचार करेंगे ।

रिपोर्ट लिखते समय दिल्ली मण्डीमें भाव निम्न भांति हैं । गेहूं देशी १२०) रु० से १४०) रु० तक । गेहूं कल्याण ११८) रु० से १३०) रु० तक । चावल बासमती २००)३००) रु० तक । चना १४०) १५०) रु० । काबुली चना १५०)१७०) रु० । मक्की ११५)१२५) बाजरा १०५)११०) रु० भाव चल रहा है ।

ता० १८ मईसे तूफानी मंदीका संचार होगा । इस त्रैमासिक अवधिमें गेहूं नीचे ८०) ९०)१००) रु० तक । चावल बासमती १७०) २००) रु० । चना देशी ९८) रु० से १०५) रु० तक । काबूली चना १२०)१३०) मक्की ७०)७५) रु० । बाजरा ७५)८०) रु० के लगभग भाव बन जाना सम्भव है ।

दालवाना—रिपोर्ट लिखते समय मटराका भाव ११५)१३५) रु० । उड़द १७५) रु० २२०) रु० । मूंग २३०)२९०) रु० । मसूर १२४)१४०) रु० मोठ २२०)२३०) रु० । अरहर (तूअर) १७०) ८०) रु० के भाव चल रहे हैं । इस त्रिमासमें अरहरमें सबसे अधिक मन्दी बनेगी । अन्य दालवानोंमें सूक्ष्म मन्दी आवेगी । अरहर नीचा भाव ८५) रु० से १००) रु० तक भाव बन जाना सम्भव है । मटरा नीचेमें ६५) से ८०) रु० तक । उड़द १५०) रु० । मूंग १७५) २००) रु० । मसूड़ १००/११०) मौठ १५०)१७५) रु० भाव नीचा बिक जाना सम्भव है । उपरोक्त आंकड़ोंसे कम अधिक भी लाइन चल सकती है ।

पाट जूट बारदाना—ता० ३ मईको खरीदो, ता० ९ मई तक इकतरफा तूफानी तेजी चलेगी ।

किराणा—व्यापार वायदा एवं हाजिर, हल्दीका सट्टा दक्षिण महाराष्ट्र प्रान्तोंमें बहुतायतसे होता है। मुख्य सट्टेका केन्द्र सांगली है। रिपोर्ट लिखते समय सांगलीमें हल्दी वायदा भाव ३०६)३१०) रु० चल रहा है। हल्दी ऊंचेमें ३२०)३२५) रु० बिक सकती है। हल्दी पर मेरा ध्यान विशेष मन्दीका है। हल्दी नीचेमें जुलाई तक २२५)२४०) रु० बिक जाना सम्भव है। मकरे श्रवणे गुरु हल्दीको निम्न स्तर पर ले जाना सम्भव है। भाव २००) रु० वर्ष पर्य्यन्त भाव बन जायें। ता० ३ मईसे १२ मई तक तूफान वृष्टि आदिके कारण एक साथ हल्दीमें १५)२०) रु० की तेजी आ जाना सम्भव है। ता० १२ मईसे बेचान करते रहो। मईके अन्त तक २०)३०) रु० की मन्दी बन सकती है। उपरोक्त लाइन हाजिर पर भी चलेगी।

कालीमिर्च—कालीमिर्चका हाजिर व्यापार समस्त भारतवर्षमें बहुतायतसे होता है, किन्तु कालीमिर्चका वायदा व्यापार कालीकट व बम्बई आदिमें होता है। रिपोर्ट लिखते समय कालीमिर्च वायदा भाव ६२०)६२५) रु० चल रहा है। जुलाई तक कालीमिर्चका भाव ७००) ७२५) रु० बन जाना सम्भव है। कालीमिर्च पर मेरा ध्यान विशेष तेजीका है। चूंकि ता० १० जूनको शनि मिथुन राशि पर प्रवेश करेगा। राहु एवं केतु पहलेसे ही मिथुन एवं धनु राशि पर परिभ्रमण कर रहे हैं। मुझे सैकड़ों वर्षोंके इस भाँतिके योगोंका अनुभव है कि जब भी शनिसे केतु या राहुका योग बना है काली वस्तुमें अफीम कालीमिर्च पोस्ता गोला लवग आयरिन एवं तिलहन तेलबीयांमें सदैव तूफानी तेजीका सचार होता है। सम्भव है कालीमिर्च ६००)१०००) रु० बन सकती है। समय पर उपरोक्त चांसका स्पष्टीकरण किया जायगा।

सूखा गोला—रिपोर्ट लिखते समय अलप्पी बाजारमें गोला वायदा ६००) रु० के लगभग बाजार चल रहा है। गोला पर मेरा ध्यान ता० १८ अप्रैलसे तेजीका है। यह तेजी ३१ मई तक चलेगी। भाव ७००) रु० लगभग बन जायेगा। ता० ३१ मईसे तेजीमें बेचान कर देना, जून महीनेमें गोला नीचा भाव ५५०) ५७०) रु० बनना सम्भव है। आई मन्दी स्टाक करना, गोला वर्षमें ऊंचा भाव ८००) रु० के लगभग बन जायगा।

जीरा—भाव ५५०)५७०) रु० चल रहा है, ऊंचेमें जीरा ६००) रु० नीचेमें ४५०)५००) रु० बन जायेगा। ता० १८ अप्रैलसे जीरा पर मन्दीका ध्यान है। ता० ३ मईसे स्टाक कर लो भविष्यमें तेजी बनेगी।

सौंफ—रिपोर्ट लिखते ससय सौफका भाव ४५०))४६०) रु० चल रहा है। यह वर्षका सबसे ऊंचा भाव है। स्टाक निकाल दो, सौंफ नीचेमें २५०)३००) रु० भाव बिक जाना सम्भव है। लालमिर्च ३७५)४२५) रु० भाव चल रहा है। ध्यान मन्दीका है। नीचा भाव २५०)३००) रु० ता० ३ मई तक बनेगा। अमचूर भाव ५००)७००) चल रहा है अमचूर पर ध्यान मन्दीका है। आई तेजी मार्च तक स्टाक निकाल दो, जून तक अमचूर नीचेमें २००)३००) बन जाना सम्भव है।

धनियां मैथी अजमाइन सौंठमें १८ अप्रैल से ३ मई तक अच्छी मन्दी बनेगी एक रु० की वस्तुके ६०)७०) पैसे रह जायेंगे। ता० ३ मई

तक माल कमा लोगे।

गुड़ खांड चीनी—ता० ३ मई तक यथाशक्ति स्टाक कर लो। ता० १५ जुलाई तक गुड़ में १५)२०) चीनीमें १५)२५) रु०, सल्फरमें २०)३०) रु० की तेजी बनेगी। कम अधिक भी लाइन चल सकती है। बीच बीचमें मन्दीके रियक्न आते रहेंगे।

तिलहन तेलवीयां—काली वस्तु एवं प्रत्येक तिलहन तेलवीयां पर शनिका विशेष प्रभाव पड़ता है। ता० १८ अप्रैलसे ३ मई तक अलसी अरण्डा तेल मूंगफली बिनौला सरसों करड़ी तिल्ली खुश्क गोलामें एक बार तूफानी मन्दी का संचार होगा। ता० ३ मईसे १० मई तक तेजी बनेगी, ता० १० मईसे १८ मई एक बार पुनः तूफानी मन्दीका संचार होगा। ता० १८ मईसे जुलाईके प्रारम्भ तक अलसीमें २५)३०) रु०, अरण्डामें २०)२५) तेल मूंगफलीमें १०) १२) रु० सरसों व सरकी (बिनौला) में ८) १०)१२) रु०, तैल गोला तिल्लीमें ३० ५०) रु० की इकतरफा लाइन चलेगी। ता० २८ मई तक अगर मन्दी चलती है तो २६ मईसे १५ जून तक तेजी बनेगी। अन्यथा ता० २६ मईसे १५ जून तक तूफानी मन्दी बनेगी। उपरोक्त आंकड़ोंसे कम अधिक भी लाइन चल सकती है। उपरोक्त चांस डबल चांस है। इस चांस पर निर्धन व्यापारी भी सिर्फ गली नजराने लगाकर मालामाल बन जायेंगे। चाँस अचूक होगा।

जून ७३ के चांस

चांदी पुराना सिक्का—ता० १ जून मार्केट बढ़कर खुलेगा, अथवा खुलते बाजारसे २॥ बजे तक इकतफा तेजी चलेगी। बन्द तक आई तेजी बेचान कर दो या २ के मन्दे लगा दो। ता० २ जूनसे बेचो, ११ जून तक मार्केट उछल उछल कर टूटेगा।

ता० २ जून—आज जब भी तेजी बने बेचो, मार्केट टूटता जावेगा। आज ४ बजे मन्दे लगा दो।

ता० ४ जून—खुलते बाजार बेचो, ४)६) रु० की मन्दी ननेगी।

ता० ५ जून—बढ़े भाव बेचान कर व्यापार मन्दीका बढ़ाते रहो।

ता० ६ जून—ग्रह योग इकतर्फा प्रबल है, बढ़े भाव बेचो आज दुरंगा लगादो।

ता० ७ जून—खुलते बाजार बेचान कर व्यापार मन्दीका बढ़ाते रहो।

ता० ८ जून—आई तेजी बढ़कर बेचान कर दो, रात्रीमें अच्छी मन्दी बनेगी।

ता० ९ जून—मन्दी खेलने वाले माल कमायेंगे। उछालेमें बेचो, आज ता० ११ की मन्दी लगा दो, माल कमा लोगे।

ता० २ जूनसे ११ जून तक चांदी व पुराना सिक्का पर १५)२०) रु० या अधिक मन्दी बन सकती है।

रुई कपास—ता० २ जूनसे २० जून तक इकरफा मन्दी चलेगी, ता० १५ जूनसे खरीदो ३० जून तक तूफानी तेजी बनेगी।

पाट जूट वारदाना—ता० २४ मईसे जब भी मन्दी बने खरीदो, २ जून तक इकतफा तेजी चलेगी।

कच्ची सब्जी—लहसुन आलू प्याज पर १ जूनसे ३० जून तक इकतफा तेजी चलेगी।

गुड़ खांड चीनी—ता० २ मईसे १५ जून तक आई मंदी स्टाक कर लो। जुलाई तक इकतरफा तेजी बनेगी। २९ मईसे बतौर रियक्सन मन्दी बन सकती है।

किराणा—ता० २६ मईसे हल्दीमें १० जून तक मन्दी बनेगी। लालमिर्च जीरा सौंफ सौंठ कालीमिर्च धनियां अजमाइन मैथी लवंग १ जूनसे ९ जून तक खरीदो। जुलाई तक तेजी खेलने वाले माल कमा लेंगे। पोस्ता रामदाना सांभर नमक कूठ सिंघाड़ामें १ जूनसे जुलाई तक इकतफा मन्दी बनेगी।

धान्यादि दालवाना—ता० १ जूनसे १५ जून तक मन्दीमें खरीदो। ३० जून तक बाजरा जुवार मक्कीमें ५)७)१०) रु० की. गेहूँ चना चावलमें १०)१५)२०) रु० की तेजी इकतफा बनेगी। उर्द मूंग मौठ राजमाष लोबिया मसूड़ का मार्केट ४)६) रु० में घटता बढ़ता रहेगा। जितनी मंदी बनेगी उतनी ही तेजी बनेगी।

खुश्क मेवा—काजू किसमिस अखरोट छुआरा आलूबुखारामें ता० १ जूनसे ३० जून तक सन्दी बनेगी। बादाम पिस्ता खुश्क गोला ता १ जूनसे १५ जून तक खरीदो, ३१ जुलाई तक अच्छा तेजी बनेगी।

तिलहन तेलबीयां—ता० १५ जूनसे खरीदो। घटबढ़से तेजी प्रधान रहेगी। यहांसे नवीन लाइनका संचार होगा।

मिल शेयर्स—ता० १ जूनसे १५ जून तक मन्दी, १५ जूनसे ३० जून तक अच्छी तेजी बनेगी।

वस्तु मात्र फलित स्पेशल चांस

ता० २४ अप्रैलमें प्रात.से रुई कपास चांदी सोना धातु पदार्थ पाट जूट बारदाना एवं हल्दी लालमिर्च धान्यादि गुड़ खांड चीनीमें प्रात: तेजी बनेगी, इस तेजीका नफा उठाकर डबल बेचान कर दो।

ता० २५ अप्रैलसे प्रत्येक धान्यादि दालवाना, चांदी सोसा, रुई कपास गुड़ खांड चीनी मिल शेयर्स तिलहन तेलबीयां हल्दी लालमिर्च सौफ सौंठ अजमाइन जीरा धनियां मैथीमें ता० १ मई तक तूफानी मन्दीका संचार होगा। ता० २५ अप्रैलसे ५ मई तक पाट जूट बारदानामें तूफानी तेजी बनेगी।

ता० १ मईसे ५ मई तक रुई कपास गुड़ खांड चीनी तिलहन तेलबीयां मिल शेअर्स उपरोक्त किराणा वस्तु चांदी सोना धातु पदार्थ यथाशक्ति खरीदो, २० मई तक तेजी खेलने वाले माल कमायेंगे। ता० २० मई तक नफा उठा लो।

ता० २६ मईसे आई मन्दी पाट जूट बारदाना खरीदो, १ जून तक माल कमालोगे।

ता० २६ मईसे अलसीमें २५)३०) रु० अरण्डा २०)२५) रु०, तेल मूंगफलीमें १०) १२) रु०, सरसों सरकी (बिनौला) में ८)१०) १२) रु०, तेल गोला व तिल्लीमें ३५)५०) रु० की इकतरफा लाइन चलेगी। उपरोक्त चांस पर निर्धन व्यापारी भी गली नजराना लगा कर मालोमाल बन जायेंगे। ता० २७ मई तक अगर तेजी आई है तो भविष्यमें अच्छी मन्दी चलेगी। अन्यथा तेजी बनेगी।

ता० ७ जूनको अलसी अरण्डा तेल मूंगफली सरसों सरकी गुड़ खांड चीनी धान्यादि दालवाना रुई कपास चांदी सोना पाट जूट

व्यापार वाणी

[लेखक :—श्री पं० शङ्करलाल गौड़ शम्भु कवि]

वैशाख मास

भारतीय ज्योतिर्विज्ञानकी दृष्टिसे वैशाख कृष्णा प्रतिपदा बुधवारकी अकालकी स्थिति पैदा करने वाली है । प्रमाण मिलता है । यथा :—प्रतिपद् सर्वमासे बुधे दुर्भिक्ष कारिणी" अतः स्पष्ट है कि इस मासमें अनाज पर तेजी सूक्ष्म रूपमें होगी । नवगणितानुसार धनिष्ठा नक्षत्र पर भौम ४१।५ कृष्णा २ को परिवर्तन हो रहे हैं जो रसकस पर मंदापन, धातु वाने पर तेजी होगी, उपद्रवकी स्थिति होती है । तृतीया शुक्रवारको सायन रवि वृषभ राशि पर जाते जाते ऋतु विपर्य कर देते ग्रीष्म ऋतुका आरम्भ हो जाता है। षष्ठी दूसरे दिन राष्ट्र वैशाख भी प्रारंभ हो जाता है । सोमवारको भरण्यांसितः क्षवणे गुरुका होना जनक्रान्ति, लाल वस्तु रस-कस पर तेजी होती है। सप्तमी मंगलवारको रेवती बुध उक्त वस्तुओंके भावोंमें परिवर्तन एकदम हो जाता है । नवमी शुक्रवारको भरणी सूर्यसे धातुवाने किराना वस्तुओं पर तेजी होती है । एकादशी सूर्यवारको कुम्भ राशि पर भौम का प्रवेश ठीक नहीं है । प्रमाण मिलता है यथा :—"चौर वह्नि भयं देशे कुंभे राजसु विग्रहः" वैशाख शुक्ला २ शुक्रवारको शुक्रका उदय राक्षसगणमें हुआ है अतः गुर्जर देशमें पुद्गलका भय, दुर्भिक्ष और द्रव्यहीनता हो, पंचवर्ण पटसूत्र मोलसे भी न मिलैं, श्रीफल (नारियल) का अभाव हो, किसी श्रेष्ठ पुरुषकी मृत्यु हो । देशोंमें उत्पात, सिन्धु देशमें विग्रह, तीन दिन व्यवहार बन्द और मालवेमें विग्रह होता है । षष्ठी बुधास्त पूर्वे इन तीन दिनमें वायु संचारके साथ वर्षा, प्रकृति-प्रकोप भी संभव होता है । वैशाख शुक्ला १२ सोमवार वषभेऽर्कः अतः धान्य भाव सस्ता, किराना घी तैल धातुवाने पर तेजी होती है ।

ज्येष्ठ मास

ज्येष्ठ मासका प्रारम्भ शुक्रवारको हुआ है । इसी प्रतिपदा तिथिको अगस्त्यास्त नव-गणितसे १२।२१ पर हो रहा है यहां भयंकर कालीपीली आंधी चलेंगी । वृश्चिक राशिके चन्द्रमा पर अगस्त्यास्तः अंगारोंकी तप्त सूर्य रश्मियोंसे भू तपायमान करता है । अतः विशेष गर्मी पड़ेगी । लू चलेंगी । तृतीया सूर्यवारको मिथुने भानुः दशमीको शनि अस्त पश्चिम दिशामें भयंकर अंधड़ तूफानादिके साथ वर्षा कर गर्मीको शीतलतामें बदल ही देता है। सप्तमीको गुरुवारको रोहिण्यां रविः गल्लेके भावको फिर ऊंचा चढ़ा देते हैं । ज्येष्ठ कृष्णा १४ गुरुवारको मिथुने बुध शुक्र तथा बुध उदय पश्चिममें विग्रह तथा धान्य भावको मंदा कर देते हैं । किराना वस्तुएं तेज होती हैं । घी तेलमें लाभ होता है । शुक्रवारकी अमावस्या शुभकारी है—नवगणित सिद्धान्तानुसार द्वितीयाका क्षय हुआ है । क्षय तिथिका होना शनिवारी तिथि प्रांतीय मंत्रिमंडलमें मतभेदता पैदा करती है ।

वारदाना एवं किराणा वस्तु बेचान कर दो। ता० १४ जून तक मार्केट उछल उछल कर टूटेगा । उपरोक्त चांसोंकी लाइन विपरीत चले तो तुरन्त सौदा काटकर हमारा परामर्श लेना ।

ज्येष्ठ शुक्ला १० गंगादशहराको शनि मिथुन राशि पर बदल रहे हैं। मूल देशमें पीड़ा करता है। यथा :—मिथुने जायते पीड़ा स्थल मूलस्थ-ले पुच !! दूसरे दिन मीने भौमः गुड़ खांड तेल रुई चावल पर मंदापन लाते हैं। रिक्ता तिथि १४ गुरुवारको मिथुन संक्रान्तिः सूक्ष्मगणित ४०-२८ पर प्रवेश हुई है। अतः जनताको अन्न से दुःखी रहना पड़ेगा।

आषाढ़ मास

आषाढ़ मासका प्रारंभ शनिवारको हुआ है, जिसका फल भारतीय शोधपूर्ण ज्योतिष ग्रन्थोंमें बताया है। इस मासमें पांच शनिवार हैं, जो स्थिति डांवाडौल करते हैं। कहा भी है। **"शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी ! ईशानदेशभङ्गश्च वह्निदाहो महार्घता ॥"** कृष्णा पंचमी गुरुवारको कर्क सायन रवि वर्षा ऋतुका प्रारंभ तथा सूर्यकी गति दक्षिणकी ओर करते हैं। इस दिन रवि नक्षत्र आर्द्रा सूक्ष्म गणितानुसार ४१।२४ पर लगे हैं जो बाजारके रुखको बदल देते हैं। अर्थात् फिर तेजी ही तेजी सर्वत्र दीखती है। अतः गल्ला संग्रह करने वाले लाभ उठा सकते हैं। अमावस्या शनिवारकी भी युद्ध जैसी स्थिति बना दे तो आश्चर्य न होगा। शुक्लपक्षमें चतुर्थीके दिन बुध वक्री हो रहे हैं, जो किराना रसकस वस्तुओं पर मंदापन लाकर तेजी करते हैं। सप्तमी शुक्रवारको श्रवण नक्षत्र पर गुरु वक्री मंदापनसे तेजीकी स्थिति गल्लेकी बना देते हैं। ११ बुधवारको बुधास्तः पश्चिम में विशेष गर्मीके साथ वर्षा करते हैं। अतः भडुली नवमीके बाद ही घोर वर्षा ४-५ दिन वायु संचारके साथ हो जाती है।

पक्षाघात पर विजय

[लेखक :—कविराज वैद्यरत्न पं० शंकरलाल गौड़]

सफल सिद्ध प्रयोग

पक्षाघत शरीरकी सुन्दरता तथा शक्तिको नष्ट करने वाला भयंकर रोग है, इसकी चिकित्सा तत्काल ही कर देनी चाहिये। वरना इस रोग पर विजय पाना असम्भव है। इसकी सरल सफल चिकित्साको छन्द रूपमें हम दर्शाते हैं। चिकित्सक समुदायको हर्ष व यश प्राप्त होगा।

अंग घात प्रयोग

महा माष विष गर्भ अरु महानारायनतेल।
अंगघात मालिश करे रोग नष्ट जनुखेल ॥ १ ॥

खाद्य औषधिका प्रयोग

योगराज गूगल महा, एकांगवीर रस शुद्ध !
क्वाथ महारास्नादि से, औषधि लें संशुद्ध ॥२॥

लाभकारी चूर्ण

सर्प श्रवण असगन्ध सुख, चूरन चीनी चोप !
त्रिफला सेवन करे, रोग न करे प्रकोप ॥३॥

पथ्य

बेंगन परवल बाजरा, लहसुन तोरी गेहूँ,
गाय दुग्ध घीया तथा आम मुनक्का देहुं ॥४॥

अपथ्य

वातदोष कारक सभी कर पदार्थ परित्याग।
वेशन शीतल अपच गुरु वस्तु न ले अनुराग ॥५॥
इस प्रकार विद्वान् वर, करे चिकित्सा सोच।
दुर्धर पक्षाघात की, इति श्री निः संकोच ॥६॥

सरल सफल सिद्ध प्रयोगावली

१—मूत्रावरोध नाशक योग

बारहसिंगा शृंगको, शीतल जल घिस लेई।
नाभिस्थल लेपन करे, मूत्र शीघ्र कर देई ॥

२—नपुंसकता नाशक योग

वीरबहूटी जावित्री, दुय रत्ती अनुमान।
छः माशै अदरख सुरस, करे खरल मनध्यान ।।
वक्र क्षीण सुस्तीपन, जाय योग प्रयोग।
स्वल्पकाल लेपन शनैः इन्द्री दृढ़ सम्भोग ॥

मासिक धर्म जारी योग

कृष्णा नाग नर केंचुली, अग्नि भस्म कर देई।
रत्तीभर गुण मिला, सुख मासिक धर्म करेई।

अर्थ :—नर काले सर्पकी केंचुली लेकर उसे जलाकर भस्म करे एक रत्ती गुड़ मिला सेवन करें।

(क्रमशः)

पुत्रदाता जड़ी-बूटीका चमत्कार

इस जड़ी बूटको बाबा श्री रामदासजी महाराज हिमालय पर्वतसे खुदवाकर जनताके लाभार्थ भेजते हैं। इससे सैकड़ों स्त्री पुरुषोंने लाभ उठाया है। इस औषधिकी कीमत नहीं ली जाती है, सिर्फ खु ाई एवं पेकिंग पोस्टेजके खर्चके हेतु लागत मात्र ३)५० मनीआर्डर भेज कर मंगाये।

नोट :—(१) पुत्र प्राप्तिके लिये स्त्री पुरुष दोनोंके सेवन हेतु ६) मनीआर्डर भेजकर दो पेकिट मंगायें।

(२) पुरुषोंके स्वप्नदोष, वीर्य विकारों एवं स्त्रियोंके श्वेत प्रदर रोग और मासिक धर्म की तमाम खराबियोंके मिटानेमें अचूक है।

(३) मनीआर्डरके कूपन पर अपनी उम्र व स्त्रीकी उम्र एवं महावारी ठीक समयसे होती है या नहीं ? साफ लिखें। बावाजीकी गुफा श्री बद्रीनारायणके पास लक्ष्मीवनमें है, जो मिलना चाहें वहां जाकर मिल सकते हैं।

पता :—सेठ छेदालाल दुर्गाप्रसाद
गोविन्द गंज, पट्ठापुरा, दतिया (म०प्र०)

बृहस्पतिका मकर राशिमें भ्रमण और उसका प्रभाव

[ले०—डा० हरिकृष्ण छंगाणी, ज्यौतिषाचार्य]

२६ जनवरी १९७३ को बृहस्पति मकर राशिमें प्रवेश कर चुका है । बृहस्पति लगभग एक वर्ष तक एक राशिमें भ्रमण करता है। मकर राशि-चक्रकी दशम राशि है । भारतीय ज्योतिषशास्त्रके अनुसार बृहस्पति मकर राशि में नीचका माना गया है। मकर राशि राशि-चक्रमें दशम भावकी अधिपति होती है । अतः वह व्यवसाय प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि, व राजनीतिक जीवनकी सूचक है। ज्योतिषके प्राचीन ग्रन्थोंमें उल्लेख है कि जब गुरु नीच राशिमें भ्रमण करता है, उस समय शासकोंको जनताके खाद्य पदार्थ, पानीकी व्यवस्था, तथा जीवनकी आवश्यक वस्तुओंकी ओर विशेष रूपसे ध्यान देना चाहिये । ज्योतिषशास्त्रके अनुसार वृषभ व मिथुनका शनि भी अल्प वृष्टिका कारक माना गया है। शनि संप्रति वृषभ राशिमें चल रहा है। यह ११ जून १९७३ को मिथुन राशिमें प्रवेश कर रहा है। इस वर्ष ३० जुलाई १९७३ से १४ फरवरी १९७४ तक मंगल भी मेष राशि में लगभग साढ़े छः मास तक भ्रमण करेगा। इस कारण अनेक रेल्वे व हवाई दुर्घटनाएं भयानक अग्निकाण्ड तथा भूकम्प होंगे ।

बृहस्पतिका मकर राशिमें परिभ्रमण वृषभ, कर्क, कन्या, धनुः व मीन राशियोंके लिए शुभ रहेगा। मिथुन, तुला, मकर व कुम्भ राशियोंके लिए अशुभ रहेगा । मेष, सिंह, बृश्चिक, राशियोंके लिए मध्यम रहेगा । मेष राशि वाले व्यक्तियोंके लिए मकरका बृहस्पति अशुभ रहेगा, वह जमीन जाययादके लिए प्रतिकूल रहेगा । व्यवसाय व सन्तान पक्षसे चिन्ता रहेगी । वृषभ राशि वाले जातकोंके लिए बृहस्पति शुभ रहेगा । स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, प्रसन्नता अनुभव होगी, सम्पत्ति व सम्पन्नतामें वृद्धि होगी। लम्बी यात्राएं होंगी। मिथुन राशि वाले व्यक्तियोंके लिए बृहस्पतिका मकर राशिमें भ्रमण अशुभ रहेगा । आर्थिक हानि, नवीन कार्योंमें असफलता तथा परेशानी पूर्ण यात्राओंके योग हैं। कर्क राशि वाले व्यक्तियोंके लिए बृहस्पतिका भ्रमण शुभ रहेगा। संतान व स्त्री पक्ष अच्छा रहेगा । धार्मिक विचार धारामें वृद्धि होगी। सिंह राशि वाले व्यक्तियोंके लिए बृहस्पति अशुभ रहेगा। अस्वस्थता, कठिनाइयां, व सम्बन्धियोंसे परेशानियां अनुभव होंगी। कन्या राशिके लिए बृहस्पति शुभ रहेगा। नवीन मित्रता होगी। नये सम्पर्क लाभदायक सिद्ध होंगे । व्यवसाय व नवीन कार्योंमें सफलता मिलेगी। तुला राशि वालोंके लिए बृहस्पतिका भ्रमण अशुभ रहेगा। कठिनाइयां, परेशानियां, व चौपायोंसे खतरा रहेगा। बृश्चिक राशिके व्यवसायमें कठिनाइयां, मित्रों से विछोह तथा बीमारियोंका सूचक है। धनु राशिके लिए पारिवारिक शान्ति, सम्पत्ति व सम्पन्नतामें वृद्धि तथा सफलताका सूचक है। मकर राशिके लिए लम्बी यात्राएं, आर्थिक हानि व असफलताका सूचक । कुम्भ राशि वाले व्यक्तियोंके लिए अशान्ति, तथा व्यवसाय पक्ष की दृष्टिसे अशुभ रहेगा। मीन राशिके लिए बृहस्पतिका मकर राशिमें भ्रमण शुभ रहेगा। आमदनीमें वृद्धि होगी व प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

तिलहनके अअद्भुत चांस

[लेखक :—श्री श्यामसुन्दर ज्योतिषी]

तेजी मंदीका विषभ ऐसा जटिल विषय है कि इसका पार आज तक शायद कोई नहीं पा सका। भविष्यमें भी इस गुत्थीका सुलझना संभव होना कठिन है। फिर भी हमने अब इस कामसे लाभ उठानेकी जो युक्ति Technich तैयार की है इस युक्तिसे आप ६० प्रतिशत लाभ उठा लेंगे। इसमें सदेह मानकर जो व्यापारी-व्यापार नहीं करेंगे वे प्रत्येक चांसके निकलने पर पश्चात्ताप करेंगे।

१७ अप्रेल खुलते बाजारका रुख जल्दी पलट जायेगा। खुलते तेज खुले तो बेचो। मंदी खुले तो खरीदो। शाम तक लाभ होगा।

१८ अप्रेल २ बजे तक सीधी तेजी या मंदी चल कर बादमें उलटा चलेगा। हमें २ बजे तक तेजी जंचती है। बादमें मंदी। लेकिन उलट भी हो सकता है। आप देखकर कास करें। २ बजेसे पलट अवश्य आवेगी।

१९ अप्रेल ११ बजेसे पौने बारहके बीचका रुख बारह बजेसे पलट जावेगा।

२० अप्रेल खुलते बाजारका जो रुख बने उधर हीं साढ़े ग्यारह तक जोरदार चाल देगा। बादमें घटबढ़ होकर धीरे धीरे पलट आवेगी।

२१ अप्रेल खुलते भावसे साढ़े दस बजेका भाव तेज हो तो बादमें मंदी। अगर खुलते भावसे साढ़े दस बजेका भाव मंदा हो तो बादमेंतेजी। हमें साढ़े दस तक तेजी जचती है।

२३ अप्रेल १२ बजेके भावसे डेढ़ बजे तेज हो तो बादमें मंदी। अगर १२ बजेके भावसे डेढ़ बजे मंदी हो तो बादमें तेजी। वैसे आज खुलते भावसे ११ बजे जो रुख हो उसी रुख पर व्यापार करके डेढ़ बजे तक अच्छा लाभ निश्चय उठा सकते हैं। पूर्ण विश्वस्त चांस है।

२४ अप्रेल खुलते बाजार १० बजेसे, साढ़े दस बजेका जो रुख हो उधर ही सवा बारह बजे तक जोरदार सपाटा लगेगा। सवा बारह बजे बाद धीरे धीरे पलटता जावेगा।

२६ अप्रेल अढाई बजेसे तीन बजे तक जो लांइन चले वह तीन बज कर पांच मिनटसे पलट जावेगी। लाभका विश्वस्त दिन है।

२८ अप्रेल सवा ग्यारह बजे तक जो लाइन चले वह बादमें पलट जावेगी।

३० अप्रेल आज सीधी जोरदार चाल निकलेगी। मदी या तेजी फलेगी। हमें तेजी जंचती है लेकिन पौने ग्यार बजेके भावसे ११ बजे जो रंग हो वही रंग बंद होने तक चलेगा।

१ मई भारी चालका दिन है। तेजी या मंदी फलेगी। हमें तेजीकी आशा

योगमाला (४)

[लेखक :—श्री वाचस्पति शर्मा आयुर्वेदाचार्य]

कोष्ठबद्धता (विवन्ध कब्जी)

इस रोगका समस्त भूमण्डलमें एकछत्र राज्य है। सब रोगोंकी यह जननी है। यह बात सर्वविदित है—अंगूरका रस २५० ग्राम, मूलीका रस १२५ ग्राम, ग्वांरपाठेका रस १ किलो, घीमें सिकी हुई हीराहींग २० ग्राम, कालीमिर्च ४० ग्राम, छोटी पीपल २० ग्राम, स्याह जीरा २० ग्राम, सफेद जीरा ४० ग्राम, शुण्ठी २० ग्राम, नोसादर ५० ग्राम, यवक्षार ३० ग्राम, काला नमक ५० ग्राम, संचर लवण ३० ग्राम, अजवायन ३० ग्राम। सबको एक चीनीके पात्रमें डाल देवें। तीन सप्ताह तक यथा धूपमें रखे रहे। मात्रा १२५ मिली लीटर से २५० मि ली. तक चौगुणे पानीमें मिलाकर भोजनोपरान्त पान करें।

प्रमदा पीयूष (स्त्री संरक्षक)

निम्नलिखित पौष्टिक प्रयोग नारी जीवन के लिये आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य है। इससे लावण्य, स्वास्थ्य, शक्तिकी त्रिपथगामिनी जीवन गंगा निरन्तर प्रवाहित होती रहती है।

चावल ½ किलो, धोकड़ेंका गूंद २५० ग्राम, गोवृत ५५० ग्राम, लोध्र २५० ग्राम, शर्करा ३ किलो, सफेद मूसली ५० ग्राम, कालीमिर्च ५० ग्राम, पीपल लाक्षा १०० ग्राम, खोवा (मावा) १ किलो, छोटी इलायची ३० ग्राम, खोपरा (नारियल गिरी) १ किलो, बादाम गिरी ½ किलो, केसर १० ग्राम, प्रवाल पिष्टी १० ग्राम, त्रिबंगभस्म १० ग्राम, कहरवा पिष्टी १० ग्राम। इन औषधियोंको शुद्ध कर लेवें। गूंदके घीमें फूल्या बना लेवें। शक्करको छोड़कर लाक्षा तककी औषधियोंको घीसे सेक लेवें। पश्चात् खोवा मिला देवे। शक्करकी चासनी जमने लायक बना लेवें। स्वांग शीतल होने पर सिकी औषधियां डाल देवें, पश्चात् खोपरा बादाम केसर पाक विधिसे डाल देवें। तदनन्तर तीनों पिष्टियां और भस्म मिला देवें। थालीमें घी लगाकर बर्फी जमा लेवें।

मात्रा :—५० ग्रामसे १०० तक बलाबल देखकर सेवन करें, ऊपरसे गौदुग्ध पीवें।

पथ्य :—स्वाध्याय, सत्संग, देवार्चन पीपल पूजन, चावल दाल फुलका हरित्शाक।

कुपथ्य :—समस्त खट्टे चरपरे आदि तामसिक आहार बिहार।

उपयोग—समस्त स्त्रीरोग, दौर्बल्य, झाई, मुहांसे, शरीरका दुःखना, चक्कर आना, रक्त-श्वेत प्रदर, दुग्ध दोष, बन्ध्यत्व, काक वन्ध्यत्व चिड़चिड़ापन, कलह प्रियता, क्रोधमुखत्व, दुराग्रहता, अहंमति, औद्धत्य आदि शारीरिक मानसिक विकार दूर होकर गृहस्थ स्वर्ग बन जाता है।

है। फिर भी खुलते भावसे साढ़े दस बजेका रंग देखकर उसी रुख पर काम करें। शाम तक सीधी चाल चलेगी।

यह एक नवीनतम प्रयोग है। ग्यारह चांस भेंट हैं। चाहे हमारे पिछले प्रयोग व्यर्थ ही गये हों, लेकिन इस युक्तिके अनुसार व्यापारका परिणाम अवश्य ही लाभदायक सिद्ध होगा ऐसा हमारा दृढ़तम विश्वास है, तथापि लाभ हानि का उत्तर दायित्व हमारा नहीं। अगले अंकमें लम्बी लाइनोंका नमूना दिखावेंगे।

क्या महर्षि बाल्मीकि चाण्डाल एवं डाकू थे ?

[लेखक :—आयुर्वेद बृहस्पति श्री रघुवीरशरण शर्मा वैद्य]

(गताङ्कसे आगे)

एक बार देवर्षि नारद ऋषि वाल्मीकिके आश्रम पर आये थे, तब वाल्मीकिने नारदसे निम्नलिखित प्रश्न किए थे—

कोचास्मिन् सांप्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान् ।
चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः ॥ २ ॥
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढ़व्रतः ।
विद्वान् कः समर्थश्च कश्चैकप्रिय दर्शनः ॥ ३ ॥
आत्मवान् को जितक्रोधी द्युतिमान् कोऽनसूयकः ।
कस्य बिभ्यति देवाश्च जात शेषस्य संयुगे ॥ ४ ॥

प्रश्न—इस समय संसारमें कौन गुणवान् है ? कौन चरित्रवान् है ? कौन प्राणियोंके हितमें रहता है ? कौन धर्मज्ञ है कृतज्ञ है सत्यवादी है और दृढ़व्रती है ? कौन विद्वान् है समर्थ है और प्रियदर्शन हैं ? और आत्मवान् है ? जितेन्द्रिय है ? जितक्रोधी है ? कान्तिमान् है ? और निन्दक नहीं है ? कौन ऐसा है देवतागण जिससे डरते हैं और युद्धमें जिनको क्रोध नहीं आता ।

ऋषि नारदका उत्तर—

इक्ष्वाकुवंश प्रसवो रामो रामजनै श्रुतः ।
(रा०बा० सर्ग १)

इक्ष्वाकु वंशमें जन्म लेने वाले राम हैं । जो कि इस प्रकार हैं—बड़े पराक्रमी हैं, बुद्धिमान् हैं, नीतिज्ञ हैं, अल्पभाषी हैं, शत्रुञ्जय है, धर्मज्ञ है, सत्यवादी हैं । समुद्रके समान् गंभीर हैं विष्णुके समान पराक्रमी हैं, वेदवेदाङ्गके ज्ञाता धनुर्वेदमें पारंगत है, आदि आदि । ऋषि नारद की बातें सुनकर ऋषि वाल्मीकिने आदरके साथ नारदको विदा किया । और अपने शिष्य भरद्वाजके साथ तमसा तीर्थ जोकि गंगा नदीके समीप ही था, स्नान करके चले गये । जब स्नान करके वापिस आये तब पानीका भरा हुआ कलश लेकर पीछे-पीछे भरद्वाज भी आगये ।

कलशं पूर्ण मादाय पृष्ठतोऽनुजगाम ह
(बा०कां० २।२१)

ब्रह्माजीका बाल्मिकको देखनेके लिए आना ।

आजगाम ततो ब्रह्मा लोककर्ता स्वयं प्रभुः ।
चतुर्मुखो महातेजा दृष्टुं तं मुनिपुङ्गवम् ॥२३॥
वाल्मीकिरथ तं दृष्ट्वा सहसोत्थाय वाग्यतः ।
प्राञ्जलिः प्रयतो भूत्वा तस्थौ परम विस्मितौः ।
॥ २४ ॥

पूजया मास तं देवं पाद्यार्घ्यार्चन वन्दनैः ।
प्रणम्य विधिवञ्चैनं पृष्ट्वा चैव निरामयम् ।२५।
रामस्य चरितं कृत्स्नं कुरु त्वं ऋषि सत्तम ॥३१॥
(बा०रा० सर्ग २)

ऋषि वाल्मीकिको देखनेके लिये स्वयं लोककर्ता महातेजस्वी ब्रह्माजी आये । तब बाल्मीकिने एकदम उठकर हाथ जोड़कर प्रणाम किया, पाद्य और अर्घ्य* प्रदान किया और कुशल क्षेम पूछकर आसन पर बैठ गये । ब्रह्मा जी भी उनको संपूर्ण रामचरित श्लोकबद्ध रचने का परामर्श देकर चले गये ।

पतित्यक्ता सीताका वाल्मीकि आश्रम पर जाना—

* पाद प्रक्षालनके लिये पानी देकर अर्घ्य देना यहां प्राचीन युगमें प्रथा थी ।

लक्ष्मण वाल्मीकिके आश्रमके पास गंगा के किनारे सीताको रोती छोड़कर अयोध्याको वापिस आने लगे तब आश्रमवासी मुनियोंके पुत्रोंने ऋषि वाल्मीकिको सूचना दी, तब वाल्मीकिने सीतासे कहा था कि—

तां सीतां शोक भारार्तां वाल्मीकिर्मुनि पुङ्गवः ।
उवाच मधुरांवाणीं ह्लादयन्निव तेजसा ॥ ६ ॥
स्नुषादशरथस्य त्वं रामस्य महिषी प्रिया ।
जनकस्य सुता राज्ञः स्वागतं ते पतिव्रते ॥ ७ ॥
आयान्ती चासि विज्ञाता मया धर्म समाधिना ।
कारणं चैव सर्वं मे हृदयेनोपलक्षितम् ॥ ८ ॥
तव चैव महाभागे विदितं मम तत्वतः ।
सर्वं च विदितं मह्यं त्रैलोक्ये यद्धि वर्तते ।

(वा०उ०कां० ४८)

शोक संतप्त सीतासे मीठी वाणीसे बाल्मीकिने कहा कि तू राजा दशरथकी पुत्र-वधू है, रामकी पटरानी है। राजा जनककी पुत्री है। हे पतिव्रते ! तेरा स्वागत है। तेरे आनेका कारण मुझे मालूम है, इतना ही नहीं तीनों लोकोंमें जो कुछ हो रहा है वह सब भी मुझे ज्ञात है।

लव कुशका जन्म

आधी रातके समय लव कुशका जन्म हुआ। इसकी सूचना आश्रमवासी मुनियोंके पुत्रोंने दी। सूचना पाकर बालमीकि सीताके पास आये।

जगाम तत्र हृष्टात्मा ददर्श च कुमारकौ ।
भूतघ्नीं चाकरोताभ्यां रक्षां रक्षोविनाशिनीम् ॥५॥

(वा०उ०कां० ६६)

वाल्मीकि प्रसन्न होकर सीताके समीप आये। आकर भूतघ्नी और रक्षोविनाशनी† क्रियाओंको किया।

वक्तव्य—प्रसूतावस्थामें गर्भाशय तथा योनि क्षत विक्षत रहती है अतः ज्वर, मन्या-स्तंभ अपतानक (टिटैनस) आदि रोगोंके जीवाणु प्रविष्ट हो जाते हैं। फिर रोगोंको उत्पन्न करते हैं। इसी कारण सुश्रुतमें लिखा है कि—

निशाचरेभ्यो रक्ष्यस्तु नित्यमेव क्षतातुरः ।

(सु०चि०स्था० १।१३)

अर्थात् क्षतातुर (जख्मों) पुरुषकी निशा-चरोंसे (जीवाणुओंसे) सदैव ही रक्षा करना चाहिये। आयुर्वेदमें राक्षसोंके विनाशार्थ अनेक उपचार भी लिखे हैं, उदाहरणार्थ—

अधिष्ठाने चाग्नि प्रज्वालयेत् व्रणोपासनीयं चावेक्षते

(सु.शा.स्था. १०।२३।)

सूतिकागारमें १० दिन तक चौबीसों घंटे अग्नि जलावे और जो व्रणितोपासनीय अध्याय (सु०सू०अ० १९) में जो कुछ कहा है उसका भी व्यवहार करे।

सर्षपारिष्टपत्राभ्यां सर्पिषा लवणेन च ।
द्विरन्हः कारयेद्धूपं दशरात्रमनन्द्रितः ॥

(सु.सू.१९।२७।)

पीली सरसों नीमके पत्ते सैंधा नमक और घी इनकी धूनी सूतिकागार, सूतिकाकी शय्या तथा वस्त्रों पर १० दिन तक सावधानीसे देनी चाहिये।

---

† वेद और आयुर्वेदमें भूत राक्षस पिशाच गन्धर्व आदि नामोंसे ऐंजनक जीवाणुओंका ग्रहण होता है।

ततो गुग्गुलु अगरु सर्वरसवचागौर सर्षपचूर्णै-र्लवणनिम्बपत्रै र्विमिश्रराज्ययुक्तैर्धू पयेत् ।

(सु.सू.स्था.—५।१७)

गूग्गल, अग्गर, राल, घुड़वच, पीली सरसों सेंधा नकम नीमके पत्ते । इनको कूटकर थोड़ासा घृत मिलाकर पूर्वोक्त विधिसे धूपन करें ।

अनेन विधित्वायुक्तमादावेन निशाचराः ।
वनं केसरिणा क्रान्तं वर्जयन्ति यथा मृगाः ।

(सु.सू. १६।३७)

इस प्रकार धूनी देनेसे जीवाणु रोगीको छोड़कर ऐसे भाग जाते हैं जैसे कि वनमें सिंह के प्रवेशसे मृगादि वन्य पशु भाग जाते हैं ।

बाल्मीकिका अयोध्या गमन—

भगवान् राम यज्ञकी सूचना पाकर ऋषि वाल्मीकि भी अयोध्या गए, साथमें लव-कुशको भी ले गए । वहां जाकर दोनों राज-कुमारोंको आदेश दिया कि—

तद् युवां हृष्ट मनसौ श्वः प्रभाते समाहितौ ।
गायतां मधुरं गेयं तन्त्रीलय समन्वितम् ।। १५ ।।
इति संदिश्य बहुशो मुनिः प्राचेतसस्तदा ।
वाल्मीकिः परमोदारस्तूष्णीमासन् महामुनिः ।।

(वा.उ कां. ९३।१६।)

अर्थात् तुम दोनों प्रसन्न चित्त होकर कल प्रातःकाल मधुर वाणीसे लयके साथ रामचरित को गाना । ऐसा कहकर प्राचेतस (वरुणवंशज) वाल्मीकि चुप हो गये । दूसरे दिन प्रातः दोनों भाइयोंने मधुर स्वर और लयके साथ राम-चरित गाया । श्रोतागण जिनमें श्रीराम भी थे सभी मुग्ध हो गये । तीसरे पहर प्रसन्न होकर श्रीरामने १८ हजार सुवर्णके सिक्के दोनों भाइयोंको देनेकी आज्ञा दी, परन्तु उन्होंने यह कहकर उनको ग्रहण नहीं किया कि—

ऊचतुश्च महात्मानौ किमनेनेतिविस्मितौ ।
वन्येन फलमूलेन निरतौ वनवासिनौ ।
सुवर्णेन हिरण्येन किं करिष्यावहे वने ।।

(बा.उ.कां ९४।२०)

दोनों भाइयोंने आश्चर्यके साथ कहा कि हम वनवासी वनके फल मूल खाते हैं. हम वन में इस सुवर्णका क्या करेंगे ? फिर उनसे पूछा कि इस रामचरित काव्यका रचयिता कौन है ? तब उन्होंने कहा कि—

पृच्छन्तं राघवं वाक्यमूचतुर्मु निहारकौ ।
वाल्मीकिर्भगवान् कर्ता संप्राप्तो यज्ञसंविधम् ।।
येनेदं चरितं तुभ्यमशेषं संप्रदर्शितम् ।
सन्निबद्ध हि श्लोकान्तां चतुर्विंश सहस्रकम् ।।
उपाख्यान शतं चैव भार्गवेण तपस्विना ।

(उ०कां० ९४।२४—२)

भगवान् रामके पूछने पर दोनोंने बताया कि इस काव्यके रचयिता भगवान् वाल्मीकि हैं, वे इस यज्ञमें आये हुए हैं । फिर कहा कि—भार्गव भृगुवंशज वाल्मीकिने २४ हजार श्लोकों में यह काव्य पूर्ण किया है ।

भगवान् रामके पास जाना—

अन्तमें वाल्मीकि सीता तथा लव कुशको लेकर श्रीरामके पास गये और कहा कि—

इमौ तु जानकीपुत्रावुभौ च यमजातकौ ।।
सुतौ तवैव दुर्धर्षौ सत्यमेतद् ब्रवीमि ते ।।
प्रचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघवनन्दन ।
न स्मरामि अनृतंवाक्यमिमौ तु तव पुत्रकौ ।।
बहुवर्ष सहस्राणि तपश्चर्या मया कृता ।
नोपश्नीयां फलं तस्या दुष्टेयं यदि मैथिली ।

(वा.उ कां. ९६।१७—१९)

आयुर्वेदके अनुभूत प्रयोग

[लेखक :—श्रीरघुवीरशरणजी आयुर्वेद बृहस्पति वैद्यरत्न आयुर्वेदाचार्य]

(१) रक्त प्रदर पर

धायके फूल दो तोला, गूलरके कच्चे फल (छायाशुष्क) २ तोला, वंशलोचन असली ६ माशे, शुद्ध (भुनी हुई) फिटकरी ४ माशे।

विधि—ऊपरकी तीनों औषधियोंका चूर्ण करके कपड़ छन कर लें। फिर इनमें फिटकरी मिलाकर खरलमें १० मिनट तक मर्दन कर लें। इन सबके समान चीनी भी लाकर रख लें।

सेवन विधि—मात्रा १ तोला २० रत्ती। प्रातः सायं ताजा पानीसे सेवन करें। यदि रोग भयंकर हो तो चावलके पानीसे दें।

चावलका पानी

चावलोंको दरदरा कर लें, फिर एक तोला चावलोंको १० तोला पानीमें भिगो दें। १ घंटे बाद पानीका उपयोग कर लें।

गुण—कैसा ही भयंकर रक्तस्राव हो तीन दिनके सेवनसे लाभ हो जायगा।

(२) दमउलखवेन १॥ माशे, सोनागेरू ४ रत्ती, पीपलकी लाखका दाना, अभावमें पीपलकी लाख १ माशा, प्रवाल पिष्टी २ रत्ती लोहा भस्म १ रत्ती, सेलखरी २ रत्ती, सत्व गुडूची ४ रत्ती। इन सबको मिला लें। यह एक मात्रा है। ऐसी दिनमें प्रातः सायं दो मात्रा।

अनुपान—शर्वत अनार मीठा (अभावमें) मधु। गुण—यह योग रक्तप्रदरमें अच्छा काम करता है।

(३) पिष्टीकहरवा शमई, पिष्टी जहर-मोहरा, खताई, अकीक भस्म या पिष्टी हरेक २-२ रत्ती।

स्वर्ण माक्षिक भस्म १ रत्ती, सत्वगुडूची ४ रत्ती यह एक मात्रा है। प्रातः सायं दिनमें २ बार। अनुपान ताजा पानी।

गुण—यह रक्तप्रदरमें तो लाभ करता ही है साथ ही दिलकी धड़कनको भी लाभ करता है।

पुनश्च—ये तीनों योग मेरे आविष्कृत हैं और अनुभूत हैं।

अर्थात् ये द्रोनों जानकीके पुत्र हैं, एक साथ जन्मे हैं। तुम्हारे पुत्र हैं। मैं सत्य कहता हूं। मैं वरुणवंशकी दसवीं पीढ़ी पर हूं। मैं कभी भूठ नहीं बोलता। मेंने हजारों वर्ष तपस्या की है उसका फल मुझे न मिले यदि सीता दुष्टा होय तो।

त्रैमासिक व्यापारिक भविष्यफल

[लेखक :—श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त साहित्य विशारद]

वैशाख मास

वदी, एकम बुधवारी है "प्रतिपत्सर्वमासेषु बुधे दुर्भिक्ष कारिणी" बुधवारी पड़वा हर एक महीनेमें तेजी करने वाली होती है। इस मास में गल्ला. गुड़. खांड घी तेल दालें आलू प्याज अदरक शाक पात सभी खाद्य पदार्थ तेज रहेंगे। ता० १९ गुड़ खाण्ड रुई मन्दी, सोना चांदी, ताम्बा पीतल धातुएं तेज होंगी। २१ को नक्षत्र वृद्धि शनि दृष्ट होनेसे अन्न तथा रस पदार्थोंमें तेजी रहेगी। ता० २३ भरण्यां भृगुः धातुएं सोना चांदी ताम्बा लाल रंगके पदार्थ अलसी, मसूर, गेहूं, तथा उर्द, मूंग घी तेल मन्दा, रुई तेज होगी। वदी ६ की वृद्धि, अनाज, घी, रुई तेज करेगी। रेवतीका बुध वायदाभावोंमें तेजी लाएगा। ता० २६ भरण्यां रवि सोना, चांदी, ताम्बा, हल्दी, घी, गल्ला तेज, अलसी, रुई मन्दी। यहां 'भृगु-रवि' नक्षत्र योग मन्दीके झटके भी लाएगा। २९ को कुंभे भौमः सभी प्रकारका अनाज सोना चांदी कांसी पीतल ताम्बा तेज करेगा। गुड़ खाण्ड तिलहन में जोरदार घटबढ़ होगी। वदी १३ भौमवार "राधे त्रयोदशी कृष्णा यदा भौमार्कवासरा,: महर्घं खण्ड ताम्बूलं सैंधवं रक्त चन्दनम्" खाण्ड, नागर पान, सेंधा नमक लाल चंदनमें तेजी होगी। वदी चतुर्दशीका क्षय रुई मन्दी करेगा।

जेहि पखवारे तिथि बढ़े वाहीमें घट जाय।
सभी वस्तु मन्दी बिकैं मंहगाई हट जाय॥

इस पक्षमें तीन बुधवार होनेसे घीका भाव तेज रहेगा। सुदी २ को कृत्तिका शुक्र जौ, चावल जवाहिरात तेज करेगा। रातको पश्चिम में शुक्रका उदय अन्नमें तेजी तथा युद्धकारक है। सौराष्ट्र (काठियावाड़) देशमें विग्रह, मारवाड़में दुर्भिक्ष. घी, अन्न सोना, चांदी, रुई, कपास सून तेज। पशुओंको पीड़ा। शनिवारी अक्षय तृतीयाको रोहिणी नक्षत्र आधा चरण मात्र है अतः संवत्का एक चरण (स्तम्भ) कमजोर हो गया है। आज सोना, चांदी, तांबा, पीतल, घी, गोला खाण्डका भाव मन्दा रहेगा। ७ मई. वृषे भृगु सुभिक्षकारक है, परन्तु शनिके शिकंजे में आनेसे फल मध्यम होगा। ८ को शते भौमः उत्तम उपज होगी, परन्तु मूषक कीट आदिसे खेतीमें हानि होगी।

आज ही बुधास्त मन्दीकारक है—

शुक्रोदय पर जब कभो, हो कोई ग्रह अस्त।
क्षेम, कुशल, आरोग्यता, मन्दा धान्य समस्त॥

यहां अनाजमें अच्छी मन्दीकी संभावना है। प्रजामें सुख शांति। बुधाष्टमी इस मन्दीको प्रोत्साहन देगी। ता० १४ मई वृष संक्रांति सुभिक्षकारक है। उपज उत्तम होगी। घी दूध में तेजी। सोमवारी संक्रांति मन्दीकारक होती है। परन्तु वृष संक्रांति तेजीके उछाले लाती है। १५ मई तिथि तथा नक्षत्र वृद्धि मन्दीकी परिचायक हैं। १६ मई अनाज रुई तेज। गुरुवारी पूनम विशाखा युता सुभिक्ष करेगी। आज आठ दिनकी मंदी लगा दें। वृषका बुध कलह-भय कारी है। इस मासके कृष्णपक्षमें जनरल लाइन तेजी और शुक्लपक्षमें मन्दीकी रहेगी।

ज्येष्ठ मास

वदी १ शुक्रवारी, आगे उत्तम वर्षाकी घोषणा करती है। ता० १९ मई, सरसों, अलसी, अरण्डी तिल तेल घीमें तेजी और रुई चांदीमें मन्दीकी आशा है। २१ को सोना, गेहूं, गुड़, किराना मन्दा रहेगा। ता० २२ रोहिण्यां बुधः सोना, चांदी, रुई, कपासमें तेजी होकर मन्दी। २४ को रोहिण्यां रविः अन्न, रुई, सूत, सन गुड़ तेज। ता० २६ मृगे शुक्रः धान्य तथा कपासकी खेतीमें हानि, गुड़, खाण्ड, सरसों, अलसी तेज, ता० २८ मई शनिदेव अस्त होंगे, पशुओं तथा स्त्रियोंको पीड़ा, गुड़ खाण्ड शक्कर तृण घास चारा तिलहन तेल रुई कपास आदि श्वेत पदार्थं तेज, सोना चांदीमें घटबढ़। २९ मई गुरु वक्री होगा, अन्न मन्दा, पैदावार उत्तम होगी। इस मन्दीमें लिया हुआ माल आगे लाभ देगा।

बृहस्पती वक्री चलै शनी चलै अतिचार।
राज्य सुखी धन धान्य युत सुखी रहै संसार॥

वक्री गुरु सोना तेज करेगा। ३१ मई पश्चिममें बुधका उदय—मिथुनका बुध उदय होकर तेजी तथा वर्षामें कमी करता है। आज वृष राशि पर पांच ग्रहोंकी टक्कर सावनमें वर्षाका अवरोध करेगी। शुक्रवारी अमावस्या मन्दीकारक है। रोहिणी नक्षत्रमें सूर्य-सोमकी स्थिति घोर तेजीकारक है।

रोहणिमांही रोहिणी एक घड़ी जो दीख।
खप्पर हत्थी जग भ्रमै कोई न घालै भीख॥
(भड्डरी)

'भड्डरी' के कहनेके अनुसार तो खर्पर योग बन जाता है। सुदी १ का क्षय, सुदीपक्ष में तेजीका प्रतीक है। "श्वेत पक्षे प्रतिपदा छिन्ना दुर्भिक्ष कारिका" सोमवारा चंद्रोदय—एक मासमें अन्न तेज तथा किसी राज्यमें मंत्रि-मण्डल भंग करेगा। ३ को सरसों अलसी तिल, तेल, घी गोला खाण्ड मन्दी रहेगी। जहां आज वर्षा होगी वहां आगे घोर दुर्भिक्ष होगा। ता० ५ मंगलवारी पंचमी आगे रुई तेज करेगी। आज बाजारमें मन्दीकी धारणा रहेगी। ७ को मृगे रविः १४ दिन सोना, चांदी रुई रेशम सूत सन गल्ला सुगंधित पदार्थमें तेज़ीकी लाइन रहेगी। आज हवाका जोर हो तो आगे संवत् श्रेष्ठ होगा। ९ को सरसों अलसी, लाल अरण्डी तिल तेज़ गल्ला तेज रहेगा। ता० १० मिथुने शनि—

मिथुने च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्।
पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्॥

घोर दुर्भिक्ष हो और पश्चिमी देशोंमें युद्ध तथा भय हो। यहां "बुध-शुक्र-शनि-केतु" चार ग्रहोंकी टच्कर होगी। आगे मिथुन राशि पर पांच ग्रहोंकी मीटिंगसे—

जेठ मासमें सूर्यसह पांचग्रह यक संग।
सावन सूखा जायेगा मंत्री मण्डल भंग॥

पंचग्रही योग युद्ध अथवा महान् वर्षाका प्रतीक भी है। "पंचग्रहा घ्नन्ति चतुष्पदाश्च" चौपायोंका नाश हो। परन्तु नीचके केतुसे क्रूर ग्रहका योग मन्दी कारक भी होता है। इस कारण बाजारका रुख देखते हुये काम करें। तूफानी तेजी मन्दी चलेगी। गंगा दशहरा शुभ है। १२ को मीने भौमः लकड़ी काष्ठ घास चारा पशु तेज करेगा। मिथुन संक्रांति कन्द मूल आलू अदरक, प्याज, सोंठ हल्दी मूंगफली तिल तेल तेज करेगी। शुक्रवारी पूनम ज्येष्ठा युता

सुभिक्ष करेगी। ५ घड़ी मूल नक्षत्र इस मन्दीको बढ़ावा देगा। अच्छी वर्षा तथा उपजकी सूचना है।

आषाढ़ मास

वदी १ मूल नक्षत्र घटबढ़ करेगा, चांदी सोना, रुई मन्दी, सरसों, अलसी लोहा तेज। वदी २ कीं वृद्धि तीन दिनके अन्दर हर एक वस्तुमें तेजीका झटका आएगा। १६ जून कर्क बुध: कष्टकारी है। अफ्रीकामें खलबली, चीनमें उपद्रव। चांदी सोना, रुई, कपासमें घटबढ़। २१ को आर्द्रायां रवि: श्रेष्ठ वर्षा और उत्तम उपजका द्योतक है। बाजार मन्दा, रुईमें घट बढ़। २४ को कर्क शुक्र: रसपदार्थ गुड़ खाण्ड चीनी घी तेल तिलहन तेज करेगा। यहांसे ४ जुलाई तक बुध शुक्र युति वर्षाकारक है। २६ को सुकर्मा योगका क्षय घी तेज करेगा। वदी १२ का क्षय तीन दिन तक सभी वस्तुओंमें एक बार मन्दीका रियक्शन लाएगा। २९ को रोहिणी नक्षत्र घोर तेजीकारक है। शनिवारी अमावस्या भी तेजी करेगी। आज आठ दिनकी तेजी लगा दें। आज सूर्य चंद्र शुक्र योग और गुरुका अपोजीशन उत्तम वर्षाका परिचायक है।

सुदी १ व्याघात योगका क्षय घी तेज करेगा। पुनर्वसु नक्षत्र वर्षाकारक है। सुदी ३ का क्षय—अतः सुदी ३ या ४ के घटने पर मूंग, उर्द, मोठ आदि दाल अन्न और घीके अभावमें दुकानदार नट जाते हैं कि माल नहीं है। भावार्थ यह है कि तेजी होगी। यह तेजी पक्षभर रहती है। ता० ३ को शनि उदय होगा। ५ दिन पश्चात् तेजी आरम्भ हो जायेगी। परन्तु रुई मन्दी रहेगी।

मूंग उर्द लहसन, सब्जी, चांदी चावल लोहा फरनीचर बिजलीका सामान मोटर आदि में तेजी आवेगी। ता० ४ बुध बक्री होगा। प्रत्येक वस्तु मन्दी हो। गुरु पहिले ही बक्री है दोनों बक्री होकर खाद्य पदार्थोंमें मन्दी करेंगे।

सोना चांदी धातुएं तेज। ५ को व्यतिपात योग रुई मन्दी करेगा। ता० ७ सरसों अलसी आदि तिलहन गल्ला तेज। ८ को रेवत्यां भौमः तिलहन, रुई, पाट बारदाना तेज, अनाज मन्दा, चांदीमें अच्छी तेजी। सुदी ११ मंगलवारी दुर्भिक्षकी घोषणा करती है। सावधान! ता० ११ को पश्चिममें बुधका अस्त—राजस्थानमें उत्ताम वर्षा होगी। पिछली तेजी समाप्त हो जायेगी। चांदी तेज रहेगी। ता० १२ रुई सूत सन पाट बारदाना मन्दा। ता० १४ को सूर्यास्त समय वायु परीक्षा होगी। पूर्व-पश्चिम-उत्तर तीनों ओरसे आने वाली हवा शुभ और दक्षिणी वायु अशुभ होती है। रविवारी पूनम तेजी करेगी। पूर्वाषाढ़ नक्षत्र आगे मन्दीका प्रतीक है। इस मासमें पांच शनिवार तथा पांच रविवार हैं, मंहगाई, रोग-युद्ध शोकादि अनेक दुर्घटनाएं होंगी।

शकुन विचार

वैशाख

वैशाखी पड़वा प्रथम बादल निकसे भान।
उत्तम संवत्की यही है उत्तम पहिचान॥
वैसाखी सुदी पंचमी चालै पूरब बाय।
संग्रह करो अनाजको आगे मंहगा जाय॥
वैसाखी पूनम तथा जेठ बदी दिन आठ।
जो चालै परवा पवन तो वर्षा का ठाठ॥

जेठ

श्रवण धनिष्ठा जेठ बदि मेघ रहै आकाश।
अनवर्षे वर्षा अधिक वर्षे वर्षा नाश॥

त्रैमासिक व्यापार दिग्दर्शन

[लेखक :—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन, पर्जन्य एवं अर्घकाण्डवाचस्पति]

गत चैत्री अमावस व पूर्णिमाको (माघी अमावस शनिवारी, फाल्गुनकी रविवारी चैत्र की शनिवारी, इसी क्रमसे पूर्णिमा भी इन्हीं वारोंमें होनेसे) "शनि अङ्गारक योग" बन चुका है यह महान् औत्पातिक कुयोग है जोकि किसी प्रकार ऋतु विपर्य हिंसाकाण्ड गोली-काण्ड कारखानोंमें धड़ाका, यान दुर्घटना, नेताओं पर सङ्कट अथवा अवसान, व्यापारकी चलती लाइनमें जबर्दस्त परिवर्तन, कभी तेजी तो कभी भयानक मन्दीकी लाइन देता है । मार्गशीर्ष कृष्णा ३० संवत् २०२६ को भी उपर्युक्त क्रम से यही योग बनने पर मन्दीका दौर चल पड़ा था, किन्तु इसी कुयोगके कारण २५ दिसम्बर सन् ७२ को श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्यका निधन होते ही तेजीकी लाइन (महान् नेताकी मृत्युका प्रभाव) सभी वस्तुओंमें अन्तिम नीचे भाव दिखाकर दो मासके लिये चल पड़ी जो २३ फर्वरी ७३ पर्यन्त चलकर शुक्रास्त होते ही भावोंका बढ़ना रुक गया । सभी मार्केट नरम हो गये । गवर्नमेंन्टकी व्यवस्थामें न्यूनता चलने से चांदी सोना तेलके बीज खलीके भावोंमें रिकार्ड तोड़ तेजी होकर बन गये । केवल गुड़ खाण्डमें समानता और मन्दा सा रहा । वास्तविक बात तो यह है कि :—मण्डीमें वैशाखी फसल की भांति यहां गेहूँ आता रहने पर भी भाव ११८) तकके हो गये ।

चैत्री पूर्णिमाको "शनि अङ्गारक योग" का फलादेश भी भयङ्कर ही होगा, इसका वर्णन पहले किया जा चुका है । किन्तु वैशाख मासमें ५ बुधवार भी आकाशी-पाताली भावोंका दिग्-दर्शन भी अवश्य ही करावेंगे जिसको समय स्वयं ही बतावेगा, क्योंकि अन्नादिका राष्ट्रीय-करण क्या रङ्ग दिखाता है ? सोचकर ही व्यापारी भी कार्य कर पावेंगे । सरकारी व्यव-स्थाका परिणाम क्या होगा ? इसका अनुमान लगाना तो कठिन ही नहीं असम्भव है । कारण यह नई समस्या ज्योतिषी वर्गके लिये भी एक दम नई है । १६ अप्रैलको सायं ७ बजे धनि-ष्ठायां शीघ्री गतिका भौम इन्द्रकी तरह समृद्धि, तेलके बीज गुड़ खांड दाल अन्नादिमें मन्दी लाने वाला योग है, किन्तु यहां क्या होगा ? समयानुसार कार्य करें । कृष्णा ४ शनिवारी गुड़ खांडमें मन्दी जाती है । ता० २३ को तिथि वृद्धि तेजी कारक है । शामको ७ बजे भरण्यां शुक्र सोसा चांदीके साथ सभी वस्तुओंमें मन्दी लाने वाला योग है । ता० २४ को रेवत्यां बुध भी समर्थक है । ता० २५ की रातको अगस्त्यास्त होनेसे कहीं-कहीं बादल वर्षा वायुवेग, ता० २६ को कृष्णा ११ में उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० आदि स्थलों पर बादलोंका मण्डान हो तो सदैव मन्दी आती है, किन्तु आज ही कुम्भे

आठैं चौदश जेठ बदि चाले दखिना बाय ।
वर्षा ऋतुमें समझ लो उत्तम जल बरसाय ॥

आषाढ़

साढ़ बदी प्रतिपदा को वर्षा बादल गाज ।
अनावृष्टि दो मास तक मंहगा बिकै अनाज ॥
साढ़ बदी आठै अगर बादल चंदा जोय ।
वर्षा ऋतुमें जानिये भारी वर्षा होय ॥

भौम, वृषे शनि कालमें २४ अक्टोबर ७१ के पश्चात् पुनः बना है जो उस समय भारत पर पाकका दूसरे हमलेका चमत्कार दिखा चुका है जो १६ दिसम्बर पर्यन्त रहा, मीने भौम १६ दिसम्बरको होते ही भारतने युद्धविरामकी घोषणा अपनी ओरसे विजय प्राप्त करके समाप्त किया, व्यापारियोंको इसकालमें हुई तेजी-मन्दीका ध्यान होगा, यह योग "शनि अङ्गारक योग" से भी बढ़कर महान् शक्तिशाली कुयोग है, १०-११ जून तक उपर्युक्त-दुष्काण्ड दिखाता रहेगा। २ मईको तिथि ३० अमावसका क्षय मन्दीकारक है। अमावस शुभवारी शुभ फल करती है। ३ मई से गुजराती वैशाख मासमें (शुक्ला १ से ज्येष्ठ कृष्णा ३० पर्यन्त) ५ गुरुवार सुभिक्षकारी, ज्वार अनाज चांदी रस-कस लोहा उड़द बाजरा तेज करेंगे। ता० ४ को कृत्तिकायां शुक्र सभी खाद्य वस्तुओंमें मन्दीकारक। शुक्रतारा ४५ मुहूर्तोदय समर्थक है। ता० ५ को अक्षय तृतीया शनिवारी मृगशिरा संयोगी आगे वर्षाकालमें पहले सूखा फिर अतिवृष्टिसे कहीं-कहीं उपजका नाश करेगी, आज ही रोहिणी नक्षत्र मेघद्वार मनुष्यगण, प्रथम मण्डलमें पश्चिमोदयी शुक्र फलतः कहीं-कहीं घोर वर्षा और सुभिक्ष तो कहीं युद्ध भय प्रजा विग्रह भूकम्प छत्रभङ्ग नेताओंको कष्ट पतन वा अवसान भी सम्भव है। शुक्ला ४ परतः पञ्चमी रविवारी कहीं-कहीं या दक्षिण भारतमें भयानक वर्षासे बाढ़ तक आ जाने की आशङ्का है।

ता० ७ को शीघ्री वृषे शुक्र होते ही गुरु दृष्ट शनि+शुक्र योगके पीछे बुध होनेसे सभी वस्तुओंमें मन्दी हो सकेगी। ता० ८ को शत० शीघ्री भौमसे अन्नादि मन्दे, तेलके बीज गुड़ खांडमें तेजी आवेगी। ता० ९ को पूर्वास्तो बुध बादल वर्षा या वायुवेग, साथ ही सभी वस्तुयें मन्दी, क्योंकि शुक्रोदयके पश्चात् कोई ग्रह कभी अस्त होता है तो खाद्य वस्तुमें मन्दा आता है। ता० ५ को चली लाइन आज बदल भी सकेगी। बुधाष्टमीका क्षय अच्छी तेजी या मन्दी लाता है। वृषे शनिका राश्यान्त १ मास पहलेसे कभी-कभी मन्दा भी लाता है। ता० ११ को कृत्ति. रवि २४ मई तक उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० में जहां भी बूंदाबांदी बादल चाल होगी, वहां आगे वर्षाकालमें अच्छी वर्षा होती रहेगी। ता० १४ को सायं ३।३५ बजे श्री सूर्यदेव बारात् ४ नक्षत्रात् ५ (३० मुहूर्ताऊभी अवस्था) में शीघ्री शुक्र और शनिसे युक्त गुरुसे संदृष्ट होकर बृष राशिस्थ होंगे, फलतः सभी खाद्य वस्तुओंमें मन्दा, सोना चांदी भी मन्दे हो सकेंगे। ता० १५ को शीघ्री रोहि. शुक्र चांदी सोनाके साथ सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी करता है। ता० १६ को कृत्ति. बुध भी समर्थक है। ता० १७ की रातको वृषे बुध होते ही शनि +शुक्र+सूर्य+बुध योग मन्दी वस्तुयें खरीदने की राय देता है। ता० १९ को दोपहर तक बादल वर्षा भी उपर्युक्त क्षेत्रोंमें होगी। वैशाखी पूर्णिमाको विशाखा नक्षत्र मन्दीकारक होता है।

ज्येष्ठ मास

इस मासमें ५ शुक्रवार गुड़ खांडमें तेजी लावेंगे। कृष्ण १ शुक्रवारी आगे वर्षाकालमें उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० में कहीं-कहीं घोर वर्षा करेगी। २० मईको सूर्य-बुधकी बहिर्युति एक सप्ताह पूर्वसे जबर्दस्त तेजी-मन्दा करेगी। ता० २३ को कृष्णा ६ बुधवारी अन्नादिमें तेजी लाती है। रातको ७।४२ बजे

बुध-गुरु युतिसे उपर्युक्त क्षेत्रोंमें कहीं कहीं वर्षा बूंदाबांदी होगी। ता० २५ को रोहिण्यां रविमें ७ जून पर्यन्त ठपर्युक्त क्षेत्रोंमें यदि घोर गर्मी होगी तो आर्द्रायां रविमें २२ जूनसे अच्छी वर्षा की आशा करनी चाहिये। वायुवेग बूंदाबांदी इस कालमें जहां भी होगी, वहां पर सूखाका प्रकोप ५ जुलाई तक अवश्य ही होगा। किन्तु २५ मईसे दक्षिणी-पूर्वी हिन्दमें वर्षा होना श्रेष्ठ होता है। तदनुसार कहीं-कहीं वर्षा होगी। ता० २६ को शीघ्री मृग० शुक्र चांदी सोनाके साथ तेलके बीज गुड़ खांड दाल अन्नादि गेहूँमें मन्दी लाने वाला योग है। कलिंग देशमें वर्षा भी लाता है। ता० २७ को सायं ४।३३ बजे शीघ्री पूभायां भौम तेजी कारक, राष्ट्रीयकरणसे बची वस्तुओंके साथ चांदी-सोना भी तेज करेगा। ता० २८ को शन्यस्त पश्चिममें (सदैव शीघ्री गतिमें ही अस्त होता है) दक्षिणी पूर्वी हिन्दमें वर्षा, गुड़ खांडके साथ मन्दीमें मिल सकने वाली वस्तुयें खरीदो। साय ५।४३ बजे मृग० बुधसे सभी वस्तुयें मन्दी होंगी। ता० ३० को मध्याह्न में शुक्र-शनि युति गुड़ खांड कालीमिर्चमें तेजी लावेगी। ता० ३१ को गुरु वक्री होनेसे दक्षिणी पूर्वी हिन्दमें वर्षाकारक है, उपर्युक्त क्षेत्रोंमें वर्षा जहां भी करेगा उस क्षेत्रमें आगे सूखा होगा। सभी वस्तुओंमें रस्साकशी चलेगी। सायं ५।१६ बजे मिथुने शुक्र रातको मिथुने बुध होकर केतु+शुक्र+बुध योगसे गुड़ खांड चांदी सोना सर्वधातुमें मन्दा, तेलके बीज दाल अन्नादिमें तेजी चमकेगी। २ जूनको चन्द्रसे (बुध-शुक्रकी युति दक्षिणी पूर्वी हिन्दमें घोर वर्षाकारक है। किन्तु ज्येष्ठ मासके प्रारम्भमें लिखे क्षेत्रोंमें जहां भी वर्षा होगी वहां सूखा रहेगा। ता० ३ को वृश्चिकांशे बुध-शुक्र कल तक दक्षिणी पूर्वी हिन्दमें घोर वर्षा होनेकी आशा है। ता० ४ को रौद्रे बुध चांदीके साथ सभी खाद्य वस्तुओंको भी मन्दा करेगा। ता० ६ को शीघ्री रौद्रेशुक्र कौशल कलिंग गुजरात कच्छमें वर्षा बाढ़का प्रकोप सम्भव, साथ ही उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० में भी वर्षा हो जानेकी आशंका है, जो आगे सूखा प्रकोपका कारण समझना उचित होगा। ता० ७ को मृग० रवि २२ जून पर्यन्त वायुवेग आंधी तूफान लावे तभी अच्छी वर्षाकी आशा करें। अधिक तपत वायु न चलना वर्षा नाशक जानना चाहिये। १० जूनको भौम दृष्ट मिथुने शनि होते ही केतु+शनियोग बनेगा। ता० ११ को शीघ्री मीने भौम होते ही शनि-भौमका पुनः पारस्परिक दृष्टियुत केन्द्र योग (मित्र राशिगत) अतिवृष्टि-अनावृष्टिकारक ३१ जुलाई तक चलेगा। यह योग भी लेखा-रम्भमें उल्लिखित "शनि अङ्गारक योग" से भी महाबली औत्पातिक कुयोग है, किन्तु केतु +शनियोगका फल शास्त्रोक्त ऐसा है।

नीच राशि गते क्रूरे पापग्रह समन्विते।
तदा तज्जाति वस्तूनां मन्दता निश्चयेन वै॥

अर्थात् पिछला रिकार्ड देखते सभी वस्तुओं में जबर्दस्त मन्दा भी आ सकता है, साथ ही मिथुने शनिका फल यह है :—

घी कपास लोहा नमक क्षार तिल तेल गुड़ खांड सर्वत्र तेज, मजीठ लाल रंग सोना बैल घोड़ा हाथी (साईकल स्कूटर मोटर तथा मशीनरी सामान) और सभी अन्न मन्दे, सात द्वीप सात समुद्र तट वासी मनुष्य तथा राजा (नेता) सर्व प्रकार सुखी, सभी जगह वर्षा हो, ऐसा सभी मुनियोंका मत है। आज ही मिथुने शनिका मीने भौम (शनि-भौमकेन्द्र १ अगस्त तक

वर्षा नाशक) से अंशात्मक केन्द्र योग भी बना है जो महान् औत्पातिक एवं दुर्घटनात्मक कुयोग है, यह नेताओंका पतन वा अवसान, यान दुर्घटना चौर व रोगोपद्रव प्रजाविग्रह युद्धादि भय, सभी वस्तुओंमें तूफानी तेजी या मन्दीकी चाल निश्चित रूपसे देगा। चलती लाइनका उपयोग करना बुद्धिमानी होगी।

शनिकी पनौतीका फल :—१० जूनको शनिदेव, कन्या राशिस्थ चन्द्रकालमें मिथुन रशि में प्रवेश करेंगे। बृष राशिको अन्तिम तीसरी ढैया चांदीके पाये आर्थिक लाभदायक। मिथुन राशिवालोंको (हृदयमें) लोहपादसे हानि एवं कष्टदायक, यहांसे ५ वर्ष शेष हैं। कर्क राशिको साढ़साती तांबाके पाये (मस्तक पर) लाभदायक रहेगी। ७॥ वर्ष चलेगी। मीन राशिको (चतुर्थ) ढैया ताम्रपादसे लाभदायक, बृश्चिक राशिको (अष्टम) स्वर्णपादसे हानि व चिन्ता दायक होगी, किन्तु जिनको श्रेष्ठ विंशोत्तरी दशा चल रही होंगी उनको विशेष लाभदायक होगी। तारतम्यसे सर्वाङ्गीण विशद वर्णन किसी योग्य पंडितके द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। १२ जूनको प्लूटो मार्गी सभी चीजों में जबर्दस्त उथल-पुथल करेगा। ता० १४ की रात को श्री सूर्यदेव गत संक्रांतिसे वारात् ४ नक्षत्रात् ५ (१५ मुहूर्ता बैठी अवस्था) में शनि+बुध+शुक्र+केतुसे मिलकर पञ्चायत करेंगे जो जबर्दस्त तेजी या मंदीका जजमेण्ट देंगे, तदनुसार चलती लाइनका व्यापार करना ही बुद्धिमानी होगी। ज्येष्ठी पूर्णिमाको ज्येष्ठा नक्षत्र मन्दी सूचक होता है।

आषाढ़ मास

इस मासमें ५ शनिवार तथा ५ रविवार दुर्भिक्ष भय, महान् औत्पातिक हैं जो सभी वस्तुओंमें तेजी ला सकेंगे। १६ जूनको शीघ्री उभायां भौम सोना चांदीके साथ व्यापारकी सभी वस्तुओंमें तेजी लाने वाला योग है। ता० १७ को शी. पुनर्वसौ शुक्र अश्मक विदर्भ मध्य प्रदेशमें वर्षा श्रेष्ठ, दाल अन्नादि तेज, सोना चांदी मन्दे होंगे। ता० २० कर्कं बुध (गुरु-बुध-प्रतियोग) गुड़ खांड रुई रेशम पाट सोना मन्दे, चांदी दाल अन्न तेलके बीज तेज, कहीं-कहीं वर्षा भी होगी। जिस क्षेत्रमें बट (बरगद) वृक्षको जटामें अंकुर बहुत निकलेंगे उस क्षेत्रमें वर्षाकाल श्रेष्ठ होगा। ता० २१ की रातको आर्द्रायां रवि (जलीय लग्न कालमें) उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० में ५ जुलाई तक कहीं-कहीं अच्छी वर्षा करेगा। ता० २२ को मिथुनांशे गुरु-शुक्र पौन बजेसे ता० २४ तक इन्हीं क्षेत्रोंमें वर्षा होनेकी आशा है। साथ ही नीमकी निंबौली पेड़ों पर खूब आवे. पके, फूलै, पेड़के नीचे पहली वर्षा पड़ते ही ढेरों टपक पड़े तो उस क्षेत्रमें निश्चित रूपसे आगे भी अच्छी वर्षा होती रहेगी। ता० २३ को दोपहरसे २४ घण्टेमें सूर्य-चन्द्र बादलोंमें ही रहें साथ ही पूर्वी वायु चले तो इन्हीं क्षेत्रोंमें उत्तम वर्षा निश्चित रूपसे होगी। किन्तु इस बौरहाअष्टमीको घनघोर गर्जना घोर तेजीके कारण बना देती है। २५ जूनको कर्कं शुक्र होते ही बुध+शुक्र योग का गुरुसे प्रतियोग १९ जुलाई तक यदि वर्षा भी लावे तो मन्दा सम्भव, अन्यथा २५ जून ६५ की भांति यहां उक्तावधि १९ जुलाई ६५ तक की भाँति वर्षानाश, साथ ही घोर तेजी यहां पर भी होगी। किन्तु यहा गुरुके प्रतियोगकी भी विशेषता है। यहींसे सभी क्रूर-पापग्रहोंका जमघट केन्द्रगत अर्थात् सूर्य+शनि+केतुका

मंगलसे केन्द्र योग तथा सूर्य-शनिका राहुसे प्रतियोग तथा मंगल-राहु केन्द्र योग वर्षानाशक महोत्पात कारक कुयोग जो लेखारम्भमें "शनि अङ्गारक योग" से विशेष शक्तिशाली है, वैसे ही काण्ड यहां भी प्रस्तुत होंगे । बाजारकी चलती लाइनका उपयोग बड़ी सावधानीसे करना उचित है । सभी धातुओंके साथ अन्य वस्तुयें भी किसी दिशाकी ओर बड़े जोर-शोरसे चलेंगी । ता० २७ को हर्षल मार्गी, सभी वस्तुओंमें अच्छा मन्दा लावे आश्चर्य नहीं । ता० २८ को कृष्णा १३ से वायुवेग चालू हो तो तेलके बीज गुड़ खांड दाल अन्नादिमें चमत्कारिक तेजी चल पड़ेगी । ३० जूनको शनैश्चरी अमावस तेजीकारक है । आज ही सायं सूर्यग्रहण दक्षिण भारतमें होगा । समयादिका विवरण "श्री विश्वविजयपञ्चाङ्ग" में देखिये । इस ग्रहणका प्रभाव इधरके व्यापार पर भी अवश्य ही होगा । इसी अमावसको सायं ५। २ बजेसे ३ जुलाईको ११।२४ बजे तक वर्षा और मन्दी होनेकी आशा है । १ जुलाईको सायं ५ बजेसे बुध+शुक्र+चन्द्र योग का गुरुसे प्रतियोग कहीं-कहीं महान् वर्षा तो कहीं सूखाका प्रकोप भी सुनाई देगा । ता० २ को सायं ७ ३० बजे बुध-शुक्र युतिसे घोर वर्षा और तेजी होगी । ता० ३ को शुक्ला ४ का क्षय देशी घी मूंग दाल अन्नादि गुड़ खांड तूअर चना मटर खेसारी तेलके बीजोंमें अच्छी तेजी होगी । सायं शन्युदय पूर्वमें सभी वस्तुओं को तेज करके मन्दी भी कर देता है । ता० ७ को रेवत्यां भौम रुई रेशम पाट किराना सोना चांदी तेज, गेहूँ जौ चावल ज्वार बाजरा मक्का दाल अन्नादिमें मन्दी करेगा । किन्तु रेवती में भौमका मृगशीर्षमें शनिसे चरणात्मक वेध तेलके बीज दाल अन्नादिको १२ जुलाई तक तेज करेगा । आज ही रातको बुध वक्री (गुरु-बुध दोनों वक्री) बादल वर्षा वायुवेग सागसब्जी तेलके बीज गुड़ खांड दाल अन्नादिमें मन्दीकी आशा है, नींबू अमचूर इमली सोना चांदीमें तेजी लाने वाला योग है । ता० ८ को शीघ्री साप्यें भौम सर्प भय इन्जैक्शनके विवैले प्रभावों का सर्वत्र शोर होगा । चांदी तेज, सभी वस्तुयें मन्दी होंगी । शुक्ला ८ शनिवारीसे वर्षानाश, किन्तु शुक्ला ८।९ को उ प्र० पञ्जाब राजस्थान म०प्र० में जहां भी बादलोंका मण्डान या वर्षा होगी, वहां आगे भी समयानुकूल वर्षा होती रहेगी । ता० १० को देवशयनी एकादशी भौम-वारी ७ दिनमें खतरनाक तेजी लाने वाला परीक्षित योग है । ता० ११ को सायं बुधास्त पश्चिममें ता० ५।६ को चली लाइनको बदल देगा । आज ही सायं सूर्य-हर्षल केन्द्र गुड़ खांड में तूफानी चाल तो अन्य वस्तुओंमें तेजी होगी, किसी नेता पर सङ्कट अथवा अवसान भी सम्भव है । ता० १४ को सायं सूर्यास्त पर वायु परीक्षण ज्योतिषो चतुर-व्यापारी अनुभवी किसान सदैवसे करते आ रहे हैं, ताकि आगामी वर्षाका ज्ञान भली भांति हो सके । आज सायं ३ बजेसे कल सूर्यास्त तक आषाढ़ी पूर्णिमा रहेगी, इस कालमें ईशान (पूर्वोत्तर कोण) तथा पूर्व-उत्तर एवं पश्चिम दिशाकी वायु उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० में जहां भी सायंसे रात तक जिस क्षेत्रमें चले साथ ही सूर्य-चन्द्र आठों प्रहर घने बादलोंमें ही रहें या निकलें, बादल बिजली गर्जना हलकी फुहार बूंदाबांदी भी होती रहे तो वहां आगे भी अच्छी वर्षा होती रहेगी, परीक्षित है । जहां आज घोर वर्षा होगी वहां आगे श्रावण मासमें घोर तेजी भी

हाजिर और वायदा बाजार भविष्य

(१८ अप्रैल १९७३ से १५ जुलाई १९७३ तक)

[लेखक :—दैवज्ञभूषण श्री पं० हंसराज शर्मा ज्योतिश्चन्द्रमणि]

हाजिर मार्केट पर प्रभाव :—

शनि मृगशिरमें तेजी करेगा, और इसका अधिक प्रभाव तेल, तेलके बीज, नमक, तेजाब गंधक, केसर, औषधियां, लोहा तथा स्टील आदि, इसके अतिरिक्त राहु तथा केतु भी तेजी करेंगे और उनका प्रभाव सराफामें चांदी, रुई, चावल, चीनी तथा खाने वाले तेल आदि पर होगा। परन्तु तेल तिल तथा तेल सरसों पर प्रभाव कम रहेगा। चांदीमें ३ जुलाईसे विशेष लाइन चलेगी और भाव भी काफी चलेगा। अप्रैलका अन्त तथा मई मासमें विशेष तेजीकी आशा है और इस तेजीका प्रभाव दैनिक प्रयोग की वस्तुओं पर अधिक होगा, कोयला, मिट्टीका तेल, पैराफीन, मोम, डीजलकी कुछ स्थानोंमें कमी अनुभव होगी। विनौला, चीनी सुपारी, नारियल, कालीमिर्च आदिमें पहले मन्दी रहेगी, परन्तु मईमें तेजी उठेगी जो जुलाईके शुरु तक रहेगी। इस वर्षमें इन वस्तुओंका स्टाक लाभ-प्रद रहेगा, हल्दी तथा केसरका स्टाक करनेसे हानिका भय है।

वायदा बाजार—

वायदा बाजारमें बाजार सराफा तथा तेल तिल्हन आदिके भाव जुदा-जुदा चलेंगे जिनका ध्यान रखें। और इसमें लम्बी लाईन कुछ इस प्रकार चलेंगी :—

१८ अप्रैलसे ५ मई तक तेजी।
६ मईसे २८ मई तक मन्दी।
२९ मईसे ११ जून तक तेजी।
१२ जूनसे २६ जून तक मन्दी।
२७ जूनसे १५ जुलाई तक तेजी।

इनमें तेजीकी लाईनमें मन्देकी प्रतिक्रिया कम होगी, परन्तु मन्देकी लाईनमें तेजीकी प्रतिक्रिया (**Reaction**) काफी हो सकता है जिस से सावधान रहें।

शेयर बाजार : —

इस अवधिमें शेयर बाजारमें भाव काफी चलेंगे और सैंचुरी, टाटा, दिल्ली-क्लाथ, इण्डियन आयरन आदिमें जो लाइन बनेगी वह कुछ इस प्रकारसे होगी :—

१८ अप्रैलसे २८ अप्रैल तक तेजी।
२९ अप्रैलसे ७ मई तक मन्दी।
७ मईसे १७ मई तक तेजी।
१८ मईसे ३१ मई तक मन्दी।
१ जूनसे ११ जून तक जोरदार तेजी।
१२ जूनसे २५ जून तक कमीवेशीसे तेजी।
२६ जूनसे ९ जुलाई तक मन्दी।
१० जुलाईसे १५ जुलाई तक तेजी।

नोट :—पिछले दिनों काफी लम्बे समय तक स्वास्थ्य ठीक न रहनेसे 'ज्योतिष्मती' के पाठकोंकी सेवा नहीं कर सका, आशा है कि आगेको इससे भी सुन्दर और तेजी मन्दी आदि के विशेष दिन भी दे सकूंगा।

होगी। आग्नेय (दक्षिण पूर्व कोण) एवं नैर्ऋत्यकोण (दक्षिण पश्चिमी कोण) की वायुसे उपर्युक्त क्षेत्रोंमें वर्षाका नाश, किन्तु बम्बईकी ओर इन्हीं दिशाओंकी वायुसे वर्षा होती है। कलकत्ताकी ओर आग्नेयकी वायुसे, मद्रासकी ओर पश्चिमी वायुसे वर्षा होती है।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

अप्रैल १९७३ ई०

ता० १७ मंगलवार—सत्यव्रत पूर्णिमा सिद्धाचलयात्रा
२१ शनिवार—श्रीगणेश४ व्रत चंद्रोदय २२।३०
२९ रविवार—वरूथिनी एकादशीव्रत ।
३० सोमवार—सोमप्रदोषव्रत ।

मई १९७३ ई०

ता० २ बुधवार—अमावस्या
४ शुक्रवार—चन्द्रदर्शन श्रीशिवाजी जयन्ती ।
५ शनिवार—अक्षया ३ श्रीपरशुरामजयन्ती ।
६ रविवार—श्री सूरदास जयन्ती ।
७ सोमवार—जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य जयन्ती, श्री रवीन्द्रनाथ जयन्ती ।
८ मंगलवार—श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती ।
१२ शनिवार—मोहिनी एकादशीव्रत स्मार्त.
१३ रविवार—मोहिनी ११व्रत वैष्णवसम्प्रदाय
१४ सोमवार—वृषभ संक्रान्ति, प्रदोष व्रत ।
१५ मंगलवार—श्रीनृसिंह जयन्ती ।
१६ बुधवार—सत्यव्रत कूर्म जयन्ती ।
१७ गुरुवार—वैशाखी पूर्णिमा, बुद्धपूर्णिमा
२० रविवार—श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २१।५८, श्री श्रीमाँ आनन्दमयी जन्म-महोत्सव (इस वर्ष उत्तरकाशीमें)
२८ सोमवार—अपरा एकादशी व्रत ।
३० बुधवार—प्रदोष व्रत

जून १९७३ ई०

जून १ शुक्रवार—वटसावित्री अमावस्या ।
२ शनिवार—चन्द्रदर्शन मु० १५
३ रविवार—प्रताप जयन्ती मेला हल्दी घाटी
४ सोमवार—श्री गुरुअर्जुनदेव निर्वाणदिन
१० रविवार—श्री गंगादशहरा ।
११ सोमवार—निर्जला एकादशी व्रत
१३ बुधवार—प्रदोषव्रत ।
१४ गुरुवार—मिथुनमें सूर्यसंक्रांति मु० १५
१५ शुक्रवार—सत्यव्रत पूर्णिमा कबीरजयन्ती श्री गुरु हरगोविन्द जन्मदिन ।
१९ मंगलवार— गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय२१।५४
२६ मंगलवार—योगिनी एकादशीव्रत स्मार्त.
२७ बुधवार—एकादशीव्रत वैष्णव, सम्प्रदाय
२८ गुरुवार—प्रदोष व्रत ।
३० शनिवार—शनैश्चरी अमावस्या ।

जुलाई १९७३ ई०

ता० १ रविवार—चन्द्रदर्शन मु० ४५
२ सोमवार—श्री जगदीशरथ यात्रा पुरी उड़ी.
८ रविवार—भड्डली ९ मेलाशरीफ भगवती
१० मंगलवार—देवशयनी एकादशी व्रत स्मार्त• चतुर्मास व्रतनियमादि प्रारम्भ ।
११ बुधवार—वैष्णव यति विधवाओंकी एका.
१२ गुरुवार—प्रदोष व्रत ।
१४ शनिवार—सत्यव्रत, वायुपरीक्षा
१५ रविवार—व्यासपूजा, गुरु पूर्णिमा ।

महाराजा-जोधपुरका शुभ विवाह

'ज्योतिष्मती' के संरक्षक हिज हाईनेस महाराजाधिराज श्री १०५ गजसिंहजी जोधपुर-नरेश का शुभविवाह गत दि० १९ फरवरी ७३ को पुञ्छ-काश्मीरकी राजकुमारी श्री हेमलताजीके साथ देहरादूनमें शाही शानशौकतके साथ सानन्द सम्पन्न हुआ । जयपुर-बड़ौदा-ग्वालियर-कोटा-बूंदी-करौली-पन्ना-ध्रांगध्रा-धामी आदिके महाराजा और राजस्थानके मुख्यमंत्री आदि अनेक गण्यमान्य सज्जनोंके साथ ज्योतिष्मती-सम्पादक श्री त्रिवेदी एवं आकाशवाणीके कलाकार आचार्य श्रीबलराम मिश्र भी नवदम्पतीको आशीर्वाद देने देहरादून पहुंचे थे । २२ फरवरीको सायंकाल क्लेरिज-होटल नई दिल्लीमें महाराजा और नई महारानीका भव्य स्वागत समारोह सम्पन्न हुआ ।



Cereal Production Kindles New Hope In Himachal

- ★ Valleys and lower areas of Himachal Pradesh soon to be converted into Granaries.
- ★ High yielding varieties of wheat and hybrid and composite varieties of maize usher in an era of plenty.
- ★ The Gap between the production and requirements of food grains has been brought down to less than half from a lac and twenty thousand metric tonnes.

  This leaves Himachal Pradesh well within the reach of achieving surplus age in foodgrains within the next few years.
- ★ Multi-cropping experiments now being put into practice on a large scale and new dimension to agricultural production programe in the Pradesh.
- ★ The Package programme in Mandi District has given insight and experience in ameliorating a lot of the farming community in the Pradesh.

HIMLOK SAMPARK

ग्राहकों और लेखकोंसे आवश्यक निवेदन

जो सज्जन गतवर्ष (वर्ष १५ संख्या ४) श्रावण या जुलाई १९७२ के अङ्कसे ग्राहक बने थे उनका वार्षिक मूल्य इस अङ्कमें समाप्त है। उनकी प्रतिमें छपा हुआ मनीआर्डर फार्म साथ भेजा जा रहा है। वे आगेके लिए वार्षिक मूल्य ८·५० मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेज दें। अन्यथा उन्हें समय पर श्रावण मासका अङ्क प्राप्त न हो सकेगा। नाम पतेके साथ ही ऊपर (रैपर पर) आपकी ग्राहक संख्या लिखी रहती है, वह संख्या (ग्राहक नम्बर) वार्षिक मूल्य भेजते समय मनीआर्डर फार्मके कूपन पर अवश्य लिखना चाहिए।

स्थान और समयाभावके कारण जो महत्वपूर्ण लेख इस अङ्कमें प्रकाशित न हो सके—वे आगामी अङ्कोंमें प्रकाशित होंगे। कुछ वयोवृद्ध विद्वानोंके लेख सुवाच्य स्पष्ट अक्षरोंमें न होनेसे भी छपनेसे रह गये हैं। अतः लेखक महानुभाव अपना लेख सुवाच्य स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ही ओर लिखकर या टाइप करवाकर भेजें तो छपनेमें सुविधा होगी। आगामी अङ्कके लिए जो गवेषणा-पूर्ण लेख और व्यापार भविष्य सम्बन्धी लेख ज्येष्ठ कृ० अमावस्या दि० १ जून १९७३ तक सम्पादकके पास पहुंच जावेंगे वे ही छप सकेंगे। सं० २०३० वि० के 'श्रीविश्वविजयपंचांग' की अब कोई भी प्रति विक्रयार्थ हमारे पास नहीं है। अजमेरमें राजप्रकाशनके पास भी अब बहुत थोड़ी प्रतियां शेष हैं, अतः जिन्हें आवश्यकता हो वे अजमेरसे शीघ्र मंगवा लें। ज्योतिष सम्बन्धी अन्य सब कार्य स्थगित हैं, अतः इस सम्बन्धमें कोई सज्जन पत्र-व्यवहार न करें।

—व्यवस्थापक 'ज्योतिष्मती' सोलन (हि०प्र)

"JYOTISHMATI" REGISTRAR NEWS PAPERS FOR INDIA R.N., 4941/57

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा दि कुमार प्रिंटिंग प्रैस सोलन में छपकर ज्योतिष्मती निकेतन, सोलन (हि.प्र.) से प्रकाशित